आवागमनीय

पुनर्जन्म

एक तथ्यपरक विश्लेषण

डॉ० मुहम्मद अहमद

आमुख

'आवागमनीय पुनर्जन्म—एक तथ्यपरक विश्लेषण' वास्तव में एक प्रश्नोत्तर है, जिसे पुस्तकाकार में आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। अंबाला छावनी (हरियाणा) के सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार डॉ० महाराज जैन ने आवागमन और पुनर्जन्म के पक्ष में 15 जून 98 के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित एक आलेख की कतरन भेज कर इस महत्वपूर्ण विषय की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कराया था। साथ ही लिखा था कि "अधिकतर तर्क तथा तर्कों से भी अधिक साक्ष्य पुनर्जन्म के पक्ष में जाते हैं।" 'कान्ति' मासिक के एक अंक में प्रकाशित लेख में आवागमनीय पुनर्जन्म पर टिप्पणी डॉ० जैन को अच्छी नहीं लगी, तो उन्होंने अपना पक्ष उक्त समाचार-पत्र की कतरन संलग्न कर स्पष्ट किया।

'कान्ति' मासिक के सितम्बर 99 के अंक में डॉ० जैन के प्रश्न का विस्तृत उत्तर दिया गया, जिसमें आवागमन एवं पुनर्जन्म के विभिन्न पहलुओं का तथ्यपरक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। इस सामग्री को पाठकों ने काफ़ी पसन्द किया और बेशक़ीमती विचारों से हमें अवगत कराया। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण विचारों को पुस्तक के अंत में एक अध्याय के रूप में समाविष्ट किया गया है। इस अवधि में विचारों के आदान-प्रदान एवं गवेषणा के कारण तथ्य-सामग्री में जो परिवर्धन हुआ, उसका भी इस पुस्तिका में समावेश कर दिया गया है।

वास्तविकता के अन्वेषण, पर्यवेक्षण और चिन्तन-मनन के उपरान्त हम जिस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं, आवश्यक नहीं कि आप उससे सहमत ही हों, पर यह सत्य है कि सभी तथ्य, तर्क और साक्ष्य आवागमनीय पुनर्जन्म के एकदम विरुद्ध जाते हैं। वास्तव में यह विषय ही इतना पेचीदा और भ्रामक बना दिया गया है कि यथार्थ तक पहुंचने में उन सज्जनों को भी कठिनाई हो जो शिक्षित एवं विचारवान हैं। हमारी कोशिश यह रही है और है कि अवास्तविकता का परदा उठे और सत्य खुलकर सामने आ जाए। इस कोशिश में हम कितने सफल हुए हैं, इसका निर्णय आपको करना है। इस पुस्तक की सामग्री के विषय में हम यह कहना चाहेंगे कि इसका उद्देश्य वास्तविकता-बोध है। किसी व्यक्ति या समुदाय विशेष पर आक्षेप करना अथवा उनकी भावनाएं आहत करना नहीं। इसके लिए हमने वस्तुनिष्ठ अध्ययन का प्रयास किया है। फिर भी यदि कोई तथ्य सुधार-योग्य हो, तो पुष्ट प्रमाण उपलब्ध कराने का कष्ट करें ताकि पुस्तक के अगले संस्करण में उसे शामिल किया जा सके।

नई दिल्ली
1 मार्च 2000 ई०

डॉ० मुहम्मद अहमद
संपादक
'कान्ति' (साप्ताहिक/मासिक)

अनुवाक-विवरण

आवागमनीय पुनर्जन्म की वास्तविकता

वर्तमान काल में भारत को छोड़कर विश्व में कहीं भी आवागमनीय पुनर्जन्म नहीं पाया जाता। यूनान, मिस्र और रोम के निवासियों में इसकी मान्यता न्यूनाधिक रूप में विद्यमान थी, पर उनमें सभ्यता की उन्नति के साथ-साथ इसका भी समापन हो गया। कतिपय काव्य-रचनाओं में इसकी प्रति-ध्वनि इसलिए भी प्रमाणित नहीं हो सकती, क्योंकि काव्य-कृतियां प्राय: कल्पनाओं के अधिक निकट होती हैं।

वैदिक काल में पुनर्जन्म (Rebirth) की धारणा नहीं पायी जाती। हां, वेदों में पुनर्जीवन (एक और जीवन) की पुष्ट धारणा अवश्य मिलती है। वैदिककालीन लोगों का कर्म की इस धारणा में विश्वास था कि जो लोग सत्कर्मी और सुमार्गी हैं उन्हें दूसरी दुनिया में सुवर्ग (स्वर्ग) प्राप्त होगा और दुष्कर्मी एवं कुमार्गी को दुवर्ग (नरक)। कहा गया है—**स्वर्गे लोके किंचन भयं नास्ति**—स्वर्ग लोक में कुछ भी भय नहीं होता। **शोकातिग: मोदते**—वहां शोक का कारण नहीं होता। **न जरा**—जीर्ण अवस्था नहीं होती। **अशनायापिपासे उभे तीर्त्वा**—वहां भूख और प्यास से कष्ट नहीं होता, क्योंकि खान-पान का प्रबंध उत्तम से उत्तम होता है। इच्छा होते ही वह पदार्थ वहां मिलता रहता है। इसके विपरीत नरक प्रचंड दुखों और यातना का स्थान है। वेदों में स्वर्ग और नरक के संबंध में अनेक मंत्र आए हैं, जिनसे इनका पर्याप्त स्पष्टीकरण होता है।

यह मौलिक धारणा तदनन्तर फीकी पड़ गई और आवागमन वाले पुनर्जन्म ने अंतत: इसका स्थान ले लिया। महापंडित राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं—

"वैदिक ऋषियों का एक दूसरी दुनिया पर विश्वास था, जहां सुकर्मी मरने के बाद सुख-संपन्न जीवन व्यतीत करते हैं। एक और दुनिया दुष्कर्मियों को कष्ट देने के लिए है।. . . वैदिक ऋषि पुनर्जन्म (Rebirth) में विश्वास नहीं करते थे। यह सिद्धांत बाद में धार्मिक-शिक्षकों ने उस समय गढ़ा, जब लोगों में स्वर्ग-नरक की कल्पना क्षीण हो गई थी।"

("Perspectives of the World" By Rahul Sankityayan, Page 552)

वेदों में आवागमन के अर्थ में पुनर्जन्म का उल्लेख नहीं है। इनमें पुनर्जन्म का जो उल्लेख मिलता है, वह सिर्फ़ एक पुनर्जीवन के अर्थ में है, जिसे "**दिव्याय**

जन्मने" (दिव्य जीवन) भी कहा गया है। वेदों में परलोक संबंधी धारणा बड़ी प्रबल है। वैदिक साहित्य ख़ास कर ब्राह्मण-काल में जो पितृ-लोक की धारणा मिलती है, उसमें आवागमनीय पुनर्जन्म लेशमात्र भी नहीं पाया जाता। उस काल में मान्यता यह थी कि मरने के बाद सुकर्मी अपने कर्मों का फल भोगने के लिए लोकान्तर में जाते हैं। इसे पितृयान (पितरों का मार्ग) भी कहा गया है (छांदोग्य उपनिषद 2.103-1-6)।

विद्वानों के विचार

अनेक विद्वानों और गवेषियों ने वेदों में आवागमनीय पुनर्जन्म की धारणा न होने की उद्घोषणा की है—

पूर्व राष्ट्रपति एवं हिन्दू धर्म के महान चिन्तक डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार, वेदों में आवागमन का सिद्धांत नहीं मिलता।

(Indian Philosophy, Part I, Pp. 112-116)

प्रसिद्ध विद्वान श्री सत्यकाम विद्यालंकार ने लिखा है—

"वेदों में आवागमन नहीं है। इस बात पर तो मैं जुआ भी खेल सकता हूं।"

(आवागमन, पृ० 104)

पं० दुर्गा शंकर महिमवत् सत्यार्थी अपने 'वेद और पुनर्जीवन' शीर्षक लेख में लिखते हैं—

"पुनर्जीवन की समस्या केवल कुछ लोगों की नहीं, अपितु सारी हिन्दू जाति की समस्या है। वे पुनर्जन्म के आवागमनीय सिद्धांत पर ही विश्वास करते हैं, किन्तु वेद उनके इस सिद्धांत का ज़बरदस्त खंडन करते हैं। कैसे? यही इस लेख में दिखाया जा रहा है।". . . "यह है ऋग्वेद के प्रथम मंडल का पूरा 47वां सूक्त। इस सूक्त में अच्छे लोगों से अच्छे बदले का वादा किया गया है, जैसे—अमृत, रत्न, सुख आदि और बुरे लोगों को सख़्त अज़ाब की धमकी दी गई है जैसे—थूहर का दूध, रथ के सूर्ष, भयंकर आग आदि।

क़ुरआन मजीद द्वारा प्रस्तुत आख़िरत के नक़्शों से इस अंतिम दिन के चित्र को मिलाइए। क्या कहीं भी, थोड़ा-सा भी अंतर नज़र आता है? इस प्रकार के अज़ाब (यातना) की धमकियां क़ुरआन मजीद में भी दी गई हैं और अन्दाज़े बयां भी लगभग ऐसा ही है!

वेदों में आख़िरत है या नहीं, यह सवाल बड़ा अजीब-सा है। बिल्कुल ऐसा ही सवाल है जैसे कोई यह पूछे कि मनुष्य में आत्मा है या नहीं। पूरे के पूरे वेद

आख़िरत (परलोक) की पुष्टि करते हैं। यहां तो विस्तार भय से केवल सत्रह श्लोक (मंत्र) दिखाए गए हैं किन्तु यदि वेदों से केवल आख़िरत का प्रमाण देने की बात आई, तो सिर्फ़ प्रमाणों ही प्रमाणों में एक लंबी-चौड़ी किताब लिखनी पड़ेगी। मैं नहीं कह सकता कि लोग किस प्रकार वेदों से आवागमन सिद्ध करते हैं, जबकि अंतिम दिन तो ईश्वरीय धर्मों का एक प्रमुख सिद्धांत है और वेद पूरे के पूरे इसी की गवाही देते हैं। केवल कुछ श्लोक (मंत्र) इसकी गवाही के लिए पेश करना बिल्कुल आसान काम है। वेदों में भी क़ुरआन की ही तरह तीन सिद्धांतों को धर्म की आधारशिलाएं माना गया है—1. एकेश्वरवाद, 2. ईशदौत्य 3. अंतिम दिन।" (वेद और क़ुरआन, संस्करण 1989, पृ० 31, 38, 39)

वेदों के प्रमाण

विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम् की हरियाणा शाखा के अध्यक्ष एवं एम.एल.एन. कॉलेज, यमुनानगर (हरियाणा) में 23 वर्षों तक अध्यापन कर चुके संस्कृत के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान डॉ० सत्यदेव वर्मा ने वर्षों के कठिन परिश्रम के उपरान्त 'पवित्र क़ुरआन' का संस्कृत अनुवाद किया। इसका विधिवत संस्करण 'संस्कृत कुराणम्' नाम से 1990 में लक्ष्मी पब्लिकेशंज, दरियागंज, नई दिल्ली (चार सौ रुपए) से प्रकाशित हुआ। इसमें डॉ० वर्मा ने इस्लाम की मौलिक धारणाओं को हिन्दू धार्मिक साहित्य में तलाश करने का प्रयास किया है। उन्होंने इस्लाम की पुनर्जीवन की मान्यता को भी हिन्दू ग्रंथों में तलाश किया है। इस्लाम विशुद्ध सनातन धर्म है अर्थात् मानव जीवन के आरंभ से ही यह धर्म प्रचलित है। जब-जब इसकी शिक्षाएं विकृत होती रहीं, अल्लाह अपने पैग़म्बरों और नबियों के ज़रिए इसे पुनः-पुनः उद्घाटित करवाता रहा।

यह सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर समाप्त कर दिया गया। जब क़ियामत (महाप्रलय) तक इस्लाम की शिक्षाओं के अक्षुण्ण रहने का विशेष प्रबन्ध कर दिया गया, तो पैग़म्बर और नबी के भेजे जाने की आवश्यकता शेष ही न रही। अतः इस्लाम की कतिपय शिक्षाओं का दूसरे धर्मों की पुस्तकों में पाया जाना नितांत संभव है। लेकिन दुर्भाग्य से कुछ ऐसे दुर्भावी भी विद्यमान हैं जो शिक्षाओं की साम्यता को समाप्त करने हेतु एवं निहित स्वार्थवश अपने ग्रंथों में हेरफेर कर डालते हैं या ग़लत भाव ग्रहण करते हैं। इस प्रकार तद्अधिक मिथ्या तथ्यों का समावेश हो जाता है। पुनर्जन्म को कई जन्मोंवाला बना दिया गया और आवागमन से इसकी अनिवार्यता कर दी गई। इस प्रकार बृहत्तर जनता को जन्मों के चक्कर में डाल दिया गया। इसके बावजूद यह हर्ष का विषय है कि अब भी

हमारे देश में सत्यान्वेषी विद्वान और चिन्तक विद्यमान हैं, जो जन-सामान्य को वास्तविकता का ज्ञान कराते रहे हैं। इनमें से एक नाम है डॉ० सत्यदेव वर्मा का, जिन्होंने मौलाना अबुल आला मौदूदी (रह०) की इस सदिच्छा को क़ुरआन का संस्कृत में पद्यानुवाद करके पूरा करने का प्रयास किया कि क़ुरआन की अनेक भाषाओं में अनुवाद की आवश्यकता है। मौलाना मौदूदी (रह०) के इस कथन का उल्लेख डॉ० वर्मा ने 'प्राक्कथनम्' (Introduction) में किया है। अल्लाह, डॉ० वर्मा को उनके इस सत्कार्य का अच्छा बदला दे।

डॉ० वर्मा के उल्लेखनीय निष्कर्षों में पुनर्जन्म संबंधी मान्यता भी है। उन्होंने इस सिलसिले में क़ुरआन की शिक्षाओं के भावार्थ को हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में पाया है। इनमें से कुछ तथ्यों को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है—

डॉ० वर्मा ने सर्वप्रथम क़ुरआन की सूरह अल-आराफ़ की 29वीं आयत को उद्धरित किया है, जिसमें है—

"जैसे उसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।"

डॉ० वर्मा के अनुसार, यह शिक्षा वेद में भी है।

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति इत्यादिः।[1]

(यजुर्वेद 40, 3)

अनुवाद : बल (इन्द्रिय, शरीर बल) के लिए प्रसिद्ध वे लोग, गाढ़ अंधकार से व्याप्त हैं। वे मृत्यु के बाद उनमें जाते हैं, जो कोई आत्मघाती जन हैं। (अनुवादक: पद्मभूषण डॉ० पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, यजुर्वेद सुबोध भाष्य, पृ० 634)

पुनर्मनः पुनरायुर्म आगन् पुनः प्राणः पुनरात्मेत्यादिः[2]।

(यजुर्वेद 4, 15)

अनुवाद : मुझे मन पुनः प्राप्त हुआ, मुझे आयु पुनः, प्राण भी पुनः प्राप्त हुआ, मुझे

---

1. डॉ० सत्यदेव वर्मा ने 'सांस्कृतं कुराणम्' में जो मंत्र दिया है, उसे यहां शब्दशः उद्धरित कर दिया गया, पर पं० सातवलेकर ने मंत्र में 'गच्छन्ति' के पश्चात 'इत्यादिः' न देकर 'ये के चात्महनो जनाः' लिखा है। इनमें से कौन मूल मंत्र है, पता करना कठिन है, फिर भी भावार्थ तक पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं है। डॉ० सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'अज्ञात' (बंगा, पंजाब) ने सूचित किया है कि यजुर्वेदीय मंत्र में 'इत्यादिः' शब्द नहीं आता है।

2. पं० सातवलेकर ने मंत्र का शेषांश इस प्रकार लिखा है, 'पुनरात्मा म आऽगन पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म आऽगन्। वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अग्निः पातु दुरितादवद्यात्।'

आत्मा पुन: प्राप्त हुआ, चक्षु (आंख) पुन: और श्रोत्र (कान) भी पुन: प्राप्त हुआ। विश्व का नेता, न दब जानेवाला, शरीर रक्षक अग्नि निंदनीय पाप से हमारी रक्षा करे।

(अनुवादक : पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, यजुर्वेद सुबोध भाष्य, पृ० 98)

इस मंत्र की व्याख्या करते हुए पं० सातवलेकर लिखते हैं—"निद्रा समाप्त करके पुन: जाग्रति प्राप्त होते ही पूर्ववत् मुझे मन, आयु, प्राण, आत्मा, चक्षु, श्रोत आदि सबकी सब शक्तियां जैसे पहले थीं, वैसी प्राप्त हुई हैं। इनमें कोई हेर-फेर नहीं हुआ। गाढ़ निद्रा (मृत्यु उपरान्त अवस्था) में इनका बोध मुझे नहीं था, तथापि जाग्रति आते ही मैं ठीक-ठीक पहचानता हूं कि मेरे ये सब इन्द्रियगण जैसे पहले थे, वैसे ही आज हैं। यहां 'आयु' का अर्थ 'जीवन' है, 'आत्मा' का अर्थ 'जीवभाव' है। 'तनूपा' अग्नि मेरा रक्षक है, वही पाप से बचाता है।

जिस तरह 'निद्रा' के पश्चात् पूर्व दिन के इन्द्रिय और दिन प्राप्त होते हैं, इसको दैनिक पुनर्जन्म कहते हैं, उसी तरह 'महानिद्रा'—मृत्यु के पश्चात पुनर्जन्म में भी पूर्ववत् ही सब इन्द्रिय शक्तियां पुन: प्राप्त होती हैं। (वही, पृ० 98)

स्पष्ट है कि वेद में पुनर्जीवन की बात कही गई है, जिसका निरूपण एक और जीवन से है। वेदों में आवागमन और पुनर्जन्म नहीं पाया जाता।

डॉ० वर्मा ने यजुर्वेद के उक्त मंत्र (4, 15) की तुलना करते हुए क़ुरआन की आयत (10 : 4) पेश की है, जो अधोलिखित है—

"उसी की ओर तुम सबको लौटना है। यह अल्लाह का पक्का वादा है। निस्सन्देह वही पहली बार पैदा करता है। फिर दोबारा पैदा करेगा, ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें न्यायपूर्वक बदला दे।"

क़ुरआन (7 : 57) में है—

"और वही है जो अपनी दयालुता से पहले शुभ सूचना देने को हवाएं भेजता है, यहां तक कि जब वे बोझल बादल को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी निर्जीव भूमि की ओर चला देते हैं, फिर उससे पानी बरसाते हैं, फिर उससे हर तरह के फल निकालते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दों को मृत अवस्था से निकालेंगे—ताकि तुम ध्यान दो।"

इसी प्रकार का भाव ऋग्वेद के इस मंत्र में ध्वनित हुआ है—

पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नस्सोमस्तन्वं ददातु पुन: पूषा पथ्यां या स्वस्ति:।

(ऋग्वेद 10-59-7)

अनुवाद : मरने के पश्चात् जन्मान्तर में देवी भूमि हमें फिर प्राणशक्ति देती है, द्युलोक फिर प्राणशक्ति देता है और फिर प्राणशक्ति देता है अन्तरिक्ष भी। परमेश्वर हमें फिर शरीर देता है, सबका पोषक वायु हमें पुष्टि दे, जो वाग् हमें वाणी प्रदान करती है। (अनुवादक : वैद्यनाथ शास्त्री, ऋग्वेद, हिन्दी भाष्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, संस्करण 1976, पृ० 704)

अनेक पाश्चात्य विद्वानों जैसे वेबर, मैकडोनल और विंटरनिट्ज आदि का स्पष्ट मत है कि वेदों में आवागमनीय पुनर्जन्म का उल्लेख नहीं मिलता। इस विचार का प्रवेश हिन्दू धर्म-दर्शन में परवर्ती युग में हुआ है।

ब्राह्मण ग्रंथों में भी प्रचलित पुनर्जन्म नहीं

वैदिक काल के ऋषियों ने यह मौलिक निष्कर्ष निकाला कि सृष्टि नियम-विहीन नहीं है। उसमें सामंजस्य और समन्वय है। उसमें ऐसा नियम चल रहा है, जिससे ऋतुएं बदलती हैं और दिन-रात होते रहते हैं। उस काल के लोगों में स्वर्ग-नरक की धारणा पाई जाती थी और उनमें स्वर्ग के प्रति अधिक लोभ था।

रामधारी सिंह 'दिनकर' अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' में लिखते हैं—

"मंत्र युग के बाद ब्राह्मणों का युग आता है। पुनर्जन्म और कर्मफलवाद का प्रत्यक्ष विवरण ब्राह्मण-ग्रंथों में भी नहीं मिलता, यद्यपि ब्राह्मणों से यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज यह मानता था कि मरने के बाद जीव परलोक में वास करता है और लोक में उसने जैसे कर्म किए हैं, परलोक में उसे वैसे ही फल मिलते हैं।" (संस्करण : 1998, पृ० 133)

दिनकर जी आगे लिखते हैं कि "उपनिषदों ने आदमी को कुरेद-कुरेद कर उसे ऐसे सवालों के हवाले कर दिया, जिनका आख़िरी जवाब उसे आज तक नहीं मिला।" (पृ० 135)

श्री रामदास गौड़ अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दुत्व' में पृष्ठ 565 पर लिखते हैं :

"सनत्सुजात के प्राचीन आख्यान में ही वेदान्त-तत्व प्रतिपादित है। यह सिद्धांत कि ज्ञान से ही मोक्ष मिलता है, उपनिषद का ही है। यह भी सिद्धांत वहीं का है कि जीवात्मा और परमात्मा अभिन्न हैं। प्रमाद के कारण मृत्यु होती है, यानी अपने परमात्म-स्वरूप को भूलने से आत्मा की मृत्यु होती, यह एक नवीन तत्व है।"

कुछ ऐसे भी विद्वान हैं, जो वेदों से आत्मा और ईश्वर की अभिन्नता सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। इनमें एक है डॉ० विष्णुदेव उपाध्याय, जिन्होंने अपनी

पुस्तक "भारतीय दर्शन : मूलान्वेषण" में लिखा है कि "वेदों के अनुसार, आत्मा के जनक परमात्मा हैं। वह इस प्रकार कि जीवात्मा परमात्मा से पृथक नहीं हैं, प्रत्युत व तद्रूप ही है।" (पृ० 189)

यदि डॉ० उपाध्याय के मंतव्य को सही मान लिया भी जाए, तो यह मानना पड़ेगा कि जो जिस चीज़ का निर्माता है, उसका उसमें समावेश हो जाता है। यह कितना हास्यस्पद और अतार्किक मत है।

शोषण का हथियार

पुनर्जन्म और आवागमन दो अलग- अलग चीज़ें हैं। वेदों में पुनर्जन्म है, जिसका अर्थ मनुष्य का अपने कर्मों के फल हेतु एक बार जन्मना है, जबकि आवागमन का अर्थ मोक्ष प्राप्ति तक कर्मानुसार 84 लाख योनियों में बार-बार जन्म लेना है। उपनिषद काल में पुनर्जन्म और आवागमन को एकार्थी बना डाला गया। इसके निहित उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए महापंडित राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं—

"भारतीय प्राचीन साहित्य में छान्दोग्य (उपनिषद) ही ने सबसे पहले पुनर्जन्म (परलोक में ही नहीं इस लोक में भी कर्मानुसार प्राणी जन्म लेता है) की बात कही। शायद उस वक़्त प्रथम प्रचारकों ने यह न सोचा हो कि जिस सिद्धांत का वे प्रचार कर रहे हैं, वह आगे कितना ख़तरनाक साबित होगा, और वह परिस्थिति के अनुसार बदलने की क्षमता रखनेवाली शक्तियों को कुंठित कर समाज को प्रवाहशून्य नदी का गंदला पानी बना छोड़ेगा. . . .

इसी लोक में आकर फिर जनमना (पुनर्जन्म) तो पीड़ित वर्ग के लिए और ख़तरनाक चीज़ है। इसमें यही नहीं है कि आज के दुखों को भूल जाओ, बल्कि साथ ही यह भी बतलाया गया है कि यहां की सामाजिक विषमताएं न्याय्य हैं, क्योंकि तुम्हारी ही पिछले जन्म की 'तपस्याओं' (दुखों, अत्याचारपूर्ण वेदनाओं) के कारण संसार ऐसा बना है। इस विषमता के बिना तुम अपने आज के कष्टों का पारितोषिक नहीं पा सकते। पुनर्जन्म के संबंध में यह सर्वपुरातन वाक्य है—

'सो जो यहां रमणीय (अच्छे आचरण वाले) हैं, यह ज़रूरी है कि वे रमणीय योनि-ब्राह्मण योनि या क्षत्रिय योनि या वैश्य योनि—को प्राप्त हों। और जो बुरे (आचारवाले) हैं, यह ज़रूरी है कि वे बुरी योनि—कुत्ता योनि, सूकर योनि या चांडाल योनि को प्राप्त हों।" (छांदोग्य 5-10-7) (पं० राहुल सांकृत्यायन, दर्शन दिग्दर्शन, किताब महल, संस्करण : 1992, पृ० 403, 404)

पं० राहुल सांकृत्यायन जी छांदोग्य उपनिषद के उक्त श्लोक का औचित्य स्पष्ट

करते हुए लिखते हैं—

"ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को यहां मनुष्य-योनि के अन्तर्गत न मानकर उन्हें स्वतंत्र योनि का दर्जा दिया है, क्योंकि मनुष्य-योनि मानने पर समानता का सवाल उठ सकता था। पुरुष सूक्त (ऋग्वेद 10-90-12) के एक ही शरीर के भिन्न-भिन्न अंग की बात को यहां भुला दिया गया, क्योंकि यद्यपि वह कल्पना भी सामाजिक अत्याचार पर पर्दा डालने के लिए ही गढ़ी गई थी, तो भी वह उतनी दूर तक नहीं जाती थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को स्वतंत्र योनि का दर्जा इसीलिए दिया गया, जिसमें सम्पत्ति के स्वामी इन तीनों वर्णों की वैयक्तिक सम्पत्ति और प्रभुता को धर्म (कर्मफल) द्वारा न्याय बतलाया जाए और वैयक्तिक सम्पत्ति के संरक्षक राज्य के हाथ को धर्म द्वारा दृढ़ किया जाए।" (उक्त, पृ० 404)

सुख्यात चिन्तक डॉ० मानवेन्द्रनाथ राय आवागमन वाले पुनर्जन्म का ज़ोरदार खंडन करते हैं। वे पुनर्जन्म के सिद्धान्त को प्रशासक वर्ग के समर्थक पुरोहितों की चातुर्यपूर्ण कल्पना मानते हैं, जो समाज में उनकी उच्च स्थिति को बनाए रखने के लिए ही की गई है। उनका विचार है कि पुनर्जन्म का सिद्धांत समाज में नियतिवाद को जन्म देता है जो मनुष्य को निष्क्रिय एवं पौरुषहीन बना देता है।

(Indian Message, M.N. Roy, Pp. 14, 151)

'आत्मा और पुनर्जन्म' पुस्तक की लेखिका सोमा सबलोक का कहना है कि "पूर्वजन्म का सिद्धांत अकर्मण्यता पैदा करनेवाली एक मनगढ़ंत बात है। वास्तव में पूर्वजन्म के कर्मों के फल का सिद्धांत धनिक वर्ग के लोगों और धर्म के ठेकेदारों के उन पिट्ठुओं के द्वारा बनाया गया है जो ग़रीब भोलीभाली जनता को लूटना चाहते थे और उन्हें उनकी ग़रीबी में ही संतुष्ट रखना चाहते थे।" (पृ० 12)

पुराणों, धर्मशास्त्रों आदि में पुनर्जन्म का विस्तार

पुनर्जन्म का आरंभिक 'पुनः' शब्द का अर्थ होता है 'दोबारा' न कि 'बार-बार'। फिर भी ज़बरदस्ती 'बार-बार' का अर्थ ग्रहण करके उपनिषदों के द्वारा इसकी स्थापना कर डाली गई और पुराणों, रामायण, महाभारत एवं धर्मशास्त्रों आदि में इसको अत्यधिक विस्तार दे दिया गया। इनमें श्राद्ध-सिद्धांत, अर्थात् मृतक की आत्मा को शांति पहुंचाने का कर्मकांड भी विद्यमान है, जो पुनर्जन्म के पूर्णतः विपरीत है। फिर भी ये विरोधाभासी मान्यताएं हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में पाई जाती हैं। डॉ० पांडुरंग वामन काणे लिखते हैं—

"कर्म एवं पुनर्जन्म के सिद्धांत का श्राद्ध-सिद्धांत से मेल बैठाना बड़ा कठिन है।" (धर्मशास्त्र का इतिहास, पंचम भाग; उ०प्र० हिन्दी संस्थान, द्वितीय संस्करण 1984, पृ० 384)

इन्हीं कारणों से आर्यसमाज श्राद्ध प्रथा का विरोध करता है, पर वह भी सुतर्क प्रस्तुत करने में अक्षम है।

वेदों को छोड़कर धर्मग्रंथों में आवागमनीय पुनर्जन्म विद्यमान है, जिसके अनुसार चौरासी लाख योनियों में जीव संचरण करते हैं। उन्हें मानव-दानव, पशु-पक्षी, कृमि-कीट, गिरि-कानन, तरु-तृण आदि सभी का रूप धारण करना पड़ता है। पुराणों में भी इसका विस्तृत विवरण मिलता है। पुराणों ने भी अच्छे और बुरे कर्मों की महत्ता अवैदिक पुनर्जन्म-मान्यता के अनुसार वर्णित किए हैं। उनके कथनानुसार अच्छे या बुरे कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है, जब तक कर्मों का नाश नहीं हो जाता। नारदीय पुराण (उत्तर भाग, 29-18) में है कि "सैकड़ों जीवनों के उपरान्त भी कर्म का नाश नहीं होता।"

पद्म पुराण (2-81-48 और 94-118) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "बिना कर्मफल भोगे कर्म का नाश नहीं होता, अतीत जीवनों के कर्म से उत्पन्न बन्धन को कोई हरा नहीं सकता।" इसी पुराण (2-9-13, 15) में है कि "मनुष्य अपने कर्मों द्वारा देवता बन सकता है या मानव बन सकता है, पशु या पक्षी या क्षुद्र जीव या स्थावर (पेड़-पौधे या पत्थर का टुकड़ा) बन सकता है, अपनी शक्ति या

सन्तान की उत्पत्ति से कोई व्यक्ति पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों के प्रभावों को दूर नहीं कर सकता।"

विष्णु पुराण (44-45), गरुड पुराण (2-2-89) में आया है कि वे स्त्रियां, जो चोरी करने के कारण पापी ठहराई गई हैं, आनेवाले जन्मों में चोरों की पत्नियां होती हैं। मनु स्मृति (12-69) में यही बात की गई है। तात्पर्य यह कि मानव-योनि का परिवर्तन नहीं होगा।

मार्कण्डेय पुराण (15-1, 41), ब्रह्म पुराण (217, 37-110), गरुड पुराण (प्रेत खंड 2, 60-88), वराह पुराण (203-21), वामन पुराण (अध्याय 12), मार्कण्डेय पुराण (अध्याय 15) आदि में बताया गया है कि मनुष्य को क्या कर्म-फल मिलता है और वह आवागमन के चक्कर में कितना फंसता है।

पौराणिक कथाएं

पुराणों में पुनर्जन्म पर आधारित अनेक कथाएं विद्यमान हैं। इनमें से एक-दो कथाओं को यहां प्रस्तुत करना समीचीन होगा, ताकि पुनर्जन्म को आवागमनीय रूप देने का किसी सीमा तक आकलन किया जा सके। सर्वप्रथम हम मार्कण्डेय पुराण में वर्णित चार पक्षियों के कथानक की चर्चा करते हैं। कथा इस प्रकार है—

एक समय महर्षि जैमिनि, मार्कण्डेय मुनि के पास गए और महाभारत-संबंधी कुछ सन्देह उपस्थित किए। तब संध्या-वन्दन का समय होने के कारण मार्कण्डेय मुनि ने उनको विन्ध्य पर्वत की कन्दरा में रहने वाले चार पक्षियों के पास जाने को कहा। महर्षि जैमिनि के पक्षियों के बारे में पूछे जाने पर मार्कण्डेय जी ने बतलाया कि वे मुनिवर समीक के द्वारा पालित पक्षी हैं। एक समय दुर्वासाजी के द्वारा शापित वपु नामक अप्सरा ने गरुडवंशीय कंधर नामक पक्षी की पत्नी मदनिका के गर्भ से तार्क्षी पक्षिणी के रूप में अवतार लिया था। वही तार्क्षी द्रोण नामक एक ब्राह्मण को ब्याही गई थी, जिससे गर्भ धारण करने पर साढ़े तीन महीने बाद तार्क्षी, जब महाभारत-युद्ध हो रहा था, उड़ती हुई उधर से निकली और अर्जुन के बाण से छिल जाने पर वह गर्भस्थ अंडों को गिराकर मृत्यु को प्राप्त हुई। संयोगवश उसी समय भगदत्त के सुप्रवीक नामक गजराज का महान गलघंट भी बाण लगने से टूटकर गिरा और उसने उन अंडों को आच्छादित कर दिया। युद्ध-समाप्ति के बाद शिष्यों के साथ विचरण करते हुए समीक मुनि उनको उठा ले गए। आश्रम में परिपुष्ट होकर एक दिन वे पक्षी मनुष्य की वाणी बोलते हुए

गुरु को प्रणाम करने लगे। मुनिवर समीक ने विस्मित होकर उनसे पूर्वजन्म का वृत्तान्त पूछा। उन्होंने बतलाया कि 'हम चारों भाई पूर्वजन्म में सुक्रष नामक ब्राह्मण के ज्ञानी पुत्र थे। एक दिन हमने पिता की आज्ञा का उल्लंघन किया। इससे उन्होंने हमें तिर्यक योनि में जाने का शाप दे दिया। अत: हे गुरो! वे ही हम चारों ब्राह्मण-कुमार हैं, जो अब पक्षी होकर तार्क्षी के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं।

पुराणों में एक और प्रसिद्ध कथा जड़भरत की है। श्रीमद् भागवत पुराण में है कि ऋषभदेव के पुत्र राजाधिराज भरत बहुत काल राज्य भोगने के पश्चात् अपने पुत्रों को राज्य देकर वानप्रस्थ का नियम लेकर शाल-ग्राम क्षेत्र के निवासी हुए। वहां महायोग का आश्रय लेकर भी अन्त में एक मृगछौने के मोह में आसक्त हो गए। ममतावश देह-त्याग के समय वे उस मृगछौने का ही ध्यान करते रहे। उनकी मुक्ति नहीं हुई। इसलिए उनका पुनर्जन्म मृगयोनि में ही हुआ, परन्तु उनकी पूर्वस्मृति नष्ट नहीं हुई थी। अत: उन्होंने अन्य मृगों (हिरनों) का साथ छोड़कर जहां-तहां तिनके चरते हुए गंडकी नदी में आधा शरीर डुबोकर तप करते हुए प्राण-त्याग किया। पुन: वे एक श्रेष्ठ ब्राह्मण के घर में पैदा हुए। वहां भी उनकी पूर्वस्मृति बनी रही, अत: वे जड़, अंधे और बहरे के समान आचरण करते थे। पिता के पढ़ाने पर भी उन्होंने विद्या नहीं पढ़ी। पिता ने उन्हें खेतों की रखवाली में नियुक्त कर दिया। वहां वे परब्रह्म का चिन्तन करते हुए काल की प्रतीक्षा करते रहे। अंत में उन्हें मुक्ति प्राप्त हो गई। नारद पुराण (पूर्व भाग—द्वितीय पाद) में भी जड़भरत की कथा मिलती है।

पद्मपुराण (उत्तरखंड, अध्याय 174, 5) में प्रह्लाद के पूर्वजन्म का उल्लेख है, जिसके अनुसार पूर्वजन्म में वे शिवशर्मा के सोमशर्मा नामक पुत्र थे। देह त्याग के बाद दानव-शरीर में प्रवृष्टि हुए और प्रह्लाद कहलाए। श्रीमद्भागवत (7.15, 69-73) में नारद के पूर्वजन्म का उल्लेख है। इसी पुराण में उनके कई पुर्नजन्मों का उल्लेख है, जिसमें उनके द्वारा ब्रह्मा जी के हृदय में प्रविष्ट हो जाने का वर्णन भी है।

स्कन्द पुराण के अनुसार, राजा बलि पूर्व जन्म में देव ब्राह्मण नियक नामक जुआरी था। जुआरी ही नहीं वह महापापी, व्यभिचारी और अनेक दुर्गुण सम्पन्न था। उसने अपनी सारी सामग्री एक शिवलिंग को समर्पित कर दी, जिसके कारण वह पुनर्जन्म में राजा बना। यदि उसकी मुक्ति हो जाती तो वह राजा नहीं बन पाता।

शिवपुराण (शतरुद्र संहिता, 28वां अध्याय) में नल-दमयन्ती के पूर्व जन्म की कथा आई है। दोनों पहले के आहुक नामक भील और आहुआ नामक भीलनी

थे। शंकर जी उनके यहां यति रूप धारण करके आए और उनके यहां रात सोने का आग्रह किया। भील द्वार पर सोया और भीलनी व यति घर के अन्दर। बाहर हिंसक जानवरों ने भील को मार डाला। सती होने के पूर्व भीलनी को शंकर जी ने (दोनों को मोक्ष का वरदान न देकर) अगले जन्म में राजा-रानी होने का वरदान दिया। पुराणों में प्रद्युम्न को कामदेव का, ऋभ को ब्रह्मा पुत्र नारद का, पूतना को बलि-पुत्री रत्नमाला का, जरासंध को हिरण्यकश्यपु का पुनर्जन्म बताया गया है। पुराणों में और भी पुनर्जन्म कथाएं विद्यमान हैं।

महाभारत में पुनर्जन्म

महाभारत में भी आवागमनीय पुनर्जन्म को मान्यता दी गई है। इस सिलसिले में उसमें अनेक कथाएं और उपदेश विद्यमान हैं। महाभारत के अनुशासन पर्व में पुनर्जन्म की बड़ी दिलचस्प कथा आई है।

शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म जी युधिष्ठिर से कहते हैं—'हे राजन! प्राचीन काल का वृत्तान्त है। एक समय भगवान व्यास कहीं जा रहे थे। मार्ग में उनकी दृष्टि एक कीड़े पर पड़ी, जो गाड़ी की लीक में बड़ी तेज़ी से भागा जा रहा था। वे कीड़े के निकट जाकर पूछने लगे—'कीट! तू क्यों इतनी आतुरता से भागा जा रहा है? आज तुझ पर कौन-सा भय आ गया है?' कीड़े ने कहा कहा—'भगवन! देखिए ना, यह बैलगाड़ी कितनी तेज़ी से आ रही है। मुझे भय है कि कहीं आकर यह मुझे कुचल न डाले।'

व्यास ज़ी ने कहा—'कीट! तू तो अधम तिर्यक योनि में उत्पन्न हुआ है। तेरा तो मर जाना ही अच्छा है। बता तो किस पाप के कारण तू इस तिर्यक योनि में उत्पन्न हुआ है?' कीट ने कहा—'भगवन! मैं पूर्वजन्म में एक धनी शूद्र था। सदा ब्राह्मणों का अपमान करता था। सभी वर्णों की प्रिय वस्तुओं का अपहरण किया करता था। मैं बड़ा कंजूस और सूदखोर था। मैंने कभी दान और सत्कर्म नहीं किया। गोश्त और भात खाया करता था। हां, मैं अपनी बूढ़ी मां की सेवा किया करता था और एक बार घर पर आए हुए अतिथि का सत्कार भी किया था। इसी पुण्य के बल पर पूर्व स्मृति मेरा साथ नहीं छोड़ रही है।"

व्यास जी ने कहा—'कीट! आज तुझे मेरा दर्शन प्राप्त हो गया, अतः आज से दस जन्मों के बाद मैं तुझे अपने तपोबल से परम पद-मोक्ष प्राप्त करा दूंगा। एक स्थान पर बड़े कर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते हैं। तू उनका पुत्र होकर मेरी कृपा से मोक्ष प्राप्त कर लेगा।'

इतना कहकर व्यास जी चले गए। इतने में वह बैलगाड़ी आई और उससे दबकर कीट ने प्राण त्याग दिए। इसके बाद वह गधा, सूअर, कुत्ता, सियार और चाण्डाल हुआ। तत्पश्चात् सत शूद्र और वैश्य हुआ। इसके बाद राजपुत्र हुआ, तब वह व्यास जी के पास गया और अपनी कृतज्ञताज्ञापन करते हुए उसने दास्यभाव मांगा। अंत में उसने तपस्या करते हुए देह-त्याग किया। इसके बाद वह ब्राह्मण कुमार हुआ। तब व्यास जी ने आकर उसे फिर दर्शन दिए। उनकी कृपा से उसकी मुक्ति हो गई।

महाभारत के अनुशासन पर्व में ही एक शूद्र तपस्वी की कथा आई है। उसने अपने एक मित्र ब्राह्मण तपस्वी से अपने पितरों का श्राद्ध सम्पन्न करवाया था, जिसके फलस्वरूप वह तापस शूद्र पुनर्जन्म में राजा हुआ और वह तपस्वी ब्राह्मण उसका पुरोहित। राजा प्राय: अपने पुरोहित को देखकर हंसा करता था। एक दिन पुरोहित ने राजा को एकांत में बुलाकर हंसने का कारण पूछा। राजा ने अपनी पूर्वस्मृति के बल पर पुरोहित को सब ठीक-ठीक कह सुनाया। राजा की बात सुनकर पुरोहित तपस्या करने चला गया और कठिन तप करके उसने मोक्ष प्राप्त किया।

इन कथाओं के अतिरिक्त महाभारत में अनेक पुनर्जन्म कथाएं हैं। इनकी उभरी हुई विशेषता यह है कि इनसे हिन्दू भाइयों की एक उच्च जाति किसी न किसी रूप में शामिल रही है मानो इसके बिना कथा बन ही नहीं सकती। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि पुनर्जन्म विषयक पौराणिक कथाएं तो मिलती हैं, पर 1930 ई० के पूर्व तक इस प्रकार की ऐसी ऐतिहासिक घटना का दावा नहीं किया गया। 1930 ई० के आस-पास जो पुनर्जन्म-घटना पेश की या करवाई गई, वह एक ब्राह्मण-कन्या शान्ति देवी से जुड़ी हुई थी।

इस घटना की प्रामाणिकता अभी तक सिद्ध नहीं की जा सकी है। शान्ति देवी ने न तो अपने पूर्व पति का नाम बताया और न ही मथुरा में उसके पति का नाम मालूम हो पाया, जिसके बारे में कहते हैं कि शान्ति देवी ने कहा कि उसका पति वस्त्र व्यवसायी था। शान्ति देवी के पूर्व जन्म का नाम भी मालूम नहीं किया जा सका, न ही उसके पूर्व जन्म के लड़के का नाम, जिसे जन्म देते ही कथानुसार मथुरा के एक अस्पताल (नाम का पता नहीं) में उसकी मृत्यु हो गई थी। उसकी मृत्यु और शान्ति देवी के रूप में उसके जन्म में काफ़ी समयान्तर का पता लगा। इस प्रकार उसके संस्कृत अध्यापक पिता द्वारा पेश की गई कथा में अनेक सन्देहों ने जन्म लिया।

गीता में आवागमन

गीता महाभारत के भीष्म पर्व का भाग है। श्रीमद भगवद्गीता के कुछ श्लोकों को आवागमनीय पुनर्जन्म के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इनमें से निम्नलिखित श्लोक को प्राथमिक प्रमाण के रूप में प्रायः प्रस्तुत किया जाता है—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा—
न्यन्यानि संयाति नवानि देही। (2-22)

अनुवाद : जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने जीर्ण शरीरों को त्याग कर नूतन देह ग्रहण करता है। (अनुवादक : स्वामी प्रभुपाद, श्रीमद भगवद्गीता यथारूप, पृ० 78)

□ इस श्लोक पर यदि बुद्धिसंगत दृष्टि डाली जाए, तो मालूम होगा कि जिस श्लोक को आवागमन का आधार बताया गया है, वास्तव में ऐसा है नहीं। यह मानव-स्वभाव है कि कोई भी व्यक्ति पुराने कपड़े उतारकर पुराने कपड़े से निम्न कोटि का और खराब कपड़े पहनना पसन्द नहीं करता है और व्यावहारिक रूप में पहनता भी नहीं है। यह उसकी अपनी इच्छा पर है कि पुराना कपड़ा कब पहनना छोड़े, लेकिन सामान्यतः वह उसे उस समय तक पहनता है जब तक कि उसकी अवस्था बुरी न हो जाए। फिर इन्सान कपड़े उतारता और पहनता रहता है। कभी-कभी एक दिन में यह क्रम कई बार हो सकता है और कभी वह नए तो कभी वे पुराने कपड़े जिनकी दशा अभी ख़राब नहीं हुई है पहनता है। यह उसकी इच्छा पर निर्भर है।

आवागमन और पुनर्जन्म का जो सिद्धांत बताया जाता है, उस पर कपड़े बदलने वाली उक्त उपमा अनौचित्यपूर्ण और अतार्किक है। इस मान्यता के अनुसार, पुनर्जन्म में इन्सान की इच्छा को कोई स्थान नहीं है। हर दुराचारी और कुकर्मी अपने भावी जीवन को अच्छा ही चाहेगा, पर यह मान्यता इसे ठुकरा देती है। अतः कपड़े बदलने की उपमा की आवागमनीय मान्यता से संगति नहीं बैठती।

उपर्युक्त श्लोक से पूर्व भी आवागमन को सिद्ध करने के लिए समीचीन उपमा नहीं दी गई है। श्लोक यह है—

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥ (2-13)

अनुवाद : जैसे जीवात्मा की इस देह में बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही (मृत्यु होने पर) अन्य शरीर की प्राप्ति होती है, उस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होता।

(अनुवादक : जयदयाल गोयन्दका, गीता-तत्वविवेचिनी टीका, पृ० 67)

□ स्पष्ट है, आवागमन की मान्यता के अनुसार आत्मा को एक ही देह (शरीर) की तीन अवस्थाओं से नहीं गुज़रना पड़ता है, अपितु उसको विभिन्न प्रकार के पशु, पक्षी, कीट, वृक्ष आदि में स्थानान्तरित होना पड़ता है। यदि अवस्थाओं से गुज़रने को मान लिया जाए, तो आवागमन कहां हुआ? अतः बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था की उपमा ग़लत और असंगत है।

आवागमनीय पुनर्जन्म के समर्थक निम्नलिखित दो श्लोकों को भी प्रायः पेश करते रहते हैं—

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम॥ (2-12)

अनुवाद : (श्रीकृष्ण कहते हैं :) न तो ऐसा ही है कि किसी काल में मैं नहीं था, तू नहीं था अथवा ये सब राजा नहीं थे और न ही ऐसा है कि इससे आगे हम सब नहीं रहेंगे। (अनुवादक : स्वामी प्रभुपाद, श्रीमद भगवद्गीता यथारूप, पृ० 66)

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप॥ (4-5)

अनुवाद : हे परंतप अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत-से जन्म हो चुके हैं। उन सबको तू नहीं जानता, किन्तु मैं जानता हूं।

(अनुवादक : जय दयाल गोयन्दका, गीता तत्व विवेचिनी टीका, पृ० 174)

□ इन दोनों श्लोकों से यह प्रमाणित होता है कि इन्सानों को सार्वकालिक मान लिया गया है। गोयन्दका जी ने यह बात लिख दी है कि कृष्ण जी कहते हैं : "हम लोग अनादि और नित्य हैं।" यदि इन श्लोकों का तात्पर्य यही है तो ज्ञात हुआ कि इन्सानों की वर्तमान संख्या सार्वकालिक है, जो विभिन्न शरीरों और आकृतियों में परिवर्तित होने के बाद भी मोक्ष को नहीं प्राप्त हुई और न आगे प्राप्त हो सकती है, क्योंकि सब आगे भी रहेंगे। सब आवागमन की चक्की में पिसते रहेंगे। इन श्लोकों की दृष्टि में इन्सान क्या हुए, सबके सब अनादि हो गए। ऐसे में किसी का

भला कैसे अंत हो सकता है? ये सभी श्लोक निश्चय ही आवागमनीय पुनर्जन्म की धज्जियां उखेड़ देते हैं, फिर भी इन्हें प्रमाण के लिए बार-बार प्रस्तुत किया जाता है। कितनी बड़ी अबौद्धिकता है यह! गीता कर्म पर तो ज़ोर देती है, पर उसके फल पर उसका विश्वास नहीं है। निष्फल या निष्काम कर्म मानव को अकर्मण्य बनाए, तो कोई आश्चर्य नहीं। स्वामी विवेकानन्द गीता के उपदेश की परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं: "ज्ञान, भक्ति और योग का यह विमर्श युद्धस्थल पर कैसे हुआ होगा, जब भारी सेनाएं भिड़ने को तैयार खड़ी हों? क्या कृष्ण-अर्जुन संवाद का हर शब्द लिखने के लिए कोई शार्टहैंड लेखक उपस्थित था?. . . यह युद्ध तो एक प्रतीक है उस संघर्ष का जो मनुष्य के हृदय में भली और बुरी प्रवृत्तियों के बीच निरंतर होता रहता है।. . . कुरुक्षेत्र युद्ध का कोई प्रमाण उपस्थित नहीं किया जा सकता है। अर्जुन और अन्य की ऐतिहासिकता के बारे में सन्देह की पूरी गुंजाइश है।" (स्वामी विवेकानंद का पूर्ण लेखन, भाग 4)

रामायण में पुनर्जन्म को मान्यता

रामायण में भी आवागमनीय कर्म और पुनर्जन्म के तत्व मिलते हैं। राजा दशरथ ने अपना अंतिम विवाह कैकेयी के साथ किया था। वे दशरथ की सबसे प्रिय रानी थीं। जब कैकेयी द्वारा वरदान मांगने पर दशराथ ने राम को 14 वर्ष का वनवास दे दिया, तो राम की माता कौशल्या रोती हुई कहती है—"मैं विश्वास करती हूं कि मैंने पूर्व जन्म में बहुत से लोगों को उनके पुत्रों से दूर कर दिया होगा या जीवित प्राणियों को हानि पहुंचाई होगी (या उन्हें मार डाला होगा), इसी से यह दुख मुझ पर घहरा पड़ा है, 'मैं बिना सन्देह के ऐसा मानती हूं कि मैंने पूर्व जीवन में उन गौओं (या माताओं) के स्तनों को काट दिया होगा, जिनके बछड़े अपनी मां का दूध पीना चाहते थे।'"

श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकांड (प्रक्षिप्त सर्ग 1) में रामचन्द्र जी ने आवागमनीय पुनर्जन्म के आधार पर कुत्ते को न्याय प्रदान किया और उसे मारनेवाले ब्राह्मण को कालंजर का मठाधीश बना दिया। वृत्तांत इस प्रकार है—श्रीराम के दरबार में कोई शिकायतकर्त्ता नहीं आया। लक्ष्मण को केवल एक कुत्ता खड़ा मिला। उन्होंने उससे कहा, 'यदि तुम्हें कुछ कहना है तो चलकर राजा से ही कहो।' कुत्ते ने श्रीराम से ब्राह्मण के बारे में शिकायत की, जिसकी मार से उसका सिर फट गया था। श्रीराम ने ब्राह्मण को बुलाकर पूछा कि 'तुमने इसे क्यों मारा?' ब्राह्मण ने जवाब दिया कि मैं भूखा था। भीख मांगने के लिए जा रहा था और यह कुत्ता मेरा रास्ता रोके खड़ा था। जब मैंने इससे हटने को कहा,

तो नहीं हटा। भूख और कुत्ते की हठ की वजह से मुझे गुस्सा आ गया और मैंने इसे मारा।' श्रीराम ने ब्राह्मण को कालंजर का मठाधीश बना दिया। कुत्ता कहता है कि मैं भी पूर्व जन्म में कालंजर का मठाधीश था, जिसकी वजह से मुझे अब कुत्ता बनना पड़ा है। उल्लेखनीय है कि इस वृत्तांत में कर्म की कोई महत्ता नहीं है। मठाधीश कितना ही अच्छा करे, कुत्ता ही बनेगा। इस घटना से आवागमनीय पुनर्जन्म की धारणा स्वतः खंड-खंड हो जाती है।

गोस्वामी तुलसीदास की काव्य-कृति 'रामचरित मानस' तो आवागमन से परिपूर्ण है। छिपकर बालि को तीर मारने के बाद तीर चलानेवाले श्रीराम से वह कहता है—

'जेहि जोनि जन्मौं कर्म बस तहं राम पाद अनुरागऊं।' (4-9-2 छं०)

पुनर्जन्म में शाप का प्रभाव भी पड़ता है। यहां कर्म गौण हो जाता है। नारद के शाप के कारण राम को नर-शरीर धारण करना पड़ा और प्रिया-वियोग सहना पड़ा। शंकर के गणों को भी रावण और कुम्भकर्ण के रूप में जन्म लेना पड़ा। प्रतापी राजा प्रतापभानु को ब्राह्मणों के शाप के कारण उसके भाई, साथी, परिजन और सेना समेत सभी को राक्षस रूप में जन्म लेना पड़ा (रामचरित मानस, 1-175-1 से 3)। अगस्त्य मुनि के शाप के कारण रावण के राक्षस दूत शुक मुनि से निश्चित रूप को प्राप्त हुआ था (मानस 5-56-6)।

धर्मशास्त्रों में कर्म और पुनर्जन्म

स्मृतियों में कर्म और पुनर्जन्म का विशद विवेचन मिलता है। मनुस्मृति (12.54-69) में है—

"महापातकी लोग बहुत वर्षों तक भयंकर नरकों में रहकर निम्नलिखित जन्म प्राप्त करते हैं : ब्राह्मण की हत्या करने वाला (ब्रह्म हत्यारा) कुत्ता, सूअर, ऊंट, गधा, कौआ (या बैल), बकरी, भेड़, हिरन, पक्षी, चाण्डाल और पुक्कस के जन्मों को पार करता है, सुरा (शराब) पीने वाला ब्राह्मण कीटों, मकोड़ों, पतंगों, मल खानेवाले पक्षियों, मांसभक्षी पशुओं के विभिन्न जन्मों को पाता है, ब्राह्मण के सोने की चोरी करनेवाला ब्राह्मण मकोड़ों, सांपों, छिपकलियों, पानी के जीवों, नाशक निशाचरों (कीट-पतंगों) की योनियों में हज़ारों बार जन्म लेता है, गुरु की पत्नी को अपहृत करने वाला घासों, लताओं, गुल्मों, मांसभक्षी पशुओं, सांपों और बाघों जैसे क्रूर पशुओं की योनि में सैकड़ों बार जन्म लेता है। जो व्यक्ति लोगों को मारा-पीटा करते हैं वे कच्चा मांस खानेवालों की योनि में जन्म लेते हैं, जो

व्यक्ति निषिद्ध भोजन करते हैं वे कीट होते हैं, जो चोरी करते हैं वे ऐसे जीव बनते हैं जो अपनी जाति के जीवों को खा डालते हैं जैसे—मछली, जो लोग निम्न जाति की स्त्रियों के साथ संभोग करते हैं वे प्रेत होते हैं, जो व्यक्ति बहिष्कृत लोगों के साथ कुछ विशिष्ट अवधि तक रह लेता है, जो दूसरों की पत्नियों के साथ संभोग करता है, जो ब्राह्मण की सम्पत्ति (सोना के सिवा) को छीन लेता है वह ब्रह्मराक्षस होता है। जो व्यक्ति लोभवश रत्नों, मोतियों, मूंगों या किसी अन्य प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों को चुराता है वह स्वर्णकारों (सुनारों) के बीच जन्मता है, अनाज चुराने पर ब्राह्मण चूहा होता है, कांसा चुराने पर व्यक्ति हंस पक्षी होता है, दूसरे को जल से वंचित करने पर व्यक्ति प्लव नामक पक्षी होता है, शहद चुराने पर डंक मारनेवाला जीव होता है, मीठा रस (गन्ना आदि) चुराने पर कुत्ता होता है। गोश्त चुराने पर चील होता है, तेल चुराने पर तेलचट्टा कीड़ा, नमक चुराने पर झिल्ली जीव और दही चुराने पर बगुला पक्षी होता है। रेशम, सन-वस्त्र, कपास-वस्त्र चुराने पर क्रम से तीतर, मेढक और क्रौंच पक्षी का जन्म मिलता है। गाय चुराने पर गधा, चोटा चुराने पर वाग्गुद (चमगादड़ ?) पक्षी, ख़ुशबू चुराने पर छछूंदर, पत्तियों वाले शाक चुराने पर मोर, फलों एवं कन्दमूलों के चुराने पर बन्दर, भांति-भांति के पके अनाज चुराने पर साही और बिना पका भोजन चुराने पर शल्य (या झाड़ी में रहनेवाला जीव विशेष) का जन्म मिलता है। आग चुराने पर बगुला, बर्तनों के चुराने पर हाड़ा, रंगीन कपड़ा चुराने पर चक्रवाक पक्षी, हिरन या हाथी चुराने पर भेड़िया, घोड़ा चुराने पर बाघ, औरत चुराने पर भालू, पीने का पानी चुराने पर चातक, सवारी (यान) चुराने पर ऊंट, पालतू पशु चुराने पर बकरा का जन्म प्राप्त होता है। जो व्यक्ति किसी अन्य की कोई सम्पत्ति बलपूर्वक छीन लेता है या जो उस यज्ञिय सामग्री को, जिसका कोई अंश अभी यज्ञ में नहीं लगा है, खा लेता है तो वह निम्न श्रेणी का पशु होता है, जो औरतें उपर्युक्त प्रकार की चोरी करती हैं, वे भी पातकी होती हैं और वे ऊपर वर्णित जीवों की पत्नियों के रूप में जन्म ग्रहण करती हैं।"

मनुस्मृति के इन प्रावधानों में अनेक बातों का समर्थन याज्ञवल्क्य स्मृति (3.206-208) करती है। आवागमन समर्थक इन प्रमाणों को भी बहुधा उद्धृरित करते हैं। हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने 1943 ई० में 'सरस्वती' (इलाहाबाद) में इस विषय पर क़िस्तवार लेख लिखे थे। स्मृतियों के ये प्रावधान भी बुद्धि और विवेक की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। जैसे—उक्त सभी सज़ाओं को नरकों में रहकर प्राप्त करना बताया

गया है। ये नरक कहां है, इसका स्पष्टीकरण नहीं है। सज़ाओं में जागतिक देहान्तर है। बाघ, ब्रह्मराक्षस, ऊंट, भालू, हंस पक्षी आदि देहान्तरों का नरकों से क्या संबंध? इस प्रकार की बातें भ्रमोत्पादक हैं। अन्य प्रावधानों की भी संगति नहीं बैठती। सोना चुराने के अपराध में हज़ारों बार जन्मने की सज़ा है, पर सोने की मात्रा नहीं बताई गई है, दूसरी तरफ़ गुरु-पत्नी को अपहृत करने की सज़ा सैकड़ों जन्म तक ही सीमित है। धर्मशास्त्रों में इन पापों के परिणामों को दूर करने के उपाय— प्रायश्चित कर्म बताए गए हैं। प्रायश्चित संभव है, पर इसकी आवागमनीय पुनर्जन्म से अनुकूलता सिद्ध नहीं हैं। धर्मशास्त्रों में पुनर्जन्म विषयक प्रावधानों में एकरूपता नहीं पाई जाती।

रोग, अपंगता पूर्व जन्मों के फल हैं?

धर्मशास्त्रों और आयुर्वेद के चिकित्सा ग्रन्थों में रोग और विकलांगता को पूर्व जन्मों के पापों का फल बताया गया है। अथर्ववेद (8-7-3) में जो उल्लेख है, उससे इसकी पुष्टि नहीं होती। इस मंत्र में है कि पाप से पैदा रोगों द्वारा ग्रस्त व्यक्ति के शरीर के प्रत्येक अंग के रोग लता-गुल्मों द्वारा काट दिए गए।

डॉ० पाडुरंग वामन काणे लिखते हैं—

"मनु (9.49-52), वसिष्ठ (20.44), याज्ञ० (3.209-211), विष्णु (अ० 45), शातातप (1.3-11 एवं 2.1, 30, 32, 47) गौतम (अ० 20, पद्य), गौतम (गद्य, मिता०, याज्ञ० 3.216), वृद्ध गौतम (स्मृतिमुक्ताफल, पृ० 861), यम (प्राय० मयूख, पृ० 9), शंख (मिता०, याज्ञ० 3.216), स्मृत्यर्थ सार (पृ० 99, 100) ने उन रोगों एवं शारीरिक दोषों का वर्णन किया है, जिनसे पापी मनुष्य रूप में जन्म पाने पर ग्रसित होते हैं। चरक संहिता जैसे वैद्यक ग्रन्थों ने भी ऐसा विश्वास प्रकट किया है कि रोग पूर्वजन्म में किए गए दुष्कर्मों के फल मात्र हैं। (देखिए, सूत्रस्थान, अध्याय 1.116)

रोगों अथवा शारीरिक दोषों के, जिनसे विभिन्न कोटियों के पापी ग्रसित होते हैं, विषय में स्मृतियों में पूर्ण मतैक्य नहीं है, यथा जहां वसिष्ठ (24.24) एवं शंख (मिताक्षरा, याज्ञ० 3.216) के मत से ब्रह्म (ब्राह्मण) घातक कोढ़ी होता है, वहीं मनु (9.49), याज्ञ० (3.209), विष्णु० (45.3), अग्नि (371.32) ने उसे क्षय रोग (टी०बी०) से पीड़ित होनेवाला कहा है।"

(धर्मशास्त्र का इतिहास, तृतीय भाग, पृ० 1108)

मनुस्मृति (5.1.64-166) में है कि 'पति से झूठा व्यवहार करके (किसी अन्य के साथ व्यभिचार करके) पत्नी इस जीवन में निन्दित तो होती ही है, वह (मृत्यु के

बाद) लोमड़ी हो जाती है और (कोढ़ जैसे) भयंकर रोगों से ग्रसित होती है।'

इनके शमन के उपाय भी धर्मशास्त्रों में आए हैं, जिनमें है : कदली दान (सोने का कदली वृक्ष बनाकर ब्राह्मणों को दान करना) आदि।

रोग और विकलांगता की उत्पत्ति की इस मान्यता से सहज ही कुछ प्रश्न उपस्थित होते हैं। कर्म और पुनर्जन्म के इस सिद्धांत में विश्वास करने से लोग मानवीय दुखों के प्रति निर्ममता की नीति अपनाएंगे और दीन-दुखी, असहाय, रोगी और अपंगों को किसी प्रकार की सहायता नहीं करना चाहेंगे, क्योंकि वे सोचेंगे कि इनकी पीड़ा और परेशानी तो पूर्व जन्मों का फल है और दुखित व्यक्ति को इस प्रकार का दुख भोगना चाहिए। संभवत: इन्हीं मान्यताओं को दृष्टि कर महाभारत (शान्ति पर्व 36.38, 39) में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है, "गूंगे, बदरंग (कोढ़ी), अपंग, बौने, नीच वंश वाले और जनेऊ धारण न करने वाले को दान नहीं देना चाहिए। ब्राह्मण यदि अशिक्षित है तो उसे भी दान देना सही नहीं। अनुचित रूप से दिया हुआ और अनुचित रूप से लिया हुआ दोनों ही तरह का दान देने और लेने वाले के लिए खतरनाक और संकटपूर्ण है।"

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघ चालक कु०सी० सुदर्शन का कहना है कि लोगों के दुख-दर्द देखकर ही शुभ संकल्प पैदा होता है और बड़े से बड़ा कार्य साकार हो जाता है" (नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 22 अगस्त 1999)। क्या इस वक्तव्य का मतलब यह समझा जाए कि बड़े से बड़ा कार्य करने के लिए लोगों के दुख-दर्द को बनाए रखा जाए?

पं० माधवाचार्य शास्त्री अपनी चौदह सौ पृष्ठों की पुस्तक 'धर्मविज्ञ दर्शन' में लिखते हैं कि "मुसलमान, ईसाई-पुनर्जन्म में विश्वास न रखनेवाले से जब भी पुनर्जन्म से संबंधित वार्तालाप हुआ तो हमारे द्वारा यह प्रश्न करने पर कि फलां बच्चा जन्म ही से अंधा पैदा हुआ देखा गया। सनातन धर्म के अनुसार तो उसका अंधापन उसके पूर्व जन्म के पापों का फल है, परन्तु पुनर्जन्म न माननेवालों के यहां केवल ईश्वर की ग़लती या बेइंसाफ़ी के सिवा उसे और क्या कहा जा सकता है। बस यह सुनते ही बड़े-बड़े मौलाना और पादरी बग़लें झांकने लग जाते हैं।"

दिलचस्प बात तो यह है कि पंडित जी खुद अपनी पुस्तक ही में अपनी उक्त बात का खंडन कर देते हैं और बच्चे में रोगादि मनुष्य की खुद की लापरवाही बताते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में यह तथ्य और पुष्ट हो गया है। फिर यह सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह किसे कैसा बनाकर उसकी परीक्षा ले।

जैन धर्म में कर्म एवं पुनर्जन्म

जैन दर्शन कर्म को 'परमाणुओं का पिंड' मानता है। उसके अनुसार, जीवों की विविधता का मूल कारण यही कर्म है। आत्मा (जीव) और कर्म का संबंध अनादि है। कर्म का संबंध व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा से है। जीव अपने पुराने कर्मों का क्षय करता हुआ नवीन कर्मों का उपार्जन करता रहता है। जब तक प्राणी के पूर्व उपार्जित सारे कर्म नष्ट नहीं हो जाते एवं नवीन कर्मों का आगमन बन्द नहीं हो जाता, तब तक उसकी भवबंधन से मुक्ति नहीं होती। एक बार सारे कर्मों का विनाश हो जाने पर पुनः कर्मोपार्जन नहीं होता, क्योंकि उस अवस्था में कर्मबन्ध का कोई कारण विद्यमान नहीं रहता। आत्मा की इसी अवस्था को कैवल्य या मोक्ष कहते हैं। आचार्य उमास्वामी ने कैवल्य के संबंध में कहा है—

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः। (तत्त्वार्थ सूत्र 1-1)

अर्थात्, सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र ही मोक्ष के साधन हैं।

जैन दर्शन के अनुसार, कर्म और पुनर्जन्म का अविच्छेद संबंध है। कर्म की सत्ता स्वीकार करने पर उसके फलस्वरूप परलोक अथवा पुनर्जन्म की सत्ता उसे स्वीकार करनी पड़ती है। जैन धर्म आत्मा के आवागमन को मानता है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने 'पञ्चांस्ति काय' नामक ग्रन्थ में कहा है—

जो खलु संसारत्थो जीवो तत्तो दु होदि परिणामो।
परिणामादो कम्मं कम्मादो होदि गदिसु गदि॥ 28 ॥
गदिमधिगदस्य देही देहादो इंदियाणि जायंते।
तेहिं दु विसयगहणं तत्तो रागो व दोसो वा॥ 29 ॥
जायदि जीवस्सेवं भावो संसारचक्कवालम्मि।
इदि जिणवदेहिं भणिदो अणादिणिधणो सणिधणतो वा॥ 30 ॥

अर्थ : जो जीव संसार में स्थित है, अर्थात जन्म और मरण के चक्र में पड़ा हुआ है, उसके राग रूप और द्वेष रूप परिणाम होते हैं। उन परिणामों से नए कर्म बंधते हैं। कर्मों से गतियों में जन्म लेना पड़ता है। जन्म लेने से शरीर मिलता है। शरीर में इन्द्रियां होती हैं। इन्द्रियों से विषयों का ग्रहण होता है। विषयों को ग्रहण करने से इष्ट विषयों से राग और अनिष्ट विषयों से द्वेष होता है। इस प्रकार संसाररूपी चक्र में पड़ें हुए जीव के भावों से कर्मबन्ध और कर्मबन्ध से

राग-द्वेष रूप भाव होते रहते हैं। यह चक्र अभव्यजीव की अपेक्षा से अनादि अनन्त है और भव्यजीव की अपेक्षा से सान्त है। (जैन धर्म, भारत वर्षीय दिगम्बर जैन संघ, चौरासी मथुरा, छठा संस्करण, पृ० 152, 153)

जैन धर्म की यह मान्यता है कि जिन कर्मों का फल एक जन्म में प्राप्त नहीं होता उन कर्मों के फल का भोग पुनर्जन्म में करना पड़ता है। लेकिन यह सच है कि जैन धर्म में हिन्दू और बौद्ध धर्मों की भांति आवागमन और पुनर्जन्म की धारणा अधिक उभरी हुई नहीं है।

जैन कर्म साहित्य में समस्त जीवों का समावेश चार गतियों में किया गया है—(1) मनुष्य (2) तिर्यच (3) नरक (4) देव। मृत्यु के पश्चात् प्राणी अपने कर्म के अनुसार इन चार गतियों में से किसी एक गति में जाकर जन्म ग्रहण करता है। उत्तराध्ययन-सूत्र (सैक्रेड बुक आफ दि ईस्ट, जिल्द 45, पृ० 93-97) एवं सूत्रकृताङ्ग में नरकों और उनकी यातना का उल्लेख है। जैन धर्म एक आचार प्रधान धर्म है।

जैन आगम ग्रन्थों और महापुराण आदि चरित-गाथाओं में पुनर्जन्म के अनेक उल्लेख आए हैं। आगम के छठे अंग और 11वें अंग की कथाओं में है कि मनुष्य की पूर्वजन्मों के पापों का प्रायश्चित अनेक भावी जन्मों में करना पड़ता है। जैन अति नगण्य पाप-कर्म को भी बड़े अपराध का कारण मानकर कर्म-दोष के निवारण हेतु जीवात्मा के अनेक योनियों में जन्म लेने की बात मानते हैं। पुष्पदन्त के 'जसहर चरिउ' में महाराज जसहर की मां चन्द्रमती द्वारा आटे के मुर्गे की बलि देने के फलस्वरूप उत्पन्न भाव हिंसा के कारण उन दोनों को मोर, कुत्ता, नेवला, बकरी, मछली, भैसा, मुर्ग़ा आदि कई योनियों में जन्म लेकर नाना प्रकार के कष्ट उठाने का वर्णन प्राप्त होता है।

बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म

बौद्ध धर्म में भी कर्म और पुनर्जन्म की धारणा मिलती है, पर यह हिन्दू धर्म से भिन्न है। बौद्ध धर्म ने योग से पुनर्जन्म और कर्म-फल के सिद्धांत को लिया है। आचार्य नरेन्द्र देव अपनी मशहूर पुस्तक "बौद्ध धर्म दर्शन" में लिखते हैं—

"बौद्धों का विश्वास है कि सत्व अनेक जन्मों में संसरण कर अपने कर्मों के फल का भोग करता है, और वह अभिसमय द्वारा मुक्त होता है। बौद्ध विश्वास की यह मूल भित्ति है. . .

कर्म गतियों का आपेक्षक है। प्रत्येक जीव अपने मनः कर्म, चेतना और काय-वाक् का परिणाम है। प्राणियों का सामुदायिक कर्म संवर्त्त-कल्पों के अनन्तर लोक का विवर्त्तन करता है। कर्म ही 'गृहकारक' है। कर्म और उसके फल का निषेध करना मिथ्यादृष्टि है। परलोक का अपवाद करना और औपपादुक सत्वों के अस्तित्व का निषेध करना मिथ्यादृष्टि है। प्रत्येक सत्व अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी है, संसरण के संबंध में बौद्धों का यह सिद्धांत है।. . .

उपनिषद् के अनुसार, आत्मा नित्य और लोकोत्तर है। बौद्ध धर्म आत्मा का प्रतिषेध करता है।. ... यह बौद्ध धर्म की विचित्रता है कि वह आगम कर्म और कर्मफल को स्वीकार करता है, किन्तु कारक का प्रतिषेध करता है।(पृ० 284-286)

बौद्ध धर्म ईश्वर की सत्ता का इन्कार करता है। वह इन चार सत्यों को प्रमुखता देता है—दुख, दुख समुदय, दुख निरोध और दुख निरोध मार्ग। हिन्दू धर्म में ऐसा नहीं है। वह ईश्वरवादी और अवतारवादी धर्म है। बौद्ध धर्म आत्मा को नहीं मानता, जबकि हिन्दू धर्म आत्मा को अजर-अमर बताता है। बौद्ध धर्म में केवल मानव योनि में पुनर्जन्म का प्रावधान है और न ही वह कर्मों को पूर्व जन्मों का फल मानता है। उसकी दृष्टि में जीव-जगत पूर्व जन्मों का प्रतिफल नहीं है।

तथागत बुद्ध ने कहा है—"इस शरीर के बनाने वाले को ढूंढ़ने में मुझे अनेक जन्म लेने पड़े, क्योंकि उसका पता न पाया। और बार-बार जन्म लेना दुखदायी है। किन्तु हे शरीरकर्त्ता! अब तुझे देख लिया है। तू अब इस शरीर को फिर नहीं बना पाएगा। शरीर की तमाम हड्डियां टूट गई हैं, शहतीर टूट गई है। चित्त निर्वाण के समीप पहुंचकर सारी वासनाओं को नष्ट कर चुका है।"

(धम्मपद 153, 154)

'जातक कथा' में तथागत बुद्ध के 550 जन्मों की कथाएं आई हैं। बौद्ध धर्म में स्वर्ग, नरक का स्पष्ट उल्लेख है। हिन्दू धर्म में भी यह धारणा मिलती है, पर साथ ही पशु, पक्षी, पेड़-पौधों आदि के रूप में जन्म लेने का आवागमनीय सिद्धांत इतना उतारा गया है कि स्वर्ग, नरक की कल्पना दब-सी जाती है। तथागत बुद्ध का कथन है—

"अच्छा आदमी इस दुनिया में भी ख़ुश रहता है और परलोक में भी ख़ुश रहता है। उसे दोनों लोकों का सुख मिलता है।" (धम्मपद, 18)

"कितने ही लोग फिर जन्म लेते हैं। पापी नरक को जाते हैं, सत्कर्मी स्वर्ग को जाते हैं। जो सांसारिक बाधाओं से मुक्त हैं, वे निर्वाण पद पाते हैं।"

(धम्मपद, 126)

'बौद्ध धर्म दर्शन' में है—

"जो दुख को, दुखायतन को तथा दुखानुषक्त को देखता है कि यह सब दुख है (सर्व मिदं दुःखमिति पश्यति), यह दुख की परीज्ञा करता है। परिज्ञात दुख प्रहीण होता है। इस प्रकार, वह दोषों को और कर्म को दुख-हेतु के रूप में देखता है तथा दोषों का प्रहाण करता है। दोषों के प्रहीण होने पर पुनर्जन्म के लिए प्रवृत्ति नहीं होती।" (पृ० 222)

बौद्ध ग्रन्थ 'मिलिन्द प्रश्न' में बताया गया है कि मानव का मानव के रूप में पुनर्जन्म किस प्रकार होता है। बौद्ध धर्मानुसार, जब व्यक्ति की मृत्यु होती है, तब इस शरीर से निकलकर दूसरा जन्म धारण करने वाली कोई आत्मा जैसी वस्तु नहीं है। जब मृत्यु होती है, तब यहां के पंचस्कन्ध यहीं रह जाते हैं और कर्म के कारण दूसरी प्रतिसन्धि हो जाती है। 'मिलिन्द प्रश्न' में इसे इस प्रकार समझाया गया है—

(तथागत बुद्ध ने कहा :) 'भन्ते! ऐसा कोई जीव है जो इस शरीर से निकलकर दूसरे में प्रवेश करता है?'

'नहीं, महाराज।'

'भन्ते! यदि इस शरीर से निकलकर दूसरे शरीर में जाने वाला कोई नहीं है, तब तो वह अपने पाप कर्मों से मुक्त हो गया?'

'हां, महाराज! यदि उसका फिर भी जन्म नहीं हो तो अवश्य वह अपने पाप-कर्मों से मुक्त हो गया और यदि फिर भी वह जन्म ग्रहण करे तो मुक्त नहीं हुआ। जैसे— महाराज, यदि कोई आदमी किसी दूसरे का आम चुरा ले तो दंड का भागी होगा या नहीं?'

'हां, भन्ते ! होगा।'

'महाराज, उस आम को तो उसने रोपा नहीं था जिसे उसने लिया, फिर दण्ड का भागी कैसे होगा?'

'भन्ते, उसके रोपे हुए आम से ही यह भी उत्पन्न हुआ, इसलिए वह दण्ड का भागी होगा।'

'महाराज, इसी प्रकार एक पुरुष इस शरीर से अच्छे और बुरे कर्मों को करता है। उन कर्मों के प्रभाव से दूसरा शरीर जन्म लेता है, इसलिए वह अपने पाप-कर्म से मुक्त नहीं हुआ। जैसे—महाराज, कोई एक बत्ती से दूसरी बत्ती जला ले तो क्या यहां एक बत्ती दूसरी से संक्रमण करती है।'

'नहीं, भन्ते।'

'महाराज, इसी तरह बिना एक शरीर से दूसरे शरीर में कुछ गए ही पुनर्जन्म होता है। महाराज, क्या आपको कोई श्लोक याद है, जिसे आपने अपने गुरु के मुख से सीखा था?'

'हां, याद है।'

'महाराज, क्या वह श्लोक आचार्य के मुख से निकलकर आपमें घुस गया है?'

'नहीं, भन्ते।'

'महाराज, इसी तरह बिना एक शरीर से दूसरे शरीर में कुछ गए हुए पुनर्जन्म होता है।' (पृ० 89, 90)

कर्म और पुनर्जन्म का तारतम्य तब तक बना रहता है, जब तक कि निर्वाण का साक्षात्कार न हो जाए। किन्तु जब निर्वाण का साक्षात्कार हो जाता है, तब कर्म और पुनर्जन्म रुक जाते हैं। जब अविद्या नष्ट हो जाती है, तब कर्म का क्षय हो जाता है और संस्कारों का होना बन्द हो जाता है और फिर पुनर्जन्म नहीं होता। निर्वाण बौद्ध धर्म का अंतिम लक्ष्य है। यह वह स्थिति है जो परम शान्त और रोग-शोक से रहित है (इतिवृत्तक, पृ० 36)। यह परम सुख की अवस्था है। [धम्मपद, 15, 8 (नित्वन परमं सुखं)] उसे प्राप्त कर परम शान्ति होती है (थेरी गाथा, 15)। निर्वाण प्राप्त कर लेने से आवागमन रुक जाता है और जन्म-मृत्यु नहीं होते। तब यह लोक और परलोक भी नहीं होता। यहीं दुखों का अन्त है (उदान पृ० 111)। बौद्ध धर्म में निर्वाण के बाद परिनिर्वाण की भी व्यवस्था है। किन्तु यह निर्वाण, मोक्ष की प्राप्ति आसान नहीं। नारियों के लिए तो अत्यंत कठिन है।

श्रीरामधारी सिंह 'दिनकर' लिखते हैं—

"केवल बौद्ध नहीं, जैन धर्म का भी यही विश्वास था कि मोक्ष सन्यास के बाद ही मिल सकता है। यही कारण है कि श्वेताम्बर-पन्थ में तो नारियां भिक्षुणी हो सकती थीं, किन्तु दिगम्बर-पन्थवालों ने साफ़ घोषणा कर दी थी कि मुक्ति नारियों के लिए नहीं है। नारियों को चाहिए कि वे सीमित धर्म का पालन करें, जिससे अगले जन्मों में वे पुरुष का जन्म ग्रहण कर सकें, क्योंकि मोक्ष-लाभ के समीप आने पर, उन्हें पुरुष होकर जन्म लेना ही पड़ेगा। असली बात यह थी कि दिगम्बर-पन्थ में भिक्षुणी को नंगा रहना पड़ता, इस बात को दिगम्बर साधु भी अनुचित समझते थे। किन्तु, मुक्ति संन्यास से ही मिलती है, यह उपदेश बड़ा ही प्रबल था।" (संस्कृति के चार अध्याय, पृ० 181)

सिख धर्म में आवागमन

भाई गुरुदास जी कहते हैं—

पंच तत पंचीसि गुनि सत्रु मित्र मिलि देहि बणाई।
खाणी बाणी चलितु करि आवागउणु चरित दिखाई।
चउरासीह लख जोनि उपाई॥ २ ॥

(जगत उतपत्ती, वारां ज्ञानरत्नावली, गुरुमुखी-नागरी लिपि, पउड़ी 2)

इन पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं—

"पांच तत्त्व और पचीस परस्पर विरोधी (शत्रु-मित्र) गुणों को मिलाकर (मानव) देह की रचना की गई। चारों उत्पत्ति-स्रोतों (अंडज, जेरज, स्वेदज, उदभिद), चारों वाणियों (परा, पश्यन्ति, मध्यमा, बैखरी) का अन्तर्भुक्त कर आवागमन का प्रपंच बना दिखाया। इस प्रकार चौरासी लाख योनिज प्राणियों की उत्पत्ति हो गई॥२॥"

(हिन्दी अनुवादक : डॉ० जोध सिंह)

चौरासी लाख योनियों में मानव-योनि में जन्म लेना उत्तम है ('चउरासीह लख जोनि विचि उतमु जनमु सु माणसि देह'—भाई गुरुदास जी)।

भाई गुरुदास जी कहते हैं कि गुरु के बिना आवागमन से छुटकारा नहीं मिल सकता है। पउड़ी 18 इस प्रकार है—

कितड़े अंन्हे आखीअनि केतड़िआँ ही दिसनि काणे।
केतड़िआँ चुन्हे फिरनि कितड़े रतीआने उकताणे।
कितड़े नकटे गुणगुणे कितड़े बोले बुचे लाणे।
केतड़िआँ गिल्हड़ गली अंगि रसउली वेणि विहाणे।
टुंडे बाँडे केतड़े गंजे लुंजे कोढ़ी जाणे।
कितड़े लूले पिंगुले कितड़े कुब्बे होइ कुड़ाणे।
कितड़े खुसरे हीजड़े केतड़िआ गुंगे तुतलाणे।
गुर पूरे विणु आवण जाणे॥ १८ ॥

(वारां ज्ञानरत्नावली, गुरुमुखी-नागरी लिपि)

भावार्थः "कितने ही अंधे हैं और कितने ही काने दिखाई पड़ते हैं। कितने चौंधी आँखों वाले और कितने रतौंधी वाले हैं। कितने नकटे, नाक में बोलने वाले, बहरे और बिना कानों के हैं। कितनों के गले सूजे हुए और कइयों के अंगों

में रसौलियाँ हैं। कितने लूले, गंजे, बिना हाथ के और कोढ़ी हैं। कितने लूले, कुबड़े और पिंगले हैं जो दु:ख में रह रहे हैं। कितने हिजड़े और कितने ही गूंगे और तुतलाने वाले हैं। पूरे गुरु के बिना ये सब आवागमन के चक्र में पड़े रहेंगे।" (अनु० : डॉ० जोध सिंह)

भाई गुरुदास जी के अनुसार, गुरु पूर्णब्रह्म की प्रतिमूर्ति जो कि अव्यक्त और अविनाशी है। गुरु-शब्द (शरीर नहीं) परब्रह्म है जो सत्संगति में निवास करता है। जो सच्चे गुरु को देख लेता है, वह मानो परमात्मा को देख लेता है।

गुरु ग्रन्थ साहिब में है—

इक बिन दूसर सो न चिनार॥

अर्थ : एक परमेश्वर के बिना अन्य किसी को न माने।

प्रान पाकिओ पाहिन कह परसत
कछु कर सिध न आई॥ १ ॥ (शब्द हजारे, पा० 10)

अर्थ : पत्थरों को छू-छू कर हाथ भी थक गए। फिर भी हाथ में कुछ सिद्धि नहीं आई।

एक ईश्वर ही की आराधना और इबादत से ही आवागमन का चक्कर समाप्त हो सकता है और इन्सान को मुक्ति मिल जाती है। गुरुनानक जी कहते हैं—

प्रभु विणु दूजा को नहीं. . .
मंधिरि प्रभु आराधणा
बहुड़ि न जनमड़ीआह॥ १० ॥

(बारहमाहा मांझ)

अर्थ : एक प्रभु के सिवा दूसरा और कोई नहीं. . . जिन्होंने मालिक को आराधा है, वे (आत्माएं) जन्म में नहीं पड़ी हैं।

प्रभु-स्मरण के बिना दु:खों का अंत नहीं और न ही बार-बार जन्म लेने के घोर कष्ट का ही अंत हो सकता है। गुरुनानक जी का कथन है—

कहु नानक हरि भजु मना।
अंति सहाई होई॥ ३२ ॥
जनम जनम भरमत फिरिओ
मिटिओ न जम को त्रासु
कहु नानक हरि भजु मना (गुरु ग्रन्थ साहिब, सलोक महला 9)

अर्थ : मना ! हरि को याद कर, जो तेरी अंत सहायता करेगा। जन्मों जन्मों में

भ्रमता रहा, यमों का डर न गया। मना ! हरि को याद कर।

बिलावलु महला 1 में है—

मनु मदंरु तनु वेस कलंदरु
घट ही तीरथि नावा॥
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है
बाहुड़ि जनमि न आवा॥ १ ॥

(गुरु ग्रन्थ साहिब)

अर्थ : मन मंदिर है और शरीर कलंदरों का वेष है, मैं मन मन्दिर में ही तीर्थ स्नान करता हूं। एक गुरु उपदेश मेरे प्राणों में वास करता है। इस करके मैं पुनः जन्म में नहीं आऊंगा। (टीकाकार : ज्ञानी नारायण सिंह)

– –

स्वामी दयानन्द सरस्वती और आवागमनीय पुनर्जन्म

पुराणों को प्रमाण न मानने की शिक्षा देनेवाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ब्रह्म पुराण के स्वनिर्मित श्लोक को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं[1], जिसमें नरक की कल्पना की गई है। यह श्लोकांश महर्षि के अर्थ-निरूपण के साथ यहां प्रस्तुत किया जा रहा है—

सर्वे ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम्।

अर्थ : उस रजस्वला को देख के उसकी माता, पिता, भाई, मामा और बहिन सब नरक को जाते हैं।

(सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्थसमुल्लासः, पृ० 56, संस्करण : अप्रैल 1989)

इसी समुल्लास में परलोक के सुखार्थ उपाय मनुस्मृति के श्लोकों के द्वारा बताए गए हैं (पृष्ठ 73)। दयानंदजी ने 'परलोक' शब्द लिखने के बाद 'अर्थात् परजन्म' लिखा है, पुनर्जन्म नहीं। मनुस्मृति के जो श्लोक उन्होंने उद्धरित किए हैं, वे परलोक की सफलता पर केन्द्रित हैं। हिन्दू धर्मग्रन्थ मानव योनि को उत्तमोत्तम बताते हैं और मनुष्य योनि पाने को 'बड़ा भाग्य' ठहराते हैं। फिर आखिर किस 'परजन्म' की बात हो रही है? यह परजन्म मनुष्य का पारलौकिक जीवन ही है। वेद और अन्य कुछ धर्मग्रन्थ इसी तथ्य को मान्यता देते हैं, आवागमनीय पुनर्जन्म को नहीं।

पारलौकिक जीवन की सफलता ही मोक्ष है। इसकी प्राप्ति इस लोक में ईश्वर के बताए हुए मार्ग पर चलकर ही हो सकती है। अज्ञानता और अविद्या के त्याग से ही सत्य-मार्ग पर चलने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है।

स्वामी दयानंद सरस्वती अपनी महत्त्वपूर्ण कृति 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के 'मुक्तिविषयः' शीर्षक अध्याय में गोतमाचार्य्य के कहे हुए न्यायशास्त्र के प्रमाण का उल्लेख करते हुए लिखते हैं—"जब मिथ्याज्ञान अर्थात् अविद्या नष्ट हो जाती है, तब जीव के सब दोष नष्ट हो जाते हैं। उसके पीछे प्रवृत्ति अर्थात् अधर्म, अन्याय, विषयासक्ति आदि की वासना सब दूर हो जाती है। उसके नाश होने से

1. चतुर्दश समुल्लासः के समीक्षा-क्रम 8 में भी स्वामी दयानन्द जी पुराण-वचन को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

(जन्म) अर्थात् फिर जन्म नहीं होता। उसके न होने से सब दु:खों का अत्यन्त अभाव हो जाता है। दु:खों के अभाव से पूर्वोक्त परमानन्द मोक्ष में अर्थात् सब दिन के लिये परमात्मा के साथ आनन्द ही आनन्द भोगने को बाक़ी रह जाता है। इसी का नाम 'मोक्ष' है ॥१ ॥" ('दयानंद ग्रंथमाला', द्वितीय खंड, पृ० 441)

"जब विद्या से अविद्या की निवृत्ति होती है, तब बन्धन से छूट के जीव मुक्ति को प्राप्त होता है ॥३ ॥" (उक्त, पृ० 439)

स्वामी दयानन्द जी आगे लिखते हैं कि "पूर्व प्रसंग का अभिप्राय यह है कि मोक्ष की इच्छा सब जीवों को करनी चाहिए। (यदन्तरा०) जो कि आत्मा का भी अन्तर्यामी है, उसी को ब्रह्म कहते हैं। और वही अमृत अर्थात् मोक्षस्वरूप है। और जैसे वह सबका अन्तर्यामी है, वैसे उसका अन्तर्यामी कोई भी नहीं, किन्तु वह अपना अन्तर्यामी आप ही है। ऐसे प्रजानाथ परमेश्वर के व्याप्तिस्वरूप सभास्थान को मैं प्राप्त होऊं। और इस संसार में जो पूर्ण विद्वान ब्राह्मण हैं, उनके बीच (यश:) अर्थात कीर्ति को प्राप्त होऊं, तथा (राज्ञां) क्षत्रियों (विशां) अर्थात् व्यवहार में चतुर लोगों के बीच यशस्वी होऊं। हे परमेश्वर ! मैं कीर्तियों का भी कीर्तिरूप होके आपको प्राप्त हुआ चाहता हूं। आप भी कृपा करके मुझको सदा अपने समीप रखिए ॥७ ॥" (उक्त, पृ० 444)

स्वामी दयानन्द जी ने जाने-अनजाने मोक्ष को भी वर्ण-व्यवस्था से जोड़ दिया है,। वे एक ओर यह कहते हैं कि मुक्त जीव की परम कामना परमेश्वर के सभास्थान और उसके सदा समीप रहने की है। दूसरी ओर स्वामी जी ने छान्दोग्य उपनिषद के एक श्लोक (य यते ब्रह्मलोके...) का भाषार्थ बताते हुए यहां तक कह जाते हैं : "जो मुक्त पुरुष होते हैं, वे ब्रह्मलोक अर्थात् परमेश्वर को प्राप्त होके, और सबके आत्मरूप परमेश्वर की उपासना करते हुए, उसी के आश्रय से रहते हैं। इसी कारण से उनका आना-जाना सब लोकलोकान्तरों में होता है, उनके लिये कहीं रुकावट नहीं रहती, और उनके सब काम पूर्ण हो जाते हैं, कोई काम अपूर्ण नहीं रहता।" (उक्त, पृ० 444)

स्वामी जी के इस कथन से यह अर्थ स्पष्ट रूप से निकलता है कि मुक्त जीव[1] का लोकलोकान्तरों में आना-जाना लगा रहता है और वह विषयासक्ति आदि बंधनों से मुक्त नहीं हो पाता। स्वामी जी इसी पृष्ठ पर बताते हैं कि मनुष्य

1. स्वामीजी ने बार-बार मुक्त पुरुष लिखा है, जो सन्देहजनक शब्द प्रतीत होता है। क्या स्त्री मुक्ति की अधिकारी नहीं है ?

को परमेश्वर के सान्निध्य का परम आकांक्षी होना चाहिए और मुक्त पुरुष (स्वर्ग लोकं) सुखस्वरूप ब्रह्म लोक को प्राप्त होते हैं। यह विरोधाभास है कि मुक्ति के बाद भी जीवात्मा भटकती रहती है और उसकी सांसारिक कार्यों से संलग्नता तक हो सकती है, क्योंकि हर मानव-आत्मा स्वाभाविक रूप से अपनी संतति की भलाई और उन्नति का इच्छुक होगी ही एवं अपने सब काम पूर्ण कराएगी। इस पर विस्मय यह कि एक ओर मृतक की आत्मा की शांति के लिए धार्मिक-कृत्य (श्राद्ध) का आर्य समाज के ग्रंथ इन्कार करते हैं, दूसरी ओर आत्मा को बुलाने की कथित विद्या का समर्थन भी इनके यहां पाया जाता है। यह कहना कि मुक्तात्मा को बुलाया जाता है, अविद्या की बात है। जब आत्मा की मुक्ति हो गई और सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उसे मुक्त कर दिया, तो क्या कोई उसे अपने नियंत्रण में ले सकता है? कदापि नहीं। फिर यदि कोई कहे (जैसा कि स्वामी दयानंद जी कहते हैं) कि मुक्त पुरुष परमेश्वर को प्राप्त होके और उसकी उपासना करने के कारण लोकलोकान्तरों में आते-जाते हैं, (मुक्त जीव आनन्दपूर्वक स्वतंत्र विचरता है— सत्यार्थ प्रकाश, 9वां समुल्लास, पृ० 170) सर्वथा अज्ञानपूर्ण और अविद्या की बात है, मानो मुक्त पुरुष को ऐसी मुक्ति मिली कि परमेश्वर का प्रताप पा गया। यह नितांत भ्रामक तथ्य-निरूपण है, जिसका यथार्थ से कोई संबंध नहीं। प्रकृति, जीव और परमात्मा को एक समान ठहराना (सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास 8, पृ० 148) किसी भी दृष्टि और औचित्य से सही नहीं है।

लेकिन स्वामी दयानन्द जी के पास विरोधाभासी तथ्यों का अभाव नहीं। लिखते हैं : "सब मनुष्यों को यह जानना चाहिए कि वही परमेश्वर हमारा बन्धु अर्थात् दुःखों का नाश करने वाला, सब सुखों का उत्पन्न और पालन करने वाला है। तथा वही सब कामों को पूर्ण करता और सब लोकों को जानने वाला है, कि जिसमें देवं अर्थात् विद्वान लोग मोक्ष को प्राप्त होके सदा आनन्द में रहते हैं। और वे तीसरे धाम अर्थात शुद्ध सत्त्व से सहित होके सर्वोत्तम सुख में सदा स्वच्छन्दता से रमण करते हैं ॥२॥ (दयानन्द ग्रंथमाला, द्वितीय खंड, पृ० 446)

ज्ञात हुआ कि 'देव' ही मोक्ष के अधिकारी हैं और उन्हें परमेश्वर के सान्निध्य में रहने ही का नहीं, 'सब लोकों' में सदा आनन्द से, स्वच्छंदता से रमण करने का अवसर मिला है। इस कथन से स्पष्ट है कि मुक्त जीवात्मा सदा आनन्दित रहती है। उसे सदा आनन्दित होना ही चाहिए, लेकिन स्वामीजी के अनुसार शाश्वत मुक्ति नहीं होती और यह आनन्द सदा के लिए नहीं है। 'सत्यार्थ प्रकाश' (नवम् समुल्लासः) में वे लिखते हैं : "वे मुक्त जीव मुक्ति में

प्राप्त होके ब्रह्म में आनन्द को तब तक भोग के पुनः महाकल्प के पश्चात् मुक्ति सुख को छोड़ के संसार में आते हैं. . . . यह बात कभी नहीं हो सकती क्योंकि प्रथम तो जीव का सामर्थ्य शरीरादि पदार्थ और साधन परिमित है, पुनः उसका फल अनन्त कैसे हो सकता है? अनन्त आनन्द को भोगनें का असीम सामर्थ्य, कर्म और साधन जीवों में नहीं, इसलिए अनन्त सुख नहीं भोग सकते।"

(संस्करण अप्रैल 1989, पृ० 172, 173)

इन भ्रमोत्पादक वाक्यों से भ्रमों को सुगमतापूर्वक हटाया जा सकता है। सामर्थ्य आदि की बात हास्यस्पद, अनौचित्यपूर्ण और अर्थहीन है। मुक्ति या मोक्ष यदि सदा के लिए न हो, तो कुछ समयावधि की रिहाई का कोई अर्थ नहीं रह जाता। ऐसे में मुक्ति, मुक्ति न रही और यह संसार नित्य हो गया। दयानन्द जी ने सत्व, रज और तम—इन तीन तत्वों को शाश्वत माना है और इनसे मनुष्यों का पैदा होना बताया है। जन्म-मरण की अनवरत शृंखला की धारणा बुद्धि और विवेक से परे है। यह मिथ्या-तथ्य है कि जो एक बार जन्म लेग़ा, वह बार-बार जन्म ले।

वास्तव में यह चीज़ व्यावहारिकता का रूप धारण करती रहती है कि एक सत्य को छिपाने के लिए दर्जनों झूठ बोलने पड़ते हैं। पुनरुज्जीवन के यथार्थ और उसकी अटल मान्यता पर परदा डालने के लिए जो-जो तथ्य गढ़े गए, उतना ही यह उलझाव का शिकार होता गया। फिर भी सत्य छिप न सका। सत्य छिपाने के लिए की गई कोशिशें बेकार गईं।

आर्य समाज के संस्थापक ने 'ऋग्वेदादि- भाष्यभूमिका के पुनर्जन्म विषयः अध्याय में पुनर्जन्म के समर्थन में ऋग्वेद के 10वें मंडल के दो मंत्र (59 : 6, 7) प्रस्तुत किए हैं। इनमें से 7वां मंत्र वही है, जिसका उल्लेख डॉ० सत्यदेव वर्मा ने आवागमनीय पुनर्जन्म नहीं, पुनरुज्जीवन (एक बार के जन्म) के समर्थन में किया है। दोनों मंत्र निम्नलिखित हैं—

असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्।
ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया न स्वस्ति॥६॥
पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नस्सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां या स्वस्तिः॥७॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इन मंत्रों का भावार्थ इन शब्दों में किया है : "हे सुखदायक परमेश्वर! आप कृपा करके पुनर्जन्म में हमारे बीच उत्तम नेत्र आदि सब इन्द्रियां स्थापन कीजिये। तथा प्राण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, बल, पराक्रम आदि युक्त शरीर पुनर्जन्म में कीजिए। हे जगदीश्वर! इस संसार अर्थात्

इस जन्म और परजन्म में हम लोग उत्तम-उत्तम भोगों को प्राप्त हों। तथा हे भगवन्! आपकी कृपा से सूर्य्यलोक, प्राण और आपको विज्ञान तथा प्रेम से सदा देखते रहें। हे अनुमते=सबको मान देनेहारे! सब जन्मों में हम लोगों को सुखी रखिये, जिससे हम लोगों को कल्याण हो।

हे सर्वशक्तिमान्! आपके अनुग्रह से हमारे लिये बारंबार पृथिवी प्राण को, प्रकाश चक्षु को, और अन्तरिक्ष स्थानादि अवकाशों को देते रहें। पुनर्जन्म में सोम अर्थात् औषधियों का रस हमको उत्तम शरीर देने में अनुकूल रहे। तथा पुष्टि करनेवाला परमेश्वर कृपा करके सब जन्मों में हमको सब दुःख निवारण करनेवाली पथ्यरूप स्वस्ति को देवे॥"[1] (दयानंद ग्रन्थमाला, पृ० 462)

अब आइए अवलोकन करें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रकाशित 'ऋग्वेद हिन्दी भाष्य' में प्रकाशित इन मंत्रों के 'पदार्थः' और 'भावार्थः' का। वैद्यनाथ शास्त्री जी इनका अर्थ-निरूपण करते हुए लिखते हैं—

पदार्थः —हे प्राण विद्याविद्! हमारे शरीर में फिर दृष्टि फिर प्राण को धारण करा, हमें भोगों को भोगने की शक्ति दो, लम्बे समय तक उदय को प्राप्त होते हुए सूर्य को देखें, हे अनुमति देने वाले! हमें सुख से सुखी कर।

भावार्थः —हे प्राण विद्याविद्! हमारे इस शरीर में आप पुनः दृष्टि और प्राणशक्ति को धारण कराइये। हमें भोगों को भोगने की शक्ति दें। हम चिरकाल तक उदय को प्राप्त होते हुए सूर्य को देखें। हे उत्तममति वाले! हमें सुख से सुखी कर।

पदार्थः —मरने के पश्चात् जन्मान्तर में देवी भूमि हमें फिर प्राणशक्ति देती है, द्युलोक फिर प्राणशक्ति देते हैं और फिर प्राणशक्ति देता है अन्तरिक्ष भी। परमेश्वर शरीर फिर देता है, सबका पोषक वायु हमें पुष्टि दे, जो वाग् हमें वाणी प्रदान करती है।

भावार्थः —मरणान्तर में पुनः जन्म धारण करते समय भूमि, द्युलोक और अन्तरिक्ष प्राणशक्ति देते हैं और वाक्शक्ति वाक् देती है और भगवान इन सबसे युक्त शरीर को देता है।" (पृ० 703, 704)

ऋग्वेद के उक्त मंत्रों के जो भाषार्थ और भावार्थ आर्य समाज के संस्थापक और एक आर्यसमाजी विद्वान ने किए हैं, उनमें समानता नहीं है। दयानन्द जी ने जहां भाषार्थ में मंत्रों को आवागमनीय पुनर्जन्म से जोड़ा है, वहीं वैद्यनाथ जी ने

1. वाक्यों के बीच आए संस्कृत शब्दों को यहां नहीं लिखा गया है।

पुनर्जीवन की ओर इंगित किया है। वेदों में आवागमन और पुनर्जन्म है ही नहीं, इसलिए भाषार्थ में व्यतिक्रम भी पाया जाता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के भाषार्थों में समानता नहीं पाई जाती। कभी एक ही मंत्र के भिन्न-भिन्न अर्थ-निरूपण उनके द्वारा किए गए हैं। यजुर्वेद के एक मंत्र (4 : 15) का भावार्थ एक स्थान पर 'परलोक के सुखों' से संबद्ध है तो दूसरे स्थान पर इहलौकिक जीवन से। मंत्र के अन्य तथ्यों में काफ़ी अन्तर पाया जाता है। आइए ज़रा इसका भी अवलोकन करें—

"यजुर्वेद भाषा भाष्य" में इस मंत्र का पदार्थः और भावार्थः इस प्रकार दिया गया है :

पदार्थः —"जिसके सम्बन्ध वा कृपा से मुझको जो विज्ञानसाधक मन, उमर फिर-फिर प्राप्त होता, मुझको शरीर का आधार प्राण फिर प्राप्त होता, सबमें व्यापक, सबके भीतर की सब बातों को जानने वाले परमात्मा का विज्ञान प्राप्त होता, मुझको देखने के लिये नेत्र फिर प्राप्त होते और शब्द को ग्रहण करने वाले कान प्राप्त होते हैं वह हिंसा करने अयोग्य शरीर वा आत्मा की रक्षा करने और शरीर को प्राप्त होने वाला अग्नि वा विश्व को प्राप्त होने वाला परमेश्वर हम लोगों को निन्दित पाप से उत्पन्न हुए दुःख वा दुष्ट कर्मों से पालन करता है।

भावार्थः —इस मन्त्र में श्लेषालंकार है। जब जीव सोने वा मरण आदि व्यवहार को प्राप्त होते हैं, तब जो-जो मन आदि इन्द्रिय नाश हुए, के समान होकर फिर जगने वा जन्मान्तर में जिन कार्य्य करने के साधनों को प्राप्त होते हैं, वे इन्द्रिय जिस विद्युत अग्नि के संबंध में परमेश्वर की सत्ता वा व्यवस्था से शरीर वाले होकर कार्य्य करने को समर्थ होते हैं। मनुष्यों को योग्य है कि जो वह अच्छे प्रकार सेवन किया हुआ जाठराग्नि सबकी रक्षा करता हुआ और जो उपासना किया हुआ जगदीश्वर पापरूप कर्मों से अलग कर धर्म में प्रवृत्त कर बारम्बार मनुष्यजन्म को प्राप्त कराकर दुष्टाचार वा दुःखों से पृथक करके इस लोक वा परलोक के सुखों को प्राप्त कराता है, वह क्यों न उपयुक्त और उपास्य होना चाहिए।" (यजुर्वेद भाषाभाष्य, पृ० 119)

'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में जो उक्त मंत्र का भाषार्थ इस प्रकार है : "हे सर्वज्ञ ईश्वर! जब-जब हम जन्म लेवें, तब-तब हमको शुद्ध मन, पूर्ण आयु, अरोग्यता, प्राण, कुशलतायुक्त जीवात्मा, उत्तम चक्षु और श्रोत्र प्राप्त हों। जो विश्व में विराजमान ईश्वर है, वह सब जन्मों में हमारे शरीरों का पालन करे। सब पापों के नाश करनेवाले आप बुरे कामों और सब दुःखों से पुनर्जन्म में अलग रक्खें।"

(दयानन्द ग्रंथमाला, भाग 2, पृ० 463)

यह तो आर्य समाज के विद्वान ही बता सकते हैं कि एक ही मंत्र के अर्थापन में स्वामी दयानन्द जी की रचनाओं में इतना अन्तर क्यों हैं। यह वास्तविकता है कि यह पुनर्जीवन से संबंधित मंत्र है, जैसा कि डॉ० सत्यदेव वर्मा का मत है और जिसकी पुष्टि पं० सातवलेकर की मंत्र-व्याख्या से भी होती है।

आर्य समाज के संस्थापक महोदय ठीक कहते हैं कि "न्याय उसको कहते हैं कि जो जैसा कर्म करे, उसको वैसा ही फल दिया जाय।" (दयानंद ग्रंथमाला, भाग 2, वेदोपत्तिविषयः, पृ० 257) स्वामी दयानंद के अनुसार प्रथम सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा—इन मनुष्य-देहधारी ऋषियों के द्वारा वेदों का प्रकाश किया (ऋग्वेदभाष्यभूमिका, पृ० 19)। 'सत्यार्थ प्रकाश' में वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि "प्रथम सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा इन मानव ऋषियों की आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया (संस्करण : अप्रैल 1989, पृ० 144)।"[1]

दयानन्द जी कहते हैं कि इन चार पुरुषों का ऐसा पूर्वपुण्य था कि उनके हृदय में वेदों का प्रकाश किया गया। लेकिन जब ये ऋषि सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुए थे, तो उनका पूर्व पुण्य कहां से आया? इसका उत्तर दयानंद जी इस प्रकार देते हैं : "जीव, जीवों के कर्म और स्थूल जगत् ये तीनों अनादि हैं, जीव और कारणजगत् स्वरूप से अनादि हैं, कर्म और स्थूल कार्य्यजगत् प्रवाह से अनादि हैं। इसकी व्याख्या प्रमाणपूर्वक आगे लिखी जाएगी।"

(दयानंद ग्रंथमाला, भाग 2, पृ० 257)

इस प्रकार का अनादिवाद वास्तव में मनुष्य को बौद्धिक धुंधवाद के गहरे खड्ड में डाल देता है, जहां से वह वास्तविकता का अवलोकन नहीं कर सकता। फिर जिस प्रमाणपूर्वक व्याख्या का वादा स्वामी जी ने किया है, वह आगे कहीं नहीं मिलती। ऐसे में उनके इस कथन पर सहज भी सवालिया निशान लग जाता है कि "पाप पुण्यों के बिना उत्तम मध्यम और नीच शरीर तथा बुद्ध्यादि पदार्थ कभी नहीं मिल सकते।" (पुनर्जन्म विषयः, ऋभामू)

---

1. वेद तो चार हैं, पर शतपथ ब्राह्मण (11.5.8.1-4) में है कि अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद और सूर्य से सामवेद और फिर उन तीनों वेदों से क्रमशः तीन व्याहृतियां—भूः, भुवः, स्वः—उत्पन्न हुईं। इसमें न ही अंगिरा का उल्लेख है और न ही अथर्ववेद का। मनुस्मृति (1 : 23) में भी इसी प्रकार का तथ्य है। वेदों में, ब्राह्मण ग्रंथों में अथवा अन्यत्र कहीं भी चार ऋषियों से चार वेदों के प्रकाशन का उल्लेख नहीं पाया जाता।

दयानन्द जी के कथनों में वैचारिक स्थिरता नहीं मिलती। कभी कुछ कह दिया, तो कभी कुछ। अभी उक्त पंक्तियों में हम देख ही चुके हैं कि स्वामी जी सृष्टि के आदि चार ऋषियों के पूर्व पुण्य कहां से आये, यह नहीं बता पाए। बस कह दिया कि "इसकी व्याख्या प्रमाणपूर्वक आगे लिखी जायगी।"

इतना ही नहीं, उन्होंने अनेक तथ्यों को उलझा दिया है। एक ओर तो वे पाप-पुण्य का प्रारंभ वेद के ज्ञान से मानते हैं, जिसके बारे में उनका कहना है कि मानव-जीवन के पांच वर्ष पश्चात् अस्तित्व में आया, दूसरी ओर वेदों को प्रकाश में लाने वाले चार ऋषियों को पवित्रात्मा और उनकी श्रेष्ठता का आधार पूर्व पुण्य बताया। यह भी गंभीर क़िस्म का विरोधाभास है।

आइए ज़रा इस तथ्य को विस्तार से जानें। स्वामी जी ने अपने भाषणों के संग्रह 'उपदेश मंजरी' के 'जन्म' शीर्षक के सातवें भाषण में जो कुछ कहा है, वह समस्यावर्धन करता है। उन्होंने अपने भाषण में उपनिषदों को आधार बनाया है। स्वामी जी के अनुसार, संसार के प्रारंभ में परमात्मा ने बहुत से मनुष्यों और पशु-पक्षियों को जन्म दिया। परन्तु उनमें अब जैसा ज्ञान और कर्म के कारण जो अन्तर है वह न था। सभी मनुष्य एक समान थे। सभी शरीर सभी मनुष्यों के भोग के लिए थे, अर्थात् जो पुरुष जिस स्त्री से चाहता, संबंध स्थापित करता था। उन पर कोई नियम और बंधन न था। पांच वर्ष तक मनुष्य की यही अवस्था रही। फिर परमात्मा ने मनुष्य को वेद का ज्ञान दिया। अब वेद के ज्ञान से अच्छे-बुरे का ज्ञान हुआ और कर्मों का अन्तर होता गया। पाप-पुण्य के अन्तर्गत कर्म होने लगे। मनुष्य पाप के कारण पशुओं में जन्म लेने लगे और पाप छूटने पर फिर मनुष्य के शरीर में आए।[1]

स्वामी जी के इस वक्तव्य से जहां यह मालूम हुआ कि जीव और संसार नित्य नहीं है[2], बल्कि यह संसार ही पहला संसार है और मानव का इसमें पहला जीवन है। मानव जीवन के आरंभ के साथ ही वेद-ज्ञान नहीं आया और पाप-पुण्य वेद के ज्ञान के बाद प्रारंभ हुआ। फिर आखिर अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को पूर्व पुण्य कैसे मिले? यह विचारणीय प्रश्न है। दूसरी बात यह भी सहज ही सामने आती है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर मानवों को पैदा तो करे, पर उन्हें मार्गदर्शन कराने एवं सीधा मार्ग दिखाने की व्यवस्था न करे, जैसा कि

---

1. यह भाषण जुलाई 1875 ई० में पूना में हुआ था।

2. स्वामी जी अपनी दूसरी पुस्तकों में इनकी नित्यता की बात लिखते हैं।

दयानंद जी कहते हैं, तो स्वयं ईश्वर पर आरोप लगता है। यह नितांत अनुचित है कि ईश्वर ने मानव को शुरुआती वर्षों में पथ-प्रदर्शन की व्यवस्था नहीं की। सच्चाई यह है कि ईश्वर ने मानव-जीवन के प्रारंभ से ही उसने अपनी शिक्षाएं हज़रत आदम (अलै०) के द्वारा ही मानवों तक पहुंचाने की व्यवस्था की। आदम और हव्वा के द्वारा मानव-संतति जारी की और मानवों के पथ-प्रदर्शन हेतु ईश्वर अपने सन्देष्टाओं, नबियों और पैग़म्बरों को भेजता रहा, यहां तक कि यह सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर समाप्त कर दिया गया।

विद्वानों के विचार : एक अनुशीलन

आवागमनीय पुनर्जन्म के समर्थक मनीषियों में पं० माधवाचार्य शास्त्री ही मुझे ऐसे चिन्तक दिखाई पड़े हैं, जिन्होंने इस विषय में इस्लाम का सही दृष्टिकोण पेश किया है। अफ़सोस की बात है कि अन्य मनीषियों ने इससे संबंधित इस्लामी धारणा को तोड़-मरोड़ कर विकृत ढंग से पेश किया है और इसे भी आवागमनीय पुनर्जन्म से जोड़ने की कुचेष्टा की है। यह कुचेष्टा जाने या अनजाने हुई, इस बारे में हम कुछ नहीं कह सकते, पर यह सत्य है कि यहां लेखन-मूल्यों की घोर अवहेलना हुई है।

इलाहाबाद स्थित मनोविज्ञानशाला के अवकाश प्राप्त शोध मनोवैज्ञानिक डॉ० एल.पी. मेहरोत्रा (एम.ए., पीएच.डी.) ने तो हद कर दी। अभी कुछ वर्ष पूर्व 1996 ई० में उनकी 'पुनर्जन्म भी होता है ?' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। उसके पृष्ठ 128 पर वे लिखते हैं—"इस्लाम की धार्मिक पुस्तकों में लिखा है कि अच्छे कर्म करनेवाले व्यक्ति को मरणोपरान्त ख़ुदा के दूत उसे स्वर्ग या जन्नत तक ले जाते हैं, जबकि इसके विपरीत अधर्मी व्यक्तियों को मृत्यु के बाद ख़ुदा के दूत नरक में ढकेल देते हैं। उसके लिए स्वर्ग का द्वार बन्द रहते हैं।" डा० मेहरोत्रा ने इस उद्धरण का कोई प्रमाण नहीं दिया। इस कारण से भी तथ्य-निरूपण में त्रुटि हो गई। इस्लाम की धारणा यह है कि क़ियामत (महाप्रलय) के दिन अल्लाह सारे संसार और उसकी सारी चीज़ों को मिटा देगा। फिर सारे इन्सान पुनर्जीवित किए जाएंगे और अल्लाह उनके कर्मों के अनुसार जन्नत (स्वर्ग) एवं दोज़ख़ (नरक) का निर्णय करेगा। निश्चय ही अच्छे लोग जन्नत में जाएंगे और बुरे जहन्नम (नरक) में।

डॉ० मेहरोत्रा ने हज़रत जलालुद्दीन रूमी की 'मसनवी' के कुछ शेअरों के आधार पर पुनर्जन्म का प्रमाण जुटाया है, पर यह सर्वविदित और सर्वमान्य है कि कविता तो कल्पना की उड़ान होती है। इसके लिए आवश्यक नहीं कि वास्तविकताओं से उसका कोई संबंध हो। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' (15 जून 1998) के दिल्ली संस्करण में भी एक सज्जन ने डॉ० मेहरोत्रा जैसा मंतव्य प्रकट किया है, पर काव्य-रचना के आधार पर यह मत व्यक्त करना अनुचित और हास्यस्पद है। ऐसे में डॉ० मेहरोत्रा का यह कथन नितांत ग़लत और भ्रांतिपूर्ण है कि 'मुस्लिम भी अप्रत्यक्ष रूप से पुनर्जन्म में आस्था रखते हैं, यद्यपि ऊपर से इसे स्वीकार नहीं करते।' अल्लामा इक़बाल से जोड़कर उक्त शोध मनोवैज्ञानिक ने जो कहा है,

वह भी असत्य और अप्रामाणिक है। डॉ० मेहरोत्रा ने कोई सन्दर्भ-प्रमाण न देकर अन्यायपूर्ण नीति अपनाई है और पूर्वाग्रह का परिचय दिया है।

क़ुरआन में सारे इन्सानों को एक बार पुनर्जीवित किए जाने की बात आई है। इस तथ्य को विद्वान कहे जानेवाले लोग पुनर्जन्म (Rebirth) कहकर अपने आवागमन के लिए प्रमाण जुटाने की कुचेष्टा करते हैं। शायद वे पुनर्जन्म (Rebirth) और पुनरुज्जीवन (Resurrection) में अंतर कर ही नहीं पाते या करना नहीं चाहते। वे यूनानी और पश्चिमी विचारकों के कथनों में भी इसका अन्तर नहीं करते। इस प्रकार वे अपने अच्छे कार्यों को भी संदिग्ध बना लेते हैं।

अद्वैत आश्रम, कलकत्ता से प्रकाशित स्वामी सत्यप्रकाशानन्द की पुस्तक "पुनर्जन्म—क्यों और कैसे ?" में स्काटलैंड के विद्वान डेविड ह्यूम और इंग्लैंड के विचारक एल. स्टैनली के विचारों को ग़लत ढंग से उद्धरित किया गया है। दोनों पुनर्जीवन की बात करते हैं, जिसे पुनर्जन्म से संबद्ध किया गया है।

परामनोवैज्ञानिक अध्ययन

वास्तव में जार्ज बर्कले, फ्रांसिस हचिसन, डेविड ह्यूम ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में जो योगदान किए हैं, उनके आधार पर परामनोविज्ञान को भी थोड़ी गति मिली। 1710 ई० में प्रकाशित पुस्तक 'ए ट्रिटाइज़ कन्सर्निंग दि प्रिंसिपल्स आफ ह्यूमन नॉलेज' की प्रस्तावना में जार्ज बर्कले ने चार तथ्यों को अध्ययन का उद्देश्य बनाया है। ये तथ्य हैं—

(1) विचारों अथवा तथ्यों को सूचित करना।

(2) भावनाओं अथवा संवेगों को उद्दीप्त करना।

(3) किसी को कोई कार्य करने के लिए प्रेरित करना अथवा उसे रोकना, और

(4) किसी के मन में कोई विशेष अभिवृत्ति उत्पन्न करना।

20वीं सदी में तीसरे, चौथे और पांचवे दशक में परामनोविज्ञान की दिशा में कार्य आगे बढ़ा। रूडॉल्फ कार्नेप, सी.एल. स्टेवैन्सन, ए.जे. एयर आदि ने इस पर काम किया। स्टीवैन्सन द्वारा 'माइन्ड' पत्रिका में लिखे लेख मार्ग-दर्शक का काम करते हैं, पर ये सारे प्रयास आवागमनीय पुनर्जन्म को सिद्ध करने में अक्षम रहे। कुछ शोधार्थियों ने न्यूटन के इस नियम For every action, there is an equal and opposite reaction (प्रत्येक क्रिया की समान एवं विपरीत प्रतिक्रिया होती है) पर आवागमनीय पुनर्जन्म को कसने की चेष्टा की। इसमें भी उन्हें असफलता ही हाथ लगी। वैसे भी अब इस नियम की वैज्ञानिकता एवं प्रासंगिकता समाप्त

हो चुकी है। इसके स्थान पर मैक्सप्लैंक का परिमाण सिद्धान्त (Quantum Theory) अधिक निष्पन्न होता है।

इसके अनुसार प्रकृति की क्रियाविधि उछाल और झटकों के रूप में होती है। उल्लेखनीय है कि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक न्यूटन का यांत्रिक सिद्धान्त चलता रहा। बाद में जब यह पाया गया कि उनके यांत्रिक सिद्धान्त रेडियम के अपने आप हीलियम और सीसे में बंट जाने का कोई सही कारण देने में असफल हैं, तो परिमाण सिद्धांत विकसित हुआ।

कुछ परामनोवैज्ञानिकों ने अनेक लोगों की स्मृतियों को एकत्र अवश्य किया है, पर पुनर्जन्म को नहीं माना है, बल्कि इसे मनोवैज्ञानिक शक्ति का प्रभाव माना है। जिन्हें स्मृति है, वे घर-परिवार वाले वातावरण में होते हैं। प्राय: बच्चों की 'पूर्व स्मृति' का बार-बार उल्लेख किया जाता है, ये बच्चे-बच्चियां सहज रूप से घर-परिवार से संबद्ध बातें करती हैं, अन्य क्षेत्र में इनकी रुचि नहीं होती। स्वप्न में भी संबंधित जीवन अथवा स्वप्न देखने वाले के निजी विचार से जुड़ी बातें ही अधिकतर दिखलाई पड़ती हैं।

पश्चिमी अध्येताओं को 'पूर्व स्मृति' के मामले में मानसिक हिस्टीरिया का पता चला। इस प्रकार पुनर्जन्म के जो केस उनके सामने आए, किसी एक से भी आवागमनीय पुनर्जन्म प्रमाणित न हो सका। प्रख्यात अमेरिकी परामनोवैज्ञानिक डॉ० आईन स्टीवैन्सन (वर्जीनिया यूनीवर्सिटी) स्वयं अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Children Who Remember Previous Lives" में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सके हैं। अमेरिका के एक अनुसंधानकर्ता ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'स्पिरिट्स स्टार्स एंड स्पैल्स' में अनेक उदाहरण प्रस्तुत करके पुनर्जन्म को एक छल और धोखा साबित किया है (पृ० 246-249)। प्रिंगिल-पैटिसन (1922) ने कहा है कि पूर्व जीवन की स्मृति होती ही नहीं है। ऐसा ही मत कैनन स्ट्रीटर, लिली डूगल आदि वरिष्ठ विद्वानों ने प्रकट किया है।

भारत में अनुसंधान

भारत में भी परामनोविज्ञान पर कार्य हुआ है। 1922-1923 में राय बहादुर श्याम सुन्दर लाल ने इस विषय पर अपने शोध-कार्य का प्रकाशन फ्रांस की एक पत्रिका में कराया था। 1927 में बरेली के के.के.एन. सहाय ने 'पुनर्जन्म' पर एक पुस्तिका लिखी थी। लाला देशबन्धु गुप्त, पं० नेकी राम शर्मा और ताराचन्द माथुर ने भी कुछ कार्य किए। डॉ० एस.सी. बोस ने 1930 के क़रीब और प्रो०

आज्ञेय ने 1957 में परामनोविज्ञान पर पुस्तकें लिखी। एनीबेसेंट ने भी इसमें योगदान किया। डॉ० केदार, डॉ० कीर्ति स्वरूप रावत, गिरधर, एन.के. चड्ढा, भूषण, पसरीचा, अल्का विज आदि ने भी इस विषय पर काम किया है। डॉ० एल.पी. मेहरोत्रा ने 27 केस अपनी पुस्तक में दिए हैं, इनमें वैज्ञानिकता ज़रा भी नहीं है जिससे कि वे प्रामाणिक कहे जा सकें। इनके वर्णनों से जो प्रश्न खड़े होते हैं, वे स्वयं इन्हें अप्रामाणिक सिद्ध कर देते हैं। ये केस हिन्दुओं की इस धारणा पर भी खरे नहीं उतरते कि पुनर्जन्मित बच्चे की मृत्यु अल्पायु में हो जाती है।

इस सदी के सातवें दशक में एक महत्वपूर्ण घटना उस समय घटी, जब परामनोविज्ञान पर शोध के लिए जयपुर स्थित राजस्थान विश्वविद्यालय में डॉ० एच.एन. बनर्जी की अध्यक्षता में एक विभाग स्थापित किया गया। डॉ० बनर्जी बड़े प्रतिभावान और सत्याधारित अनुसंधान के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने सौ से अधिक 'पुनर्जन्मित' कहे जाने वाले उन केसों को जांच-पड़ताल के लिए अपने हाथ में लिया, जिनका उल्लेख परामनोविज्ञानी अपनी पुस्तकों में बार-बार कर रहे थे। अनुसंधान के लिए उन्होंने टीमें बना दीं। इन टीमों ने On the Spot (घटना स्थल पर) जाकर अनुसंधान कार्य पूर्ण किया। कई स्थानों पर डॉ० बनर्जी ख़ुद गए। उदाहरणार्थ, डॉ० बनर्जी एक बड़ी टीम के साथ तुर्की गए। इस टीम में वरिष्ठ डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक भी शामिल थे। बड़ी तैयारी के साथ यह टीम तुर्की रवाना हुई थी। वहां के अडाना ज़िले में 1956 में इस्माईल के कथित पुनर्जन्म की घटना को पुनर्जन्म के पक्ष में खूब प्रचारित किया जा रहा था। कुछ लोग इसे सबसे मज़बूत केस मानते थे। जिस गांव का इस्माईल के निवासी होने की बात कही जा रही थी, डॉ० बनर्जी को न तो वह गांव ही मिल सका, न ही इस्माईल से भेंट हो सकी, जबकि घटना कुछ ही वर्ष पहले की बताई जा रही थी।

डॉ० बनर्जी ने काफ़ी प्रयास किया, पर असफलता ही हाथ लगी। उन्होंने इस घटना का उल्लेख विस्तार के साथ अपने शोध-कार्य में किया है। अब आइए, यह भी जान लें कि पुनर्जन्म के जिन सौ से अधिक केसों की उन्होंने जांच-पड़ताल कराई, उनका निष्कर्ष क्या रहा? पूरा आवागमनीय पुनर्जन्म खंड-खंड हो गया। एक भी केस सही नहीं पाया गया। डॉ० बनर्जी की कुछ पक्षों द्वारा कड़ी आलोचना की जाने लगी, उन्हें पद से हटा दिया गया और 1968 में रहस्यमय ढंग से उनके विभाग को बन्द कर दिया गया। स्पष्ट है, सत्य के रक्षार्थ उन्होंने बहुत बड़ी कुरबानी दी, मिथ्या के समक्ष झुके नहीं। सचमुच बधाई और शुभ कामनाओं के अधिकारी हैं डॉ० बनर्जी।

पुनर्जन्म के झूठे मामले

पुनर्जन्म के मामलों की पुष्टि अभी तक संभव नहीं हो सकी है। इसका वैज्ञानिक आधार अप्राप्य है। इसका एकमात्र कारण पुनर्जन्म का न होना है। 7 अक्तूबर 1968 को प्रकाशित एक समाचार के अनुसार, "मनोविज्ञान के विशेषज्ञों (Psychologists) ने कुछ केसों की जांच-पड़ताल करने के बाद यह मत प्रकट किया कि कुछ लोग जो अपने पूर्व जन्म की बातें बयान करते हैं, वे अधिकतर मानसिक हिस्टीरिया Hysteria) रोग से ग्रसित होते हैं और बातें इसी का परिणाम होती हैं। जयपुर के मानसिक चिकित्सालय के डॉ० बी.के. व्यास और एक अन्य विशेषज्ञ श्री रत्न सिंह का दावा है कि उन्होंने कुछ केसों का इलाज किया है, जिसमें उन्हें सफलता मिली है। डॉ० व्यास ने यूनाइटेड न्यूज आफ़ इंडिया को साक्षात्कार देते हुए कहा कि जो लोग पूर्वजन्म की घटनाएं बयान करते हैं, उनकी मानसिक स्थिति साधारणतया सन्तुलित नहीं होती। ये अधिकतर व्यक्तिगत समस्याओं के केस होते हैं। ये लोग मानसिक असन्तुलन के कारण कुछ और बनने के इच्छुक रहते हैं। इस प्रकार मनगढ़न्त क़िस्से बयान करने से कुछ दूसरे लाभ प्राप्त हो जाते हैं।"

(हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली)

डॉ० व्यास ने अपने पक्ष-समर्थन के लिए कुछ केसों के विवरण भी दिए।

देश में पुनर्जन्म का दावा करने वाली जो भी घटनाएं सामने आई हैं, उनके पात्र या तो मानसिक रोग से ग्रसित रहे या किसी लाभ के निमित्त मनगढ़न्त क़िस्सा बनाया गया या काल्पनिक रूप से लिख दिया गया कि पुनर्जन्म की घटना अमुक स्थान पर घटी। धोखाधड़ी की एक घटना का उल्लेख करते हुए डॉ० एल.पी. मेहरोत्रा लिखते हैं—यह घटना एक ऐसे बालक से संबंधित है, जिसकी बहन को पूर्वजन्म की स्मृतियां थीं और जिससे उसकी अपनी बहन से डाह हो गई और वह अपने को महात्मा गांधी का मृतात्मा बताने लगा। इस बालक ने गांधी की जीवनी के विषय में एक पुस्तक में पढ़ा था और उसी का सहारा लेकर उनके विषय में बताने लगा। जब लोगों को यह पता चला कि गांधी जी का पुनर्जन्म हो गया है तो लोग बड़ी संख्या में उससे मिलने पहुंचने लगे। कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता भी वहां गए यहां तक कि सुशीला नैय्यर भी गईं। इस सबसे उस बालक को बड़ी शोहरत मिली, पर अन्त में उसकी पोल खुल गई और उसका झूठ सामने आ गया।

पुनर्जन्म की झूठी कहानी

11 जुलाई 1998 को इन पंक्तियों के लेखक का एक ऐसी जगह पर जाना हुआ, जहां पर महाराजा बलरामपुर सर पाटेश्वरी प्रसाद सिंह का तथाकथित पुनर्जन्म हुआ था। जो विवरण अख़बारों और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, उनसे कुछ लोगों को ऐसा लगा कि वाक़ई पुनर्जन्म हुआ, लेकिन जब मौक़े पर पहले कुछ महीने बाद और फिर कुछ वर्षों बाद जाया गया, तो पुनर्जन्म की सारी कहानी झूठी, मनगढ़ंत, कल्पित निकली। आइए विस्तार से जानें कि इस घटना (?) की हक़ीक़त क्या है?

बलरामपुर (पहले गोण्डा) ज़िले के शिवपुरा बाज़ार निवासी पन्नालाल सोनी पुत्र मेवालाल सोनी, जो पेशे से स्वर्णकार हैं, ने 1981 में यह दावा किया कि उनके यहां 1969 की किसी महीने की 11 तारीख़ (वृहस्पतिवार) को जो लड़का पैदा हुआ था, वह महाराजा पाटेश्वरी प्रसाद सिंह का पुनर्जन्म है। उन्होंने इलाहाबाद से छपनेवाली एक पत्रिका के लिए काम करने वाले रामजी राय को विस्तार के साथ इंटरव्यू देकर अपने दावे को पेश किया, तो भोली-भाली जनता भ्रमित हुए बिना न रह सकी। क्षेत्र में हर तरफ़ पन्नालाल सोनी और उनके बेटे की चर्चा एवं आवभगत होने लगी। लोग दल के दल दर्शनार्थ उनके घर आने लगे और कथित महाराजा से पूर्वजन्म की बातें पूछने लगे। बारह साल के बच्चे पुंडरीक कुमार को जो बातें उसके पिता ने पहले से बता रखी थीं, उन्हें उसने कंठस्थ कर लीं और जब कोई उसके पूर्व जन्म की बातें पूछता तो वही बच्चा रटी-रटाई बातें कह डालता। लोग हैरत में पड़ जाते। इस प्रकार पन्नालाल परिवार की शोहरत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गई। पन्नालाल जी ने बताया कि शिवपुरा बाज़ार महाराजा बलरामपुर का अधिक्षेत्र था, अतः पाटेश्वरी प्रसाद सिंह जी का शिकार आदि के लिए शिवपुरा आना हुआ करता था। बक़ौल पन्नालाल जी के "हम महाराजा साहब की हर गतिविधि से वाक़िफ़ थे।"

पन्नालाल जी कहते हैं कि उन्हें महाराजा ने स्वप्न दिखाया कि वे मेरे (पन्नालाल सोनी) यहां जन्म लेने के इच्छुक हैं, तो मैंने कहा कि धर्मावतार! हम आपकी सेवा कैसे कर पाएंगे? इस पर महाराजा ने कहा कि "हम तो जन्म लेंगे ही। यह हमारा फ़ैसला है।" फिर पुंडरीक का जन्म हुआ। पन्नालाल जी कहते हैं कि पुंडरीक दो साल की अवस्था ही में अपने पूर्वजन्म की बातें बताने लगा था। पर सवाल यह है कि इसकी जानकारी गांववासियों को भी नहीं मिली कि ऐसा

कोई बच्चा है जो पूर्व जन्म की बातें बताता है। अचानक 11-12 साल की आयु में पन्नालाल सोनी ने पुनर्जन्म की बातें प्रचारित करना शुरू कर दीं, जिसमें उन्हें तात्कालिक सफलता ही मिल पाई। बाद में वे लोग छंटने लगे, जो हक़ीक़त से वाक़िफ़ हो चुके थे और मनगढ़ंत कथा से परिचित हो गए थे।

चर्चा के कारण महारानी बलरामपुर ने पुंडरीक को पिता समेत अपने आवास नीलकोठी पर बुलवाया, पर 12 वर्षीय बालक उनके किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे सका। शुरू में महारानी ने जो दिलचस्पी दिखाई, वह दो-तीन सवालों के बाद ही समाप्त हो गई। उल्लेखनीय है कि पाटेश्वरी प्रसाद सिंह की मृत्यु रहस्यमय परिस्थितियों में हुई थी। लोगों की जिज्ञासा थी कि पुंडरीक मृत्यु की परिस्थितियों को स्पष्ट करे, लेकिन अबोध बालक को जितना कुछ उसके पिता ने सिखाया-पढ़ाया था, उससे आगे वह कुछ नहीं जानता था। अत: रानी साहिबा बहुत असंतुष्ट हो गईं और कहते हैं कि उन्होंने अपनी नाराज़ी का इज़हार भी किया। बलरामपुर के कुछ संभ्रान्त लोगों ने भी शुरू में तो कथित पुनर्जन्मी की ओर ध्यान दिया, बाद में हक़ीक़त से परिचित होते ही अपने समय को बर्बादी से बचा लिया। बलरामपुर के संभ्रांत समाजसेवी श्री बृज किशोर श्रीवास्तव ने तो कथित पुनर्जन्मित बालक पुंडरीक को उसके पिता के साथ अपने घर बुलवाया, पर जब एक सवाल यह पूछा कि "कन्हई यादव के बारे में आप जानते हैं जो आपके यहां काम करते थे भगवानपुर फार्म पर?" तो पुंडरीक बग़लें झांकने लगा। वह किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे सका। इस प्रकार हक़ीक़त सामने आ गई। पुंडरीक आज महाराजगंज (गोण्डा) में सोनारी का काम करता है।

आवागमनीय पुनर्जन्म : पक्षकारों के तर्कों का जायज़ा

स्वामी प्रभुपाद

अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ (इस्कान) के संस्थापक स्वामी प्रभुपाद ने 'पुनरागमन-पुनर्जन्म का विज्ञान' नामक 107 पृष्ठीय पुस्तिका 1984 ई० में लिखी थी। इस पुस्तक का दसवां संस्करण दिसम्बर 1998 में प्रकाशित हुआ है। इस बहुप्रसारी पुस्तिका की भूमिका में दावा किया गया है कि इसमें पुनर्जन्म और आवागमन के विषय में उठनेवाले सभी प्रश्नों के तर्कसम्मत उत्तर दे दिए गए हैं। भूमिका में कहा गया है—

"सामान्यत: लेखक अपने द्वारा गठित अपनी परिकल्पनाओं को प्रस्तुत करते हैं कि कैसे और किन सुनिश्चित मामलों में पुनर्जन्म घटित हुआ, मानो कि कोई विशिष्ट अथवा प्रतिभा-सम्पन्न प्राणी ही पुनर्जन्म लेते हैं, अन्य नहीं। इस प्रकार का प्रस्तुतीकरण पुनर्जन्म के विज्ञान को विवेचित नहीं करता, वरञ्च इसके बजाय अनेक भ्रामक कपोल- कल्पनाओं और विरोधाभासों को पैदा कर देता है।

उदाहरण के लिए, क्या कोई मनुष्य तत्काल ही पुनर्जन्म ग्रहण करता है, अथवा धीरे-धीरे, अथवा बहुत लंबे समय की अवधि में? क्या दूसरे जीवधारी, जैसे पशु, मानव-शरीरों में पुनर्जन्म लेते हैं? क्या मनुष्य पशु के रूप में प्रकट हो सकता है? यदि ऐसा है, तो कैसे और क्यों? क्या हम सदैव पुनर्जन्म लेते हैं, अथवा यह कहीं समाप्त हो जाता है? क्या आत्मा निरन्तर नरक में दुःख भोगता है, अथवा सदा के लिए स्वर्ग का सुख? क्या हम अपने भावी पुनर्जन्मों को वश में ला सकते हैं? कैसे? क्या हमारा पुनर्जन्म दूसरे नक्षत्रों अथवा दूसरे विश्वों में सम्भव है? क्या हमारे सत्कर्म और दुष्कर्म आगे आने वाले शरीर का निर्धारण करते हैं? कर्म और पुनर्जन्म का क्या सम्बन्ध है?

'कमिंग बैक'—पुनरागमन (पुनर्जन्म का विज्ञान)—इन प्रश्नों का पूरा-पूरा उत्तर देती है, क्योंकि यह पुनर्जन्म के वास्तविक स्वरूप की वैज्ञानिक विधि से व्याख्या प्रस्तुत करती है।" (पृ० ग)

आइए जानें, इन प्रश्नों का कितना और कैसा संतोषजनक उत्तर उक्त पुस्तिका

देती है। इसमें कुल आठ अध्याय हैं। पहले अध्याय का शीर्षक है : 'पुनर्जन्म-सुकरात से लेकर सेलिंगर तक'। इसमें सुकरात, पाइथेगोरस और प्लेटो के कुछ कथन दिए गए हैं और यहूदी, ईसाई और इस्लाम धर्मों में भी आवागमनीय पुनर्जन्म की मनगढ़ंत बात कहकर ग़लतफ़हमी और भ्रान्ति पैदा करने की कोशिश की गई है। स्वामी प्रभुपाद भी उन विद्वानों में सम्मिलित हैं जो पुनर्जन्म और पुनरुज्जीवन (मृत्यु उपरान्त एक बार के जीवन) में भेद करने में अक्षम हैं अथवा जान-बूझकर या अनजाने तथ्य-निरूपण में ग़लती करते हैं। कविता, कहानी, उपन्यास आदि साहित्यिक कृतियों में उल्लिखित तथ्यों को धार्मिक मान्यता बता देना कितना घोर अन्याय है ! इस प्रवंचना-कुप्रवृत्ति पर जितनी जल्दी संभव हो, रोक लगनी चाहिए। लेखन-मूल्यों की अवहेलना कदापि उचित नहीं।

दूसरे अध्याय का शीर्षक 'शरीरों का परिवर्तन' है, जिसमें स्वामी जी ने शरीर को स्वप्नवत् बताया है। साथ ही यह भी दावा किया है कि "हर आदमी सच्चाई को जानता है, मैं यह शरीर नहीं हूं।" स्वामी प्रभुपाद ने लिखा है कि "शरीर के स्वप्नवत् होने का अनुभव हमें प्रत्येक रात में होता है। जब हम स्वप्न देखते हैं, हमारा शरीर चारपाई पर पड़ा होता है, पर हम कहीं अन्यत्र चले जाते हैं।. . . इसलिए हमें निष्कर्ष निकालना होगा कि हम इन शरीरों में से एक भी नहीं हैं। तो, इस तरह शरीर अपने सच्चे रूप में मात्र मनोरचना है।"

□ स्वामी प्रभुपाद जी की इन बातों से सहमंत नहीं हुआ जा सकता, क्योंकि उन्होंने न तो कोई तार्किक पक्ष रखा है, न ही कोई चिकित्सीय पक्ष। केवल श्रीमद् भगवद्गीता का एक श्लोक लिख दिया है। यहां स्वप्न देखने पर तो कुछ बातें पेश की गई हैं, पर कल्पनाशीलता पर कुछ नहीं कहा गया है। आदमी ऐसा नहीं है कि प्रत्येक रात स्वप्न ही देखे या जब सोए तभी स्वप्न देखने में व्यस्त हो जाए , जबकि वह जाग्रत अवस्था में कल्पना तो प्रायः करता ही रहता है और कल्पित चीज़ में अथवा प्रसंग में अपने को सशरीर भी संलग्न करता है। इस परिस्थिति में क्या हमारा शरीर हमारे साथ नहीं रहता? क्या आत्मा हमारे शरीर से निकलकर कल्पना अथवा स्वप्न के साथ-साथ चली जाती है? यदि आत्मा हमारे शरीर में रहती है तो फिर दूसरे विभिन्न शरीरों में क्या नहीं होती? ऐसे में शरीर स्वप्नवत् कैसे हुआ?

शरीर को स्वप्नवत् मान लेने से मनुष्य अपने शरीर का हक़ कैसे अदा कर सकता है? वह जब शरीर को स्वप्नवत् मान लेगा, तो क्यों भोजन करेगा, उसे साफ़-सुथरा क्यों रखेगा, उसकी ज़रूरतों को क्यों पूरा करेगा और क्यों उसकी

चिकित्सा करवाएगा ? यदि ऐसा हो जाए, तो खाद्यान्न, आवास, चिकित्सा और जीवन की आवश्यकताएं समाप्त हो जाएं और मानव गतिविधि बन्द हो जाए। लोग परोपकार करना छोड़ दें, एक दूसरे के शरीर को स्वप्नवत् जानकर एक दूसरे की सहायता न करें, परस्पर प्रेम न करें और एक-दूसरे के कष्टों के निवारण के लिए सहयोग न करें, आदि-आदि। यदि शरीर को मनोरचना मान लें स्वप्न की भांति, तो भी यही स्थिति रहेगी। इससे पुनर्जन्म भी सिद्ध न हुआ। शायद ही कोई व्यक्ति जानता हो कि "मैं यह शरीर नहीं हूं।"

स्वाजी जी का यह उदाहरण भी भ्रांतिपूर्ण है कि काला कोट या सफ़ेद कोट पहनने वाला व्यक्तित्व-बोधक नहीं होता। वे कहते हैं—"यदि मैं आपको पुकारूँ, "श्रीमान ! काला कोट।" तो यह मेरी मूर्खता होगी। इसी प्रकार अपने जीवन-काल में मैंने शरीरों को अनेकों बार बदला है, परन्तु मैं उनमें से कोई भी शरीर नहीं हूं।"

स्वामी जी के कथन को सही मानें, तो व्यक्ति का कोई नाम नहीं होना चाहिए। बस, शरीर का शरीरों कह देना काफ़ी है। यह भी न कहें तो भी चलेगा, क्योंकि शरीर अनिश्चित है। स्वाजी के अनुसार, शरीरों में परिवर्तन होता है। वस्त्र का उदाहरण इस प्रकार भी अनुचित है कि वर्तमानकाल में काला और सफेद कोट भी व्यवसायगत व्यक्तित्वों जैसे वकील और डॉक्टर का प्रतीक होता है। इसी तरह और भी व्यवसाय और कर्म को प्रदर्शित करनेवाले पोशाक होते हैं।

तीसरे अध्याय में आत्मा पर बहस है और आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। कहा गया है : "आत्मा परमात्मा से आता है।" चौथे अध्याय का शीर्षक है : "पुनर्जन्म के तीन इतिवृत्त"। पहले इतिवृत्त में चित्रकेतु की कथा है। दूसरे में जड़भरत की और तीसरे में अजामिल की। ये सभी आवागमनीय पुनर्जन्म पर आधारित पैराणिक कथाएं हैं। पांचवां अध्याय आत्मा की रहस्य-यात्रा पर है, जिसमें श्रीमद्भागवत के अधिकतर उद्धरण हैं। छठे अध्याय का शीर्षक है—"पुनर्जन्म का तर्क विज्ञान"।

इस अध्याय में पहला तर्क जो उपस्थित किया गया है कि दो बालक एक ही दिन एक ही समय में जन्म लेते हैं, परन्तु एक अपराधी बन जाता है, तो दूसरा उच्चतम न्यायालय में पीठासीन होता है। यह उसके पूर्वजन्म के कर्मों के कारण होता है। यह बात सच्चाई से कोसों दूर है। योग्यता, क्षमता का प्रश्न इन्सान के खान-पान, संगति, संस्कार और परिस्थितियों आदि से जुड़ा हुआ है। जब इन्सान अपना सुधार चाहता है और इसके लिए प्रयास करता है, तो ईश्वर उसकी

सहायता करता है और इन्सान को दैवयोग की प्राप्ति होती है। ऐसा नहीं है कि बैठे-बिठाए, परिश्रम के बिना लोग उच्च पद प्राप्त कर लें। यदि ऐसा हो, तो लोग कर्म ही क्यों करें, बस बैठे रहें और उन्हें पूर्वजन्म का फल मिल जाए। इस प्रकार पहला तर्क, तर्क न हुआ।

एक चिकित्सीय विवेचन

बच्चों का स्वस्थ मस्तिष्क और शरीर मां के स्वास्थ्य पर कितना निर्भर करता है। चिकित्सा-विज्ञान इस संबन्ध में क्या कहता है, आइए एक नज़र डालें—

मानव मस्तिष्क के विकास की पहली अवस्था वह होती है जिसमें मस्तिष्क की कोशिकाओं का तेज़ी के साथ निर्माण होता है। यह अवस्था गर्भावस्था के चौथे महीने से प्रारंभ होकर बच्चे के जन्म के समय तक, मां के गर्भ में ही पूरी हो जाती है। अब यदि मां ही कुपोषित होगी तो बच्चा कैसे स्वस्थ होगा? बच्चों के कुपोषित होने का सबसे प्रमुख कारण है—मां का कुपोषित होना, और गर्भावस्था के दौरान उसे अतिरिक्त पोषक आहार न मिल पाना। हमें मस्तिष्क के विकास तथा पोषण के बीच संबंधों को अच्छी तरह समझने के लिए मस्तिष्क के विकास की प्रक्रिया अच्छी तरह समझनी होगी।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने गर्भवती महिलाओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन 2500 कैलोरी ऊर्जा तथा 55 ग्राम प्रोटीन निर्धारित किया है। लेकिन आंकड़े बताते हैं कि हमारे देश में एक औसत गर्भवती महिला को दिन भर में भोजन से केवल 1420 कैलारी ऊर्जा तथा 37 ग्राम प्रोटीन ही मिल पाती है। इस प्रकार एक वर्ष से पांच वर्ष के बच्चों को औसतन 1300 कैलोरी ऊर्जा और 18 ग्राम से कम प्रोटीन मिल पाती है, जबकि ज़रूरत होती है 1420 कैलोरी ऊर्जा और 19.3 ग्राम प्रोटीन की। चिकित्सा विशेषज्ञों का अनुमान है कि हमारे देश में प्रतिवर्ष जितने बच्चों का जन्म होता है, उनमें से केवल 13 प्रतिशत का ही स्वस्थ व्यक्तियों के रूप में विकास हो पाता है। बाक़ी में से लगभग 17 प्रतिशत की तो बड़े होने से पहले ही मृत्यु हो जाती है और अन्य शारीरिक मानसिक रूप से कमज़ोर रह जाते हैं।

गर्भावस्था के 26वें सप्ताह तक तंत्रिका की कोशिकाओं का बहुत तेज़ी से निर्माण होता है, लेकिन उनके आकार में वृद्धि बिल्कुल नहीं होती है। 26 सप्ताह

के बाद तंत्रिका के विकास की दूसरी अवस्था शिशु के जन्म के समय से लेकर 18 महीने तक चलती है। इस अवस्था में कोशिकाओं का बनना धीरे-धीरे कम होने लगता है और उनके आकार में वृद्धि प्रारंभ होती है। मस्तिष्क के विकास का तीसरा चरण वह है, जिसमें 18 महीने तक पहुंचते-पहुंचते नई कोशिकाओं का बनना पूरी तरह रुक जाता है तथा उनकी वृद्धि की रफ़्तार तीन वर्ष की अवस्था तक चलती रहती है। इस बीच कोशिकाओं के आकार में वृद्धि के साथ तंत्रिका सूत्रों का निर्माण होता है, और उनकी शाखाएं, उपशाखाएं बनती हैं। इस प्रकार पूरे मस्तिष्क में तंत्रिकाओं का जाल-सा बन जाता है।

चिकित्सकों का मानना है कि कुपोषण से मस्तिष्क का विकास कितना अधिक प्रभावित होता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कुपोषण किस समय प्रारंभ हुआ है। कोशिकाओं के तेज़ी से निर्माण के समय शरीर को कम पोषक तत्व मिलने पर कम संख्या में कोशिकाओं का निर्माण होता है। जन्म के बाद कुपोषण का शिकार होने पर कोशिकाओं की वृद्धि प्रभावित होती है। अन्ततः कोशिकाओं की कम संख्या, उनका छोटा आकार तथा कोशिका तंतुओं और उनकी शाखाओं, उपशाखाओं में कमी—सब मिलकर प्रभावित शिशु को अल्प बुद्धि का बना देते हैं। शिशु का स्वास्थ्य उसे जन्म देने वाली मां के स्वास्थ्य एवं पोषक-तत्वों पर निर्भर करता है।

इसे जानने के लिए कुछ बुनियादी बातें जानना आवश्यक है। गर्भावस्था प्रारंभ होते ही मां के गर्भाशय में बदलाव होने लगते हैं। सबसे पहले उसका आकार बढ़ने लगता है, ताकि विकसित हो रहे शिशु को विकास के लिए पर्याप्त स्थान मिल सके। साथ ही गर्भाशय में रक्त की आपूर्ति भी बढ़ जाती है, क्योंकि गर्भ में पल रहे शिशु को पोषक तत्व पहुंचाने तथा वहां के व्यर्थ पदार्थ हटाने का ही एक माध्यम होता है। गर्भाशय को अतिरिक्त रक्त की आपूर्ति में कोई कटौती न हो, इसके लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि शरीर में अतिरिक्त रक्त का निर्माण हो। मां के शरीर में होने वाले ये सारे परिवर्तन बिना अतिरिक्त पोषक आहार के संभव है ही नहीं। यही कारण है कि यदि मां को उचित मात्रा में पोषक तत्व न मिले तो उसका शरीर कुपोषण का शिकार होगा ही, साथ ही शिशु का विकास भी प्रभावित होता है। ज्यों-ज्यों गर्भावस्था बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों मां के शरीर में कुछ और परिवर्तन होते हैं, क्योंकि जन्म के बाद तक बच्चे को आहार प्रदान करने के साधन केवल मां के दूध ही होते हैं। इसके साथ ही मां के शरीर के अंदर अतिरिक्त चर्बी (वसा) भी जमा होती है, जिससे मां को दूध उत्पन्न करने के लिए आवश्यक ऊर्जा भी मिलती रहे। यदि मां को अतिरिक्त पोषक तत्व न

मिलें, तब भी ये परिवर्तन होंगे ही। हां, ऐसी अवस्था में ये तैयारियां शिशु के विकास में कटौती करके होंगी।

एक गर्भवती महिला को कम से कम इतना और इस तरह का आहार अवश्य होना चाहिए, ताकि बच्चे के जन्म लेने के समय उसके वजन में 11.5 किलोग्राम की वृद्धि हो जाए। इसमें बढ़े हुए रक्त का अतिरिक्त भार 500 ग्राम तथा मां के शरीर में जमा हुई चर्बी का भार 4.5 से 5.5 किलोग्राम तक होता है। इस तरह की गर्भवती महिला से जन्म लेने वाले शिशु का भार लगभग 3.5 किलोग्राम होता है। इस तरह की गर्भवती महिला से जन्म लेने वाले बच्चे का शारीरिक भार आवश्यकता से कम हो तो स्वस्थ शिशु को जन्म देने के लिए, गर्भावस्था के दौरान उसके भार में 11.5 किलोग्राम से अधिक की वृद्धि आवश्यक हो जाती है।

समाचार-पत्रों में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, अब तो 'स्मार्ट जीन' की ख़ुराक के ज़रिए तीक्ष्ण बुद्धि के बच्चे प्राप्त करने की संभावना काफ़ी बढ़ गई है। वैज्ञानिकों ने अपनी खोजों के आधार पर दावा किया है कि इच्छानुसार प्रतिभाशाली संतान प्राप्त कर सकते हैं। इन खोजों ने यह भी संभव कर दिया है कि शारीरिक कमी या किसी और कारण से बच्चे पैदा करने में अक्षम व्यक्ति भी संतान प्राप्त कर सकते हैं और यह भी सुनिश्चित कर सकते हैं कि वे किसी आनुवंशिक या अन्य किसी भी तरह की जन्मजात बीमारियों से मुक्त हो जाएं। जन्म के बाद भी कई तरह के टीके आदि लगाकर अब उसके जीवन को अन्य तरह की बीमारियों से सुरक्षित रखा जा सकता है। पर अब तक यह परिकल्पनाओं से परे की बात थी कि इच्छानुसार तीक्ष्ण याददाश्त व कुशाग्रबुद्धि वाला बच्चा प्राप्त किया जा सके।

अमेरिका के प्रिंस्टन विश्वविद्यालय, मेसाच्यूसेट्स, इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी तथा वाशिंगटन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक 'कुशाग्रबुद्धि' वाला 'डूगी' नामक चूहा तैयार किया है जो सामान्य चूहों से अधिक तीक्ष्ण बुद्धि वाला है। उसकी याददाश्त काफ़ी अच्छी है तथा अपने आसपास के वातावरण के अनुकूल ढालने की उसमें अच्छी क्षमता है। इस प्रकार का परीक्षण करनेवाले वैज्ञानिक त्शियेन और उनके सहयोगियों को यक़ीन है कि मानव-शरीर में पाया जानेवाला एम.एम.डी.ए. ग्राही (रिसिप्टर) चूहे, बिल्ली और अन्य जीवधारियों में से पाये जानेवाले रिसिप्टर के ही समान होते हैं, अतः इसकी मानवों में भी वही भूमिका होगी, जो अन्यों में होती है। (राष्ट्रीय सहारा, 12 सितंबर 1999)

स्वामी प्रभुपाद का दिलचस्प तर्क

स्वामी प्रभुपाद का दूसरा तर्क बड़ा दिलचस्प है। आइए देखें, इसमें कितना दम है। यह तर्क जहां पहले तर्क को रद्द कर डालता है, वहीं अपनी तार्किकता पर सवालिया निशान लगा देता है। स्वामी जी लिखते हैं—"यदि कोई आदमी जीवन के इस मूल्यवान रूप को, जिसका लक्ष्य मात्र स्वरूप-साक्षात्कार है, न केवल पशु-कर्मों जैसे भोजन-शयन-काम और शरीर-रक्षा में लगातार व्यर्थ कर देता है, तो ईश्वर उसे ऐसी योनि में जन्म देता है, जिसमें इन्द्रिय-सुखों के लिए अधिक सुविधा रहती है।"

स्वामी जी इसका उदाहरण इन शब्दों में देते हैं—"एक पेटू आदमी को, जो तरह-तरह के ढेर सारे भोजन बिना विवेक ठूँसता है, प्रकृति के द्वारा सूअर या बकरी का शरीर दिया जाता है जिससे वह मल और गन्दगी को बिना विवेक किये स्वाद से खा सके।"

यह सोदाहरण तर्क पर दृष्टिपात करने से मालूम हुआ कि भोजन, शयन, काम और शरीर रक्षा के कर्म पशु-कर्म हैं, इनमें जीवन को नहीं लगाना चाहिए अन्यथा आदमी, सूअर, बकरी (जो गंदगी और मल नहीं खाती) आदि बन जाएगा। यह तथ्य दिग्भ्रमित करनेवाला है। सबसे पहले यह स्पष्ट होना चाहिए कि उक्त सभी कर्म पशु-कर्म कदापि नहीं है। ये सभी मानव-जीवन के लिए अनिवार्य और अपरिहार्य कर्म हैं। हां, इनमें समन्वय स्थापित करना और मध्य-मार्ग पर चलना अत्यन्त आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं किया जाता है, तो मानव-जीवन विकारमय हो जाता है, पर भोजन, शयन, काम, शरीर-रक्षा आदि सभी जीवन में अनिवार्य आवश्यकताएं हैं।

'पुनर्जन्म का तर्क विज्ञान' इस मत की आलोचना करता है कि "यदि हमने अनैतिक अथवा पाप का जीवन जिया तो हमें नरक के अन्धतम लोक में सदैव के लिये दंडित किया जायेगा, जहां छुटकारे के लिए प्रार्थना भी संभव नहीं है।" स्वामी प्रभुपाद लिखते हैं—"क्या यह संभव है कि आदमी तो दूसरों के प्रति दया अथवा करुणा दिखा सकता है, परन्तु ईश्वर ऐसी भावनाओं के लिए अक्षम है? ये मतवाद ईश्वर को हृदयहीन पिता के रूप में चित्रित करते हैं, जो अपने बालकों को पहले तो असन्मार्ग पर जाने देता है, और तब उनका अन्तहीन दंड और उत्पीड़न खड़ा देखता है।"

ईश्वर पर इस प्रकार का आरोप लगाना उसे और उसकी व्यवस्था को न जानने का परिणाम है। ईश्वर इन सब आरोपों से रहित है। वह अत्यंत कृपाशील और दयावान है। वह 'जब्बार' भी है, यानी अपने आदेश को अपनी शक्ति से लागू करनेवाला है। वह सर्वथा न्याय करनेवाला है। सर्वशक्तिमान और सामर्थ्यवान है। वह माफ़ करनेवाला और नर्मी से काम लेनेवाला है। वह 'बारी' भी है, अर्थात् अपनी योजना को व्यावहारिक रूप देनेवाला है। उसने दुनिया को इन्सान के लिए परीक्षा-स्थल बनाया है। इन्सान के यहां के कर्म उसके शाश्वत पारलौकिक जीवन का आधार बनेंगे। जैसा उसने कर्म किया है, वैसा परिणाम वह पाएगा। यदि यह आधार न हो और आममाफ़ी हो तो छोटी-मोटी इन्सानी व्यवस्था तक नहीं चल सकती। यदि न्यायाधीश सबको आममाफ़ी देता रहे, तो फिर न्याय कहां हुआ? मज़ाक़ बन जाएगा। अतः स्वामी जी का 'तर्क-विज्ञान' बुद्धि-विवेक की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

सातवां अध्याय गीता और श्रीमद्भागवत पर आधारित है, जो आठवें का शीर्षक है "लौट कर मत आओ"। इस अंतिम अध्याय में आवागमन से छुटकारे के लिए कृष्ण-भक्ति पर ज़ोर दिया गया है और आठ सूत्रीय 'तकनीक' बताई गई है। मालूम हुआ कि जिन प्रश्नों के उत्तर देने की बात भूमिका में कही गई थी, वह पूरी पुस्तिका में नहीं आ सकी। हां, मुक्ति की कुछ तकनीकें अच्छी हैं, जैसे कहा गया है कि प्रत्येक मनुष्य को सदैव ईमानदारी से कमाना चाहिए, जुआरी का काम नहीं करना चाहिए, अवैध मैथुन नहीं करना चाहिए, मादक पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए।

स्वामी सत्य प्रकाशानन्द

स्वामी सत्य प्रकाशानन्द पुनर्जन्म के पक्ष में तर्क देते हुए लिखते हैं कि प्रायः यह तर्क उठाया जाता है कि अगर हमने पहले भी मनुष्य जीवन बिताए हों तो हमें वे याद क्यों नहीं रहते और चूंकि वे हमें याद नहीं रहते इसलिए पुनर्जन्म का सिद्धांत ग्रहणयोग्य नहीं है। स्वामी जी इसे रद करते हुए कहते हैं कि हमें अपने बचपन के दिन भी याद नहीं होते। क्या इसका अर्थ यह है कि हम कभी बच्चे नहीं थे? ('पुनर्जन्म—क्यों और कैसे?')

☐ स्वामी जी का यह तर्क अनुपयुक्त है, क्योंकि कोई भी ऐसा मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ऐसा नहीं होगा, जो अपने बचपन की सारी स्मृति लोप कर चुका हो। इसके विपरीत उसे पूर्वजन्म की स्मृति बिल्कुल नहीं होती। अतः

पुनर्जन्म की मान्यता काल्पनिक और अयथार्थपूर्ण है।

* * * * *

स्वामी जी, "A Wakened India" (Monthly) के जुलाई, अगस्त 1970 में प्रकाशित अपने लेख में यह कहकर अपने पूर्व तर्क का ही खंडन कर डालते हैं कि मनुष्य के वर्तमान जीवन के सुस्पष्ट ज्ञान से ही उसके पूर्व तथा परवर्ती जीवन का ज्ञान हो सकता है।

□ स्पष्ट है कि किसी भी मनुष्य को अपने वर्तमान जीवन का सुस्पष्ट ज्ञान नहीं हो सकता, अतः पुनर्जन्म मिथ्या है। इसका ज्ञान असंभव है। इससे यह निष्कर्ष भी निकलता है कि 'पूर्व जन्म' की बातें बताने की घटनाएं असत्य हैं, क्योंकि जो ऐसा करता है उसे वर्तमान जीवन का सुस्पष्ट ज्ञान नहीं होता। यह भी पुष्ट प्रमाण है।

* * * * *

स्वामी सत्य प्रकाशानन्द के अनुसार आत्मा और मन वंशानुगत नहीं हैं। अतः जन्म के लिए आनुवंशिकता (Heredity) का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। विज्ञान इसे मान्यता नहीं देता। पेड़-पौधों से डी.एन.ए. लेकर नई क़िस्म की प्रजातियों का विकास करना या जानवरों के शरीर के आकार में आनुवंशिकी विज्ञान के आधार पर परिवर्तन करने का सिलसिला पुराना है। अब तो यह विज्ञान पूर्व विषय बन चुका है। आनुवंशिकता के आधार पर, जिसका मूल स्रोत डी.एन.ए. है, चलते-फिरते वृक्ष बनाने की दिशा में शोध किया जा रहा है। मानव-शरीर की चिकित्सा भी इस विज्ञान के आधार पर होने की संभावना बढ़ गई है। इस सिलसिले में एडिनबरा के रोज़लिन इंस्टीट्यूट और अमेरिका की एक बायोटेक्नालोजी कम्पनी के बीच क़रार हो चुका है। क़रार पर हस्ताक्षर करने वालों का कहना है कि वे क्लोनिंग टेक्नालोजी के ज़रिए डायबिटीज से लेकर हृदय रोग जैसी अनेक बीमारियों का नया इलाज खोजना चाहते हैं।

(नभाटा, 22 अगस्त 1999)

स्काटलैंड के वैज्ञानिकों ने इसी विज्ञान के आधार पर कोशिका के द्वारा डॉली नामक भेड़ को उत्पन्न कर दिया है, जो पहली क्लोन भेड़ (Cloned Sheep) है। इस संबंध में मार्च 1997 में भारत के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में विस्तार के साथ विवरण आ चुके हैं। स्काटलैंड ने इडेनबर्ग स्थित रोजलिन इंस्टीट्यूट में 'डॉली' नामक भेड़ का क्लोन (प्रतिकृति) तैयार किया गया।

अब तो अमेरिकी जेनेटिक वैज्ञानिकों को मानव-क्लोन का भ्रूण बनाने में सफलता मिल गई है (द्रष्टव्य, द स्टेट्समेन, नई दिल्ली, 18 जून 1999)। अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ० रिचर्ड सीड ने मानव-क्लोन बनाने का एलान कर दिया है। मानव कोशिका से उसके प्रतिरूप-मानव का पैदा होना क़ुरआन की शिक्षा के बिल्कुल अनुकूल है। इस्लाम की धारणा है कि जो मनुष्य जैसा है, वैसा ही पुनरुज्जीवन के दिन उठा खड़ा किया जाएगा। मानव-क्लोनिंग से कर्म और आवागमनीय पुनर्जन्म का भवन पूर्णत: धराशायी हो जाता है और इसके संबंध में अनेकानेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं, जो इसको निर्मूल सिद्ध कर देते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग के प्रो० के. मुरलीधर का कहना है कि यदि मानव-प्रतिरूपण एक बार प्रारंभ हो गया तो जिस देश के पास पूर्व से ही बल, विद्या, बुद्धिवाले व्यक्ति अधिक होंगे उनकी संख्या बढ़ती जाएगी। ऐसा भी हो सकता है कि कई देशों के पास एक ही प्रकार के विद्वान हों जो विध्वंसक हों तो यह विश्व समुदाय के लिए बुरा होगा।

* * * * *

स्वामी सत्य प्रकाशानन्द जी का यह कहना कि आधुनिक जीव विद्या एक असामान्य प्रतिभा तथा एक अत्यन्त जड़बुद्धि के जन्म के संबंध में संतोषजनक कोई व्याख्या नहीं दे पाती, नितांत असत्य है। स्वामी विवेकानंद का कहना है कि 'प्रत्येक मनुष्य के भीतर पूर्ण शक्ति और पूर्ण ज्ञान विद्यमान है। भिन्न-भिन्न कर्म इन महान शक्तियों को जाग्रत करने एवं बाहर प्रकट कर देने के साधन मात्र हैं।' [हिन्दुस्तान (नई दिल्ली), 11 जनवरी 98 को प्रकाशित स्वामी विवेकानंद की कृति के अंश से]

डॉ० एल.पी. मेहरोत्रा एवं डॉ० पी.वी. काणे

डॉ० मेहरोत्रा और डॉ० काणे ने आवागमनीय पुनर्जन्म के संबंध में उठाए जा रहे इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया है कि धरती की जनसंख्या बढ़ती जा रही है, पर अतिरिक्त जीव कहां से आते जा रहे हैं? डॉ० मेहरोत्रा कहते हैं कि 'मुझे कतिपय पंडितों एवं विद्वानों से बात करने का अवसर मिला। उनका कहना है कि हमारे वायुमंडल से नए-नए सूक्ष्म शरीर प्रस्फुटित होते रहते हैं, जिनके कारण जनसंख्या में वृद्धि होती रहती है। मनुष्य के पार्थिव शरीर में वायु ही प्राण फूंकती है। बग़ैर प्राण के पार्थिव शरीर का संचालन नहीं हो सकता है। यही प्राण ही सूक्ष्म शरीर का स्वरूप है और जब वह शरीर से निकल जाता है तो

मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। अत: इस प्रकार नए-नए सूक्ष्म शरीर की उत्पत्ति जनसंख्या की वृद्धि का कारण होना स्वाभाविक प्रतीत होता है, पर यह कल्पना एक अनुमान है।' ('पुनर्जन्म भी होता है ?', पृ० 151)

डॉ० मेहरोत्रा ने जनसंख्या वृद्धि के और भी तर्क दिए हैं, पर किसी को प्रामाणिक नहीं बताया है। यह उनकी सत्यवादिता का प्रमाण है। वे लिखते हैं कि 'जनसंख्या वृद्धि की वास्तविकता क्या है, यह अब भी उतना ही पेचीदा प्रश्न बना हुआ है।'

डॉ० काणे कहते हैं कि कतिपय प्राणियों की जातियां समाप्त हो गई है और बहुत से जीव समाप्त हो रहे हैं, यथा-सिंह। जो लोग कर्म-सिद्धांत में विश्वास करते हैं, ऐसा कह सकते हैं कि जो जीव पशुओं के रूप में थे अब मानवों के स्वरूप में आ रहे हैं, क्योंकि बुरे कर्म, जिनके फलस्वरूप वे निकृष्ट कोटियों में विचरण कर रहे थे, अब नष्ट हो रहे हैं।

(धर्मशास्त्र का इतिहास, पंचम भाग, पृ० 386)

☐ डॉ० मेहरोत्रा को नए-नए सूक्ष्म शरीर से सीधे मानव रूप में जन्म स्वाभाविक प्रतीत होता है, पर उन्होंने यह नहीं बताया कि सूक्ष्म शरीर किसके हैं और क्या हैं ? हां, यह सच है कि देश में पहले मच्छर कम ही दिखाई पड़ते थे, अब झुंड के झुंड पता नहीं कहां से आ रहे हैं। कहीं सूक्ष्म शरीर यही तो नहीं हैं ?, जो बड़ी बड़ी संख्या में 'मैट' और मच्छरमार द्रव्यों से मारे जाते हों और तत्काल मानव-रूप में जन्म लेकर जनसंख्या बढ़ाने का कारण बन जाते हों ! डॉ० मेहरोत्रा ने अपनी पुस्तक में 27 केसों को वर्णन किया है, पर अफ़सोस है कि इनमें से एक भी सूक्ष्म शरीर से नहीं जन्मा ! आज का अधिकतर इन्सान बुरे कर्मों में लिप्त है, फिर भी पता नहीं क्यों जनसंख्या बढ़ रही है ?

डॉ० काणे पशुओं के नष्ट होने मनुष्य के पुनर्जन्मित होने को मानते हैं, और वायु पुराण (14.34-37) के माध्यम से यह कहते हैं कि जो व्यक्ति अति पापी होगा, वह निम्नतर अवस्थाओं को प्राप्त होगा—पहले पशु, फिर हिरन, फिर पक्षी, फिर रेंगनेवाला कीट और फिर जंगम (वृक्ष या पत्थर)। उल्लेखनीय है कि गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या शाप के कारण पत्थर हो गई थीं, रामचन्द्र जी के द्वारा वे मानव योनि में देहान्तरित हुई थीं। कठोपनिषद (5.6, 7) में है कि मृत्यु के बाद कुछ लोग वृक्ष के तने हो जाते हैं। उपनिषदों के अनुसार मरने के बाद कुछ लोग धूल-कण भी होते हैं। ऐसे में पशुओं के नष्ट होने से ही मनुष्य की संख्या क्यों बढ़ रही है, बोधगम्य तथ्य नहीं है। माना कि कोई जाति विशेष का जानवर अब

लुप्त हो रहा है, लेकिन दूसरी ओर पशु-पालन भी तो भारत सहित सारे संसार में बड़े पैमाने पर बढ़ा है। डॉ० राधाकृष्णन को कहना पड़ा कि—

"यह संभव है कि पशुओं के रूप में पुनर्जन्म की बात उन लोगों के विषय में एक लाक्षणिक प्रयोग हो जो मानव रूप में पाशविक गुणों वाले होते हैं।"

(An Idealistic View of Life, Ed. 1932, P. 292)

आवागमन को मान्यता देने से तो मां, बहन का जन्म दूसरे जन्म में पत्नी के रूप में संभव है। इसी प्रकार अन्य अनैतिक संबंध भी विकसित होंगे।

गोयन्दका और माधवाचार्य शास्त्री

श्री जयदयाल गोयन्दका अपनी पुस्तक 'परलोक और पुनर्जन्म' (गीता प्रेस, गोरखपुर) में लिखते हैं कि मनुष्य के जीवन में सुख-दुख, व्यवहार, कर्म, लोभ व क्रोध, शत्रुता आदि की कमी और अधिकता, ज्ञान और बुद्धि में जो अन्तर नज़र आता है उससे भी पुनर्जन्म का प्रमाण मिलता है। एक मां-बाप की संतान यहां तक कि एक साथ जन्म लिए हुए बच्चे भी इन बातों में एक-दूसरे से भिन्न पाए जाते हैं। गोयन्दका जी ज़ोर देकर कहते हैं कि पिछले जन्म के स्वभाव और अनुभव के अतिरिक्त इस विभिन्नता का कोई दूसरा कारण नहीं हो सकता। डॉ० मेहरोत्रा ने भी लखनऊ के एक परिवार के लड़कों की बौद्धिक क्षमता व योग्यता की स्वाभाविक भिन्नता को आवागमनीय कर्म का कारण बताया है। (पुनर्जन्म भी होता है?, पृ० 124, 125)। कुछ और विद्वानों ने भी इस प्रकार का पक्ष प्रस्तुत किया है।

□ आइए ज़रा इन तर्कों पर नज़र डालकर देखें कि उनकी हक़ीक़त क्या है। यदि मानव के ज्ञान, बुद्धि, कर्म, सुख-दुख, लोभ, क्रोध आदि में अन्तर न पाया जाए और सभी समान हों, तो मानव जीवन चल ही नहीं सकता। जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न बौद्धिक क्षमताओं और विभिन्न कला-कौशल में रुचि रखनेवाले लोग हों। ईश्वर जीव जगत सहित सारे ब्रह्मांड का निर्माता है। उस पर अन्याय का आरोप भी कोई नहीं मढ़ सकता। वही सृष्टि का संचालक भी है। वह बड़ा तत्वज्ञानी है। वह जिस मनुष्य को जितनी चाहता है, बौद्धिक क्षमता प्रदान करता है और उसी में उसके जीवन की परीक्षा है। अभावग्रस्त व्यक्ति भी सुख का अनुभव करता है और सम्पन्न व्यक्ति भी दुख का अनुभव करता है।

यदि बौद्धिक आदि अन्तर को पूर्व जन्म का फल माना जाता है, तो फिर

अधिकतर मनुष्य जीवन में धोखा, बेईमानी, छल-फ़रेब, भ्रष्टाचार और लूट-मार आदि अनैतिक साधनों के द्वारा धन क्यों कमा रहे हैं? अनियमितता और अमानवीय तरीक़ों से सत्ता तक प्राप्त कर ले रहे हैं, यदि यह धन और सत्ता पूर्वजन्म का फल होती, तो उन्हें सहज ही मिल जाती, अनैतिक कर्म की आवश्यकता ही क्या थी?

यदि उपर्युक्त विद्वानों के तर्क को स्वीकार किया जाए, तो यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि मनुष्य के पूर्व पशु-पक्षी, कीट जगत और वनस्पतियों आदि की रचना हुई। किन्तु यदि इसे मान लिया जाए, तो सहज ही यह प्रश्न उत्पन्न होगा कि आख़िर इनकी सृष्टि किन बुरे कर्मों के कारण हुई? अत: सबसे पहले मनुष्य के जन्म को स्वीकार करने को विवश होना पड़ेगा, जिनके बुरे कर्मों के कारण कीड़े-मकोड़ों, पशुओं और वनस्पतियों की रचना हुई। ऐसे में आवागमनीय पुनर्जन्म पर प्रश्नचिह्न लग जाता है।

आवागमन को मान लेने से यह मानना पड़ेगा कि ग़रीबों, असहायों और विकलांगों आदि की सहायता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वे अपनी करनी की सज़ा पा रहे हैं। इसी में इनका हित है कि वे सज़ा भुगतें, क्योंकि इसके बिना उनका जीवन नहीं सुधर सकता। कितनी अमानवीय और अबौद्धिक मान्यता है यह!

* * * * *

गोयन्दका जी आवागमन के समर्थन के एक और उदाहरण देते हुए कहते हैं कि बच्चा जन्म लेते ही रोने लगता और फिर कभी हंसता, कभी रोता और कभी सोता है। जब मां उसके मुंह में छाती देती है तो उससे दूध खींचने लगता है और धमकी पर भयभीत होकर कांपने लगता है। बच्चे का यह व्यवहार बताता है कि यह उसके पिछले जीवन के कारण है। पिछले जन्म के अनुभव में आए हुए सुख-दुख को याद करके बच्चा हंसता और रोता है और पिछले ही जन्म की मृत्यु के अनुभव के कारण वह कांपने लगता है। (परलोक और पुनर्जन्म)

डॉ० मेहरोत्रा लिखते हैं—

"पुनर्जन्म की सत्यता को स्वप्नों की सहायता से प्रमाणित किया जा सकता है। हम कुछ ऐसे स्वप्न देखते हैं जिनकी वास्तविकता का संबंध इस जीवन की किसी घटना से नहीं जोड़ा जा सकता और जो हमारी कल्पना शक्ति से परे है और न जिसका संबंध फ्रायड के अनुसार हमारे विचारों की प्रतिक्रियाओं और वासनाओं की तृप्ति से है। ऐसी परिस्थिति में यह कहना कि इस जन्म से पूर्व भी

कोई जन्म रहा होगा, जिसकी घटनाएं स्वप्नों में प्रकट होती हैं, अनुचित न होगा। योगियों का कहना है कि हमारे सुषुम्ना नाड़ियों में जन्म-जन्मान्तरों का इतिहास छिपा रहता है और इस प्रकार स्वप्न देखते समय मन उस विगत जीवन की स्मरणीय घटनाओं के खंड में चला जाता है और उन पूर्वजन्म की घटनाओं को सजीव और यथार्थ रूप में स्वप्नों में देखता है। हम सब जानते हैं कि हमारे घर की माताएं जब सोते समय अपने बच्चों को हंसता हुआ देखती हैं तो यह कहती हैं कि वह अपने पूर्वजन्म की बातों को स्वप्न में देख रहा है।"

(पूर्वजन्म भी होता है?, पृ० 126, 127)

□ सबसे पहले हम गोयन्दका जी के तर्क पर दृष्टिपात करेंगे, तत्पश्चात् डॉ० मेहरोत्रा के तर्क पर। दोनों ने मनुष्य के सहज-स्वभाव को पुनर्जन्म से जोड़ा है। यदि बच्चे की गतिविधि को पूर्व जन्म से आबद्ध कर दिया जाता है, तो यह मानना पड़ेगा कि सारे मनुष्य पूर्व जन्म में मनुष्य ही रहे और किसी की भी मोक्ष अथवा मुक्ति नहीं हुई, बल्कि मनुष्य की आबादी ही बढ़ती जा रही है। यदि कोई पूर्व जन्म में पेड़, पौधा, कीड़ा-मकोड़ा आदि रहा होगा, तो वह न हंसेगा, न रोएंगा, न सोएगा और न दूध पिएगा, पर हर बच्चा ईश-प्रदत्त अपने सहज आचार-व्यवहार करता है। बच्चा अबोध होता है, उसकी स्मृति इतनी नहीं होती कि उसकी उसे अनुभूति हो सके। उसका कोई पूर्व जीवन होता भी नहीं और न ही उसकी स्मृति होती है। स्वामी ब्रह्मानंद और स्वामी गुप्तानंद ने बच्चों की स्मृति का अतीत से संबंध का प्रबल खंडन किया है एवं कहा है कि "बच्चे सिर्फ़ और सिर्फ़ वर्तमान में जीते हैं। बच्चों में स्मृति का शनैः शनैः विकास होता है।" यह चिकित्सा-विज्ञान द्वारा भी स्वीकृत तथ्य है। धीरे-धीरे वह प्रबुद्धता की ओर अग्रसर होता है। इसमें उसके जीवन से जुड़ी परिस्थितियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

स्वप्न के संबंध में विशद रूप से अभी तक कोई प्रामाणिक अध्ययन सामने नहीं आ सका है। अलबत्ता कुछ बातों पर सार्थक प्रगति संभव हुई है, जैसे इस निष्कर्ष पर पहुंचा गया है कि दिल-दिमाग़ और पाचन-तंत्र की ख़राबी के कारण लोग अधिक स्वप्न देखते हैं। पाचन शक्ति की ख़राबी हो, बदहज़मी हो तो डरावने स्वप्न दिखाई देते हैं। शारीरिक रूप से यदि इन्सान तकलीफ़ में सो रहा हो, तो बहुत तकलीफ़देह स्वप्न देखता है। मानसिक तनाव की स्थिति में इन्सान स्वप्न में अपने को उड़ते हुए देखता है। होम्योपैथी और दूरनिदान एवं सम्मोहन चिकित्सा पद्धति में तो स्वप्नों के लक्षणों पर भी दवाओं एवं विधियों का चयन

किया जाता है। अमेरिका के कुछ वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि ख़ास दवाएं भी कुछ विशेष प्रकार के स्वप्नों का प्रेरक बनती हैं। प्रयोग के द्वारा यह सिद्ध किया गया कि लैटिन अमेरिका के कुछ लोगों ने हाल्यूसीजन (Hallucigin) नामक दवा खाकर उन अपरिचित जन्तुओं को स्वप्न में देखा जिन्हें पहले कभी न देखा था।

चूंकि शिशु का शरीर वातावरण के प्रति अनुकूलता ग्रहण करता है और इससे शरीरांग की क्रियाएं भी सहज रूप से प्रभावित होती हैं। वह कभी पाचन तंत्र की गड़बड़ी, कभी दांत निकलने और शारीरिक विकास के कारण विभिन्न परिवर्तनों से दो-चार होता है। इसका स्वाभाविक प्रभाव उसकी मानसिक स्थिति पर पड़ता है। इसके कारण भी वह रोता, हंसता और अन्य ‍गतिविधि करता है।

डॉ० मेहरोत्रा ने स्वप्न को पुनर्जन्म से जोड़कर विवेक का परिचय नहीं दिया। क्या मानव अपनी सर्वप्रथम रचना के समय स्वप्न नहीं देखता था? उत्तर होगा : देखता था, पर क्या वह अपने को पशु-पक्षी और वनस्पति बना देखता था, क्योंकि पुनर्जन्म की मान्यता के अनुसार, वह पहले वही अनिवार्यतः रहा होगा? ऐसा कोई पूर्वकालिक उदाहरण नहीं मिलता और न आज ही कोई स्वप्न में स्वयं को कुत्ता, बिल्ली जैसे पशु और कीड़े-मकोड़े एवं वनस्पति के रूप में देखता है। वह स्वप्न में भी जैसा है, वैसा ही देखता है। स्वप्न सामान्यतः उसके वर्तमान के सोच-विचार से जुड़े रहते हैं। प्रसिद्ध मनोचिकित्सक सिडनी क्राउन के अनुसार स्वप्न हमारी दुश्चिंताओं को अभिव्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए अगर कोई व्यक्ति ख़ुद को फालतू या बेकार समझता है, तो उसे अक्सर अपनी असुरक्षा से संबंधित स्वप्न दिखाई देते हैं। उसे अपनी बेकारी से संबंधित स्वप्न प्रत्यक्ष इसलिए नहीं दिखते, क्योंकि स्वप्न संवाद की सांकेतिक भाषा हैं जिन्हें समझने की हमें कोशिश करनी पड़ती है (रोज़र डॉब्सन के लेख से उद्धरित)।

वर्तमान की परिस्थितियां स्वप्न में काल्पनिक धरातल ले लेती हैं। मानव विज्ञानियों के अनुसार, बच्चे में अधिकतर सहज-गुणों का जन्म गर्भावस्था में ही हो जाता है, जन्म के बाद इनका विकास होता है। उसके कुछ गुण तो जन्म के बाद धीरे-धीरे दृश्यमान होने लगते हैं और कुछ आगे चलकर प्रकट होते हैं। बच्चा बाद में ही बोलना और चलना सीखता है। जीव-जन्तुओं, पशुओं के बच्चों में भी उनके स्वाभाविक जाति-प्रवर्ग विशेष गुण विद्यमान रहते हैं।

आवागमन और पुनर्जन्म : बुद्धि, विवेक की कसौटी पर

पिछले विवेचनों से यह बहुत स्पष्ट हुआ कि आवागमनीय पुनर्जन्म के पक्ष में बौद्धिक, वैज्ञानिक और व्यावहारिक तथ्य नहीं जुटते। वास्तव में इसको बुद्धि एवं विवेक की कसौटी पर खरा नहीं उतारा जा सकता। इसके विरुद्ध सहज रूप से बुद्धि-विवेक के आधार पर निम्नलिखित प्रमाण प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

(आवागमन और पुनर्जन्म की अवास्तविकता पर पूर्व विवरणों में अनेक बातें आ चुकी हैं, जिनकी पुनरावृत्ति से यहां बचा जाएगा।)

1. आवागमन की पुनर्जन्मीय मान्यता के अनुसार पशु, पक्षी, वनस्पतियां आदि पाप कर्म का परिणाम हैं। मतलब यह हुआ कि पाप और गुनाह अनिवार्य है और इनके बिना सृष्टि नहीं चल सकती। यदि पाप-कर्म न किए जाएं, तो मनुष्य को दूध न मिले, मांस न मिले, अनाज न मिले, शाक-भाजी न मिले, लकड़ी न मिले और उसके लिए उपयोगी जीव-जन्तु न मिलें। ऐसे में सुख-सुविधा के लिए और भुखमरी, ग़रीबी, बेकारी, कुपोषण आदि समस्याओं से निबटने के लिए पाप-कर्म को ख़ूब बढ़ावा दिया जाना चाहिए। कितनी असंयत और अमानवीय है यह मान्यता!

2. यह अन्यायपूर्ण होगा कि अपराध करनेवाले को मालूम ही न हो कि वह किस अपराध (जुर्म) की सज़ा भुगत रहा है। इसका बोध मनुष्य, अन्य जीवों और वनस्पतियों को बिल्कुल ही नहीं होता। पशु-पक्षी और कीट तो अपना स्वाभाविक जीवन गुज़ारते हैं, पेड़-पौधे अपनी नैसर्गिकता में होते हैं। ऐसे पशु भी होते हैं, जो दूध और अन्य योगदान कर पुण्य कमाते हैं, कुछ वृक्ष फल भी देते हैं और छाया भी। यह तो सज़ा नहीं हुई। पशुओं और वृक्षों ने प्रचुर पुण्य कमाया और अपने स्वभाव के अनुकूल रहे। पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े तो मनुष्य की अपेक्षा सुखकर जीवन बिताते हैं।

3. मनुष्य के कर्मों के प्रभाव उसकी मृत्यु के बाद भी पड़ते हैं। अतः बुद्धि-विवेक को यह अपेक्षित है कि उसके अच्छे-बुरे कर्मों का भावी पीढ़ियों पर पड़नेवाले प्रभावों का मूल्यांकन हो, फिर उसे दंडित किया जाए। इसके अभाव में

समुचित सज़ा या पुरस्कार इस लोक में असंभव है।

4. जब व्यक्ति यह समझता है कि वह अपने पूर्वजन्म के कर्मों की सज़ा भुगतने के लिए पैदा किया गया है, तो उसमें आत्मसम्मान, स्वाभिमान और पुरुषार्थ की भावना नहीं जाग्रत होगी, वह क्षोभ, ग्लानि, पछतावे और कुंठा से ग्रस्त जीवन गुज़ारेगा। साथ ही कमज़ोर, अभावग्रस्त लोगों में हीन भावना पनपेगी। इस प्रकार ये चीज़ें व्यक्ति की उन्नति और विकास में बाधक बनेंगी। वह दुनिया में अपने हिस्से के उपभोग से वंचित हो जाएगा। आवागमन की धारणा सांसारिक चीज़ों के प्रति उसकी अरुचि और उपेक्षा को विकसित करेगी। इस प्रकार वह कला- कौशल, ज्ञान-विज्ञान से भी वंचित हो जाएगा।

5. मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां अपनी पुस्तक "परलोक की छाया में" में पुनर्जन्म और आवागमन की हानियों पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं—

"उक्त धारणा के कारण अहंकार को बढ़ावा मिलेगा। जिन लोगों के पास धन और सुख-सामग्री होगी, वे उसे अपने पिछले कर्मों का परिणाम और अपना कारनामा समझेंगे और दीन-दुखियों को उपेक्षा की दृष्टि से देखेंगे। यह नीति आदमी को अभिमानी तो बना सकती है, उसमें विनय और नम्रता की वह भावना नहीं ला सकती जो मानवता के लिए सबसे बड़ी शोभा है।...

पुनर्जन्म की धारणा लोगों को परस्पर जोड़ने के बजाय उनमें भेदभाव पैदा करेगी। कुछ लोग जन्मजात अपेक्षाकृत अच्छे और कुछ पापी एवं अपराधी समझे जाएंगे। इस प्रकार मानवता खंडों में विभक्त होगी। ऊंच-नीच का भेद-भाव जन्म लेगा। कुछ लोग पवित्र और कुछ अपवित्र घोषित किए जाएंगे और यह सब धर्म के नाम से होगा।" (पृ० 144, 145)

6. मानव-शरीर के अंदर अरबों की संख्या में जीवाणु हमेशा निवास करते हैं। जीव वैज्ञानिकों के अनुसार मानव-शरीर में लगभग दस खरब कोशिकाएं हैं। इनमें एक कोशिका वाले जीवाणु भी शामिल हैं। इन जीवाणुओं में 90 प्रतिशत बड़ी आंत के निवासी हैं। दक्षिण इंग्लैंड स्थित टेडिंग यूनीवर्सिटी के प्रो० ग्लेन गिब्सन का कहना है कि "किसी भी मनुष्य की बड़ी आंत में सूक्ष्म जीवों की कौन-सी क़िस्में मिलती हैं, इसे जांचने पर पता चला कि काफ़ी लंबे समय तक समान क़िस्में ही बनी रहती हैं। लेकिन खान-पान में बदलाव लाने और लंबे समय तक एंटीबायोटिक दवाएं इस्तेमाल करने से यह स्थिरता भंग हो जाती है।" जीवाणुओं की स्थिरता भंग होने से स्वास्थ्य के लिए संकट उपस्थित हो जाता

है। आवागमन और पुनर्जन्म की मान्यता इस अध्ययन के अनुकूल नहीं है। आख़िर जीवाणु किस पूर्व कर्म को मानव-शरीर के अन्दर रहकर दुख भोग रहे हैं और उनकी आत्मा का मानवात्मा से क्या संबंध है? पुनर्जन्म का सिद्धांत कीट-जीवाणु को आत्मावान बताता है।

7. आवागमन या पुनर्जन्म की धारणा को मान लेने से हिन्दू भाइयों की अवतारवाद की धारणा प्रभावित हो जाती है। विष्णु के अवतारों के जीवन में दुख और शोक पाया जाता है। क्या ये उनके पूर्व जन्म के परिणाम हैं? अवतारवाद की धारणा के अनुसार केवल देवी-देवता ही नहीं धर्म गुरु, संत एवं राजा-रानियां आदि भी स्वेच्छा से अवतार ग्रहण करते हैं।

उदाहरण के रूप में, रुक्मिणी को लक्ष्मी का अवतार, जाम्बवती को पार्वती का अवतार, सत्या को तुलसीदास का अवतार, सत्यभामा को पृथ्वी का अवतार, दुर्योधन को कालिका का अवतार माना जाता है। महात्मा बुद्ध का 'बोधिचर्यावतार' मशहूर है। निम्बार्काचार्य को सुदर्शन चक्र, विष्णु स्वामी को कृष्ण अवतार, रामानन्द को सूर्य (कहीं पर कपिल) अवतार, वल्लभाचार्य को वैश्वानर अवतार कहा जाता है। सूर्य प्रकाश (ऋतु 5, अंशु 51) के अनुसार सिख गुरु गोविन्द सिंह को भी अवतार ठहराया जाता है। मालती नामक राजकुमारी को शशि/अप्सरा अवतार कहा गया है (चित्रावली, पृ० 201)। पद्मावती को चन्द्रमा का, सुजान को शिव का, माधवानल को काम का, कामकंदला को रति का अवतार कहा गया है। यहां तक कि कुछ लोगों ने नरसिंह राव को जब वे प्रधानमत्री थे, धर्म ठाकुर का अवतार घोषित कर दिया।

अंशवाद भी पुनर्जन्म की धारणा से मेल नहीं खाता। ख़ुद की इच्छा से अवतार का आंशिक अवतार के रूप में जन्मना पुनर्जन्मीय धारणा के एकदम विरुद्ध है।

8. शाप की भी पुनर्जन्म की मान्यता से संगति नहीं बैठती। हिन्दू धर्मानुसार, शाप का भाजन मात्र जीव को ही नहीं, अपितु देवता, गन्धर्व नाग-किन्नर यहां तक भगवान् को बनना पड़ता है। नारद के शाप के कारण रामचन्द्र जी ने नर-शरीर धारण किया था एवं प्रियावियोग सहन किया (रामचरित मानस)। श्री कृष्ण भी मनुष्य जन्म पाकर दुखी थे। अपने प्रभु के समक्ष अपना दुख प्रकट करते हुए वे कहते हैं—"हे दुखनाशक! मनुष्य जन्म पाकर मैं दुखित हूं। हे काम दाहक! गर्भवास में मैंने भारी दुख उठाया है (देवी भागवत पुराण 4-25-43, 44)। शाप

वश ही शंकर जी के गणों को भी रावण और कुम्भकर्ण के रूप में जन्म लेना पड़ा। इन्द्र के शाप से कुमुद, केशी नामक कंस का घोड़ा बना, यमराज के शाप से इक्ष्वाकु राजा का बेटा नृग दूसरे जन्म में नृगराज नामक गिरगिट बना, ब्रह्मा जी के शाप से श्रीकृष्ण के छह भाई—स्मर, उग्दीथ, परिष्वंग, पतंग, क्षुद्रभृत और घृणि—हिरण्यकशिपु के पुत्र के रूप में असुर योनि में पैदा हुए। राजा सहस्त्राक्ष ने जब ऋषि दुर्वासा का अभिवादन नहीं किया, तो उन्होंने राक्षस हो जाने का शाप दे दिया, जिसके कारण अगले जन्म में वे कंस के मित्र तृणावन्त के रूप में पैदा हुए। शाप-कथाएं आवागमन और पुनर्जन्म के इसलिए भी विरुद्ध हैं कि इनसे स्वयं हिन्दू धर्म के धर्म-सिद्धांत की अवहेलना होती है। शाप-कथाओं के अनुसार, आदमी को सुधरने और प्रायश्चित करने का कोई अवसर उपलब्ध नहीं है। इनसे एक विशिष्ट वर्ग की प्रधानता की बू भी आती है।

9. आत्मा को बुलाने के दावे में यदि कोई सच्चाई है, तो इससे भी आवागमनीय पुनर्जन्म का खंडन होता है।

आवागमन-सिद्धांत के अनुसार आत्मा जब विभिन्न योनियों में भटकती रहती है, तो वह बुलाने से कैसे आ सकती है? यदि वह इस चक्कर से निकलकर मुक्त हो गई और परमधाम को प्राप्त हो गई तो वह बुलाने से कैसे आ सकती है? वास्तव में प्लेन चिट पर आत्मा बुलाने का कार्य हाथ की सफ़ाई मात्र है, जिसका वास्तविकता से कोई सरोकार नहीं है। यह धंधा विदेशों में भी फैला हुआ है। पेंग्विन बुक्स द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'साइकिल रिसर्च टुडे' में इसकी वास्तविकता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

10. जब मनुष्य को यह मालूम होगा कि उसके दुख पूर्वजन्म के फल हैं और वह पहले कीट अथवा पशु वर्गीय योनि में था, तो स्वाभाविक रूप से उसका जीवन हीन और ग्लानि भावना से भर जाएगा। ऐसे में उसकी उन्नति रुक जाएगी। वर्तमान काल में भी हमारे हिन्दू भाई अपनी जन्म कुंडली/ जन्मपत्री बनवाते हैं, जिनमें किसी-किसी में ज्योतिषी जी यह लिख देते हैं अथवा कम्प्यूटर पर टाइप कर प्रिंट निकाल देते हैं कि अमुक व्यक्ति की पूर्व योनि अमुक—कुत्ता, बिल्ली, चूहा, बैल, पक्षी आदि थी। यह तथ्य विवाह के समय लड़का-लड़की की कुंडली- गणना का प्रमुख आधार बनता है। इससे तो कुंडली- धारक का जीवन कुंठाग्रस्त हो सकता है।

11. अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूं) और 'आत्मा ही परमात्मा है' एवं 'आत्मा ईश्वर का अंश है'—हिन्दू धर्म के इन सभी दार्शनिक वाक्यों की समीचीनता पर

आवागमनीय पुनर्जन्म के कारण सवालिया निशान लगता है। इस प्रकार की आत्मा यदि हज़ारों निम्न योनियों में भटकती हैं, तो यह निश्चय ही ईश्वर की प्रतिष्ठा और उसके गौरव के अनुकूल बात नहीं होगी। आवागमन की धारणा की स्वामी विवेकानंद और पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के इस कथन के साथ संगति नहीं बैठती है कि इन्सान अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है।

हिन्दू धर्म के कुछ विद्वान भी आवागमन और पुनर्जन्म की धारणा को उसकी अबौद्धिकता के कारण स्वीकार नहीं करते। गायत्री समाज के संस्थापक, चारों वेदों, उपनिषदों, अनेक पुराणों आदि के टीकाकार पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य कहते हैं कि "मनुष्य-जीवन में तो शारीरिक कष्टों के अतिरिक्त मानसिक कष्ट भी हैं, जिनसे उसे अन्य जीवों की तुलना में कम नहीं, अधिक ही त्रास मिलता है। जबकि पक्षी, तितली, मधुमक्खी आदि अनेक जीव-जन्तु सुखपूर्वक जीवन-यापन करते हैं। ऐसी दशा में चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करनेवाली बात कटती है। किन्तु वैज्ञानिकी भ्रूण विकास प्रक्रिया का जो स्वरूप बताया गया है, उसके अनुसार यह भी सिद्ध हो जाता है कि मनुष्य नौ महीने के गर्भवास में ही चौरासी लाख आकृतियां बदल लेता है। इस प्रकार पौराणिक मान्यता के साथ इस वैज्ञानिक विवेचना की संगति बैठ जाती है।" ('अखंड ज्योति', जनवरी 1986)

सोमा सबलोक जी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आत्मा और पुनर्जन्म' में पृष्ठ 22, 23 पर लिखती हैं—

"पूर्वजन्म की बातों को बताने का फ्राड हमेशा पांच वर्ष से ऊपर के बच्चे द्वारा ही करवाया जाता है। इससे कम की उम्र वाले द्वारा नहीं। यदि पूर्वजन्म की घटनाओं के याद होने की बात मान भी ली जाए तो जो स्मृति पांच साल के बाद वाले बच्चे में होगी, वही पहले में भी होगी। यदि पूर्वजन्म की बातों को बताने का कोई अलौकिक चमत्कार बाद में होता है तो वह पांच वर्ष से पहले भी होना चाहिए। बच्चों द्वारा पूर्वजन्म की बताई जानेवाली कहानियों में जितने वैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक ढंग से परीक्षण किया, उन सबको निराशा ही हाथ लगी और उन्हें कहना पड़ा कि ऐसी कहानियां मिथ्या और निरा धोखा हैं।... इसी प्रकार पिछले जन्म की कहानियां कहनेवाले बच्चों के सभी क़िस्से केवल काल्पनिक और धन कमाने के साधन मात्र हैं।"

अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ के संस्थापकाचार्य स्वामी प्रभुपाद जी पुनर्जन्म-गाथाओं की आलोचना करते हुए लिखते हैं—

"पुनर्जन्म पर लिखा गया अधिकांश साहित्य तथ्यज्ञान पर आश्रित नहीं है,

बहुत कुछ आनुमानिक है, और उथला व अनिर्णीत है। कुछ पुस्तकें उन अनुभवों को प्रस्तुत करती हैं, जो सम्मोहन के प्रभाव से, पूर्व-जन्मों की दमन की गई स्मृतियों तक पहुंच जाते हैं। वे उन घरों का पूरा-पूरा ब्योरा देते हैं जिनमें वे रह रहे हैं, उन सड़कों का जिन पर वे चलते थे, उन बाग़-बगीचों का जिनमें में वे बच्चों के रूप में जाया करते थे, और अपने पूर्व-जन्म के माता-पिता, मित्रों और सम्बन्धियों का नाम बताते हैं. . . परन्तु ध्यानपूर्वक की गई खोज-बीन से कई बातें निकल कर आई हैं कि इनमें से तथाकथित पूर्वजन्म प्रत्यावर्तन के बहुत-से मामले ख़याली उड़ानें हैं, त्रुटिपूर्ण हैं, और यहां तक कि धोखाधड़ी है।"

(पुनरागमन, भूमिका, पृ० ख)

वास्तव में स्वामी प्रभुपाद जी का यह कथन विचारणीय है कि "हम आत्मा हैं और इसलिए सनातन हैं। तो हम अपने को जन्म और मृत्यु के विषय में क्यों फंसाते हैं? जो यह प्रश्न पूछता है वह बुद्धिमान माना जाता है।"

('जन्म और मृत्यु से परे', पृ० 16)

नई दिल्ली से प्रकाशित 'The Pioneer' (शनिवार, 7 अगस्त 1999) में 'The Reincarnation Bug' शीर्षक आलेख में श्री पी.एन. बनर्जी ने आवागमन और पुनर्जन्म की धारणा को उपहासजनक बताया है, जिसका तथ्य-निरूपण यहां अमर्यादित होगा। वास्तव में कितने ख़ुशनसीब और बुद्धिमान हैं वे लोग जिनकी धारणाएं ठीक हैं। असम राज्य के अहोम लोग भी यह धारणा रखते हैं कि मृत्यु उपरान्त आवागमनीय पुनर्जन्म नहीं होता, अपितु मृतक की आत्मा धरती और आकाश के बीच एक स्थान पर अपने अंतिम कर्मफल तक विद्यमान रहती है। अहोम लोग मृतक आत्मा की शांति के लिए प्रति वर्ष अनुष्ठान करते हैं। कुछ हिन्दू संप्रदायों में भी मृतक की आत्मा की शान्ति के लिए प्रति वर्ष धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, जो पूरे 15 दिन तक चलता है। इसे 'पितृ पक्ष' कहा जाता है, जो श्राद्ध के नाम से भी विदित है।

कर्म, पुनरुज्जीवन और इस्लाम

मुनष्य को इस लोक में अपने अच्छे-बुरे कर्मों का पूरा-पूरा पुरस्कार एवं दंड नहीं मिल सकता। इसके लिए परलोक का होना अनिवार्य है। विश्व के सभी बड़े धर्मों में परलोक की धारणा पाई जाती है। इस्लाम की शब्दावली में पारलौकिक जीवन को 'आख़िरत' कहते हैं।

इस्लाम की यह धारणा है कि मनुष्य का यह जीवन उसकी परीक्षा की घड़ी है। यह नश्वर जगत है, जिसका एक दिन विनाश होना निश्चित है। शाश्वत जीवन तो 'आख़िरत' (परलोक का जीवन) है। मनुष्य का यह जीवन शाश्वत जीवन के लिए तैयारी का अवसर जुटाता है। यदि मनुष्य अपने जीवन को ईश्वरीय आदेशों के अनुरूप बनाता है, एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व, पारलौकिक जीवन आदि मौलिक धारणाओं को स्वीकार करता है एवं सत्कर्मों में लगा रहकर जीवन व्यतीत करता है, तो उसके लिए अच्छा बदला है और वह जन्नत (स्वर्ग) का पात्र होगा। वहां उसे वास्तविक जीवन, सुख-शान्ति और अमरता प्राप्त होगी। वह इस लोक का अत्यंत विकसित रूप होगा, वहां कोई अल्पता और कमी न होगी। सत्कर्मी इसमें सदैव रहेगा। इसके विपरीत मिथ्याचार में लगे दुष्कर्मी को जहन्नम (नरक) की दहकती आग में डाल दिया जाएगा, जिसमें वह सदैव जलेगा। दुष्कर्मी विभिन्न यातनाओं से भी दो-चार होगा।

इस्लाम पुनर्जन्म नहीं पुनरुज्जीवन (हश्र—Resurrection) को मान्यता देता है। वह मनुष्य के बार-बार जन्म लेने को नहीं मानता, वह मानव-आत्मा के जीव-जन्तु, वनस्पति आदि में परिभ्रमण के विचार को पूर्णतः निरस्त करता है, उसके अनुसार सारे मनुष्य जो मानव जीवन के आरंभ से लेकर क़ियामत के आने के पूर्व तक के होंगे, सभी दोबारा पैदा किए जाएंगे और अल्लाह उनसे उनके कर्मों का हिसाब लेगा एवं कर्मानुसार पुरस्कार या दंड देगा।

"क़ियामत के दिन दर्जे की दृष्टि से सबसे बुरा आदमी वह है जिसने अपनी आख़िरत को दूसरों की दुनिया के पीछे नष्ट कर दिया" (हदीस : इब्न माजा)।

क़ियामत (महाप्रलय) का आना यक़ीनी है (क़ुरआन 15 : 85)। इस दिन अल्लाह सबको इकट्ठा करेगा (क़ुरआन 15 : 25, 2 : 148)। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने क़ियामत के ये लक्षण बताए हैं : ज्ञान उठा लिया जाएगा, अज्ञान अधिक होगा, व्यभिचार की अधिकता होगी, शराब बहुत पी जाने लगेगी। पुरुष

कम स्त्रियां अधिक हो जाएंगी यहां तक कि पचास स्त्रियों का सिरधरा एक (पुरुष) होगा (बुख़ारी, मुस्लिम, अहमद, तिरमिज़ी)। जब सूर (नरसिंघा) में फूंक मारी जाएगी, तो सब अपनी क़ब्रों से निकलकर अपने पालनहार की ओर चल पड़ेंगे (क़ुरआन 36 : 51, 70 : 43)।

क़ियामत के दिन आकाश फट जाएगा, तारे झड़ जाएंगे, सूर्य लपेट दिया जाएगा, पर्वत धुने हुए ऊन की तरह हो जाएंगे, धरती कूट-कूटकर चूर्ण-विचूर्ण कर समतल कर दी जाएगी और जो कुछ उसमें भीतर है उसे बाहर डालकर ख़ाली हो जाएगी। मुर्दे क़ब्रों से उठाए जाएंगे और दिलों के भेद प्रकट हो जाएंगे। लोग बिखरे हुए पतंगे जैसे होंगे (क़ुरआन 82 : 1, 84 : 1, 82 : 2, 81 : 1, 89 : 21, 84 : 4, 100 : 9, 10, 101 : 1-11)।

पुनरुज्जीवन के दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का पूरा-पूरा फल पाएगा। क़ुरआन में है—

"फिर जब 'सूर' में फूंक मारी जाएगी तो उस दिन उनके बीच रिश्ते-नाश्ते शेष न रहेंगे और न वे एक-दूसरे को पूछेंगे। फिर जिनके अच्छे कर्म भारी हुए, तो वही हैं जो सफल होंगे। रहे वे लोग जिनके अच्छे कर्म हल्के हुए, तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। वे सदैव जहन्नम (नरक) में होंगे। आग उनके चेहरों को झुलसा देगी और उसमें उनके मुंह विकृत हो रहे होंगे।" (23 : 101-104)

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया—

"मरनेवाले के साथ तीन चीज़ें चलती हैं : उसके घरवाले, उसका माल और उसका कर्म। फिर दो चीज़ें तो पलट आती है और एक साथ रह जाती है। उसके घरवाले और माल तो वापस आ जाते हैं और उसका कर्म साथ रह जाता है" (बुख़ारी, मुस्लिम)।

"(उनके समक्ष) कर्म-पत्र रखा जाएगा, तो अपराधियों को देखोगे कि जो कुछ उसमें होगा उससे डर रहे हैं और कह रहे हैं : 'हाय, हमारा दुर्भाग्य ! यह कैसी किताब (कर्म-पत्रिका) है कि यह न कोई छोटी बात छोड़ती है और न बड़ी, बल्कि सभी को इसने अपने भीतर समाहित कर रखा है।' जो कुछ उन्होंने किया होगा सब मौजूद पाएंगे। तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा।" (18 : 49)

उस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने भले कर्म को सामने मौजूद पाएगा और बुरे को भी। जो कुछ उसने कमाया होगा, पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कोई अन्याय न होगा (3 : 30, 25)। उस दिन उसके न माल काम आएगा और न संतान (26 : 88)। ख़ुद इन्सान के हाथ, पैर, आंख, जिह्वा और सारे अंग गवाही

देंगे कि उनसे उसने किस प्रकार काम लिया (36 : 65, 41 : 20-24)।

अल्लाह कहता है—

"और क़ियामत के दिन हम न्याय-तुला रखेंगे, फिर किसी व्यक्ति पर तनिक ज़ुल्म न किया जाएगा, यद्यपि वह (कर्म) राई के दाने ही के बराबर हो, हम उसे ला उपस्थित करेंगे। और हिसाब करने के लिए हम काफ़ी हैं।" (21 : 47)

वह दिन सत्कर्मी के लिए सुगम और दुष्कर्मी के लिए कठिन होगा। क़ुरआन में है—

"जो कोई सुचरित लेकर आया उसको उससे भी अच्छा प्राप्त होगा, और ऐसे लोग घबराहट से उस दिन निश्चिन्त होंगे। और जो कुचरित लेकर आया तो ऐसे लोगों के मुंह आग में औंधे होंगे।" (27 : 89, 90)

"फिर जिस किसी को उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, उससे आसान, सरसरी हिसाब लिया जाएगा, और वह अपने लोगों की ओर ख़ुश-ख़ुश पलटेगा। और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र (उसके बाएं हाथ में) दिया गया, जिसको (उसने) पीठ पीछे डाल रखा था, तो वह विनाश को पुकारेगा और दहकती आग में जा पड़ेगा।" (84 : 7-12)

"वास्तव में घाटे में पड़नेवाले तो वही हैं, जिन्होंने अपने आपको और अपने लोगों को क़ियामत के दिन घाटे में डाल दिया। जान रखो, यही खुला घाटा है।" (39 : 15)

जन्नत (स्वर्ग)

जन्नत के पात्र वही व्यक्ति होंगे, जिन्होंने जीवन भर अल्लाह की बन्दगी करते हुए अच्छे कार्य किए होंगे। अल्लाह का यह वादा है—"वे लोग जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उन्हें हम जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहां वे सदैव रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है, और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन हो सकता है?" (क़ुरआन 4 : 122)

जो लोग ईमान लाए अर्थात् मुस्लिम हुए और अच्छे कर्म किए, तो उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला बदला है (95 : 6)। उसे कोई नहीं जानता जो आंखों की ठंडक उनके लिए छिपा रखी गई है उसके बदले में देने के ध्येय से जो सुकर्म वे करते रहे होंगे (32 : 17)। ईमानधारियों और सुकर्मियों को उनका रब (पालनहार) मार्गदर्शन करेगा (10 : 9)। अल्लाह उनसे राज़ी होगा और वे अल्लाह से राज़ी होंगे (98 : 8, 5 : 119)। उन्हें अल्लाह का दीदार (दर्शन) भी होगा।

एक हदीस में है—

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत (उल्लिखित) है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जबकि जन्नतवाले जन्नत की नेमतों में होंगे, सहसा उनके लिए एक नूर रौशन होगा सो वे अपने सिर उठाएंगे तो क्या देखेंगे कि उनका रब (पालनकर्ता प्रभु) उनके ऊपर प्रगट है। अल्लाह कहेगा : 'तुम पर सलाम हो, ऐ जन्नतवालो !' नबी सल्ल० ने कहा कि यही अल्लाह तआला के इस कथन का अर्थ होता है—'सलाम है, दयामय रब का उच्चारित किया हुआ' (क़ुरआन 36 : 58)। आप सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला उनकी तरफ़ देखेगा और वे उसकी तरफ़ देखेंगे। फिर वे जब तक अल्लाह की तरफ़ देखते रहेंगे, जन्नत की किसी नेमत की ओर ध्यान नहीं देंगे, यहां तक कि अल्लाह उनसे परदे में हो जाएगा और बाक़ी रह जाएगा उसका नूर। (इब्न माजा)

अल्लाह के परायण और उससे डर रखने वाले सुगन्धित फूल और नेमत भरे उद्यान में होंगे, उनके लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे (56 : 89, 18 : 107)। उनके लिए ऊपरी मंज़िल पर कक्ष होंगे, जिनके ऊपर भी निर्मित कक्ष होंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी (39 : 20, 29 : 58)। वे जो चाहेंगे मिलेगा, उसमें वे सदैव रहेंगे (25 : 16, 41 : 31)। उन्हें वास्तविक शांति और निश्चिन्तता प्राप्त होगी (44 : 51)। वे बाग़ों और स्रोतों में बारीक़ और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए एक-दूसरे के आमने-सामने उपस्थित होंगे (44 : 52, 53)। उनके लिए सुख-वैभव की चीज़ें होंगी। वे और उनकी पत्नियां छायों में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे (36 : 55, 56)। उन्हें सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किया जाएगा (35 : 33, 76 : 21)। उनके लिए सोने और चांदी के बरतन होंगे (43 : 71, 76 : 15, 16)। अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए वह कुछ जुटा रखा है जिसको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी मनुष्य के मन में उसका विचार आया (हदीस : बुख़ारी)।

जन्नत में न तो सख़्त धूप होगी और न सख़्त ठंड (76 : 13)। फलों से लदे हुए पेड़ होंगे, अंगूर के बाग़ होंगे, मनचाहे मेवे होंगे (76 : 13, 14, 78 : 32, 77 : 42)। साफ़, गोरी, बड़ी नेत्रों वाली स्त्रियों से उनका विवाह होगा (44 : 54)। उनके पास निगाहें बचाए रखनेवाली, सुन्दर आंखों वाली स्त्रियां होंगी (37 : 48, 49)। उनके लिए हरे रेशमी गद्दे और उत्कृष्ट एवं असाधारण क़ालीन होंगे, क़ालीनें हर ओर बिछी होंगी (55 : 76 : 88 : 16)। उन्हें वहां इच्छित मेवे और पेय मिलेंगे, उनके बीच विशुद्ध पेय का पात्र फिराया जाएगा, बिल्कुल साफ़ उज्ज्वल, पीनेवालों के लिए सुस्वादु, छलकता जाम होगा, उसमें न कोई ख़ुमार

होगा और न वे उससे निढाल और मदहोश होंगे (38 : 51, 37 : 45-47, 78 : 31-36)। उन्हें मुहरबंद विशुद्ध पेय पिलाया जाएगा, जिसमें 'तसनीम' का मिश्रण होगा (83 : 25, 27)। जन्नत में ऐसे पानी की नहरें होंगी जो प्रदूषित नहीं होगा। ऐसे दूध की नहरें होंगी जिनके स्वाद में तनिक भी अन्तर न आया होगा और ऐसे पेय की नहरें होंगी जो पीनेवालों के लिए मज़ा ही मज़ा होंगी और साफ़-सुथरे शहद की नहरें होंगी (47 : 15)।

जन्नतवालों के चेहरे प्रफुल्लित और सौम्य होंगे। उनसे नेमतों की ताज़गी और आभा का बोध हो रहा होगा (88 : 8, 83 : 24)। वे कोई व्यर्थ बात न सुनेंगे, और न कोई झुठलाने की बात (78 : 35, 88 : 11)। वे भली-प्रकार सदैव स्वस्थ और सानन्द होंगे। हदीस में है—

"यहां वह स्वास्थ्य है कि बीमार न पड़ोगे, वह जीवन है कि मृत्यु न आएगी, वह जवानी है कि वृद्ध न होगे, और वह आराम है कि फिर तकलीफ़ न पाओगे। लोगों के चेहरे अपने-अपने कर्मों के अनुसार चमकेंगे कोई सितारे की तरह, कोई पूर्णिमा के चांद की तरह।" (मुस्लिम)

जन्नत के संबंध में ऊपर जो विवरण वर्णित हुए हैं, वे स्वाभाविक रूप से प्रत्येक समझदार और विवेकशील व्यक्ति के दिल और अन्तर्मन में इसके प्रति ललक पैदा करने के लिए काफ़ी हैं। हमें अपने आपको जन्नत का पात्र बनाने हेतु गंभीर प्रयास करने चाहिएं। दुनिया में हमें जो अवसर उपलब्ध हुआ है, ईश्वर का आज्ञाकारी बनकर एवं सुकर्म कर उसका समुचित सदुपयोग किया जा सकता है और लोक-परलोक दोनों में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

जहन्नम (नरक)

जहन्नम को नरक और दोज़ख़ भी कहा जाता है, जो दुष्कर्मियों और पापाचारियों का ठिकाना है। इसमें वे अत्यन्त कठिन दुखदायिनी यातना से दो-चार होंगे। क़ुरआन में है—

"कहो : क्या हम तुम्हें उन लोगों की ख़बरें दें, जो अपने कर्मों की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठानेवाले हैं? ये वे लोग हैं जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते हैं कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे हैं। यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता प्रभु की आयतों का और उससे मिलन का इन्कार किया। अत: उनके कर्म जान को लागू हुए, तो हम क़ियामत के दिन उन्हें कोई वज़न न देंगे। उनका बदला वही जहन्नम है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई

और मेरी आयतों एवं मेरे रसूलों का उपहास किया" (18 : 103-106) ।

जिन लोगों ने इहलोक में सत्य के इन्कार की नीति अपनाई, उनको आग के वस्त्र पहनाए जाएंगे, उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा, जिससे जो कुछ उनके पेटों में है, वह पिघल जाएगा और खालें भी, उनको दंड देने के लिए लोहे के गुर्ज़ (गदाएं) होंगे। जब कभी भी वे घबराकर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिए जाएंगे और कहा जाएगा कि चखो दहकती आग की यातना का मज़ा (22 : 19-22, 44 : 48, 32 : 20)। जहन्नम की आग बुझने न पाएगी और अपराधियों को घेरे रहेगी (17 : 97, 18 : 29)। आग उनके चेहरों को झुलस देगी, जिससे वे कुरूप हो जाएंगे (23 : 104)। उनके लिए आग ही ओढ़ना-बिछौना होगा (7 : 41)।

उन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा (47 : 15, 10 : 4)। ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा, जो उनके मुंह भून डालेगा (18 : 29)। उसे खाने को घावों का धोवन, ज़क्कूम के वृक्ष एवं ज़हरीली कांटेदार झाड़ी 'ज़री' का भोजन मिलेगा (69 : 35, 36, 44 : 43, 44, 88 : 6)। उनकी गरदन में तौक़ डाली जाएगी और सत्तर हाथ लंबी ज़ंजीर में जकड़ लिया जाएगा और भड़कती आग में झोंक दिया जाएगा (34 : 33, 69 : 30-32, 76 : 4)।

जहन्नम एक घात-स्थल है। सरकश लोग उसमें न किसी शीतलता का मज़ा चखेंगे और न किसी पेय का सिवाय खौलते पानी और बहती पीप-रक्त के (78 : 21, 24, 25)। वहां वे चिल्लाएंगे, आर्तनाद करेंगे, बिफरेंगे, सांस खीचेंगे और फुंकार मारेंगे, वहां वे सदैव रहेंगे। जब वे किसी तंग जगह जकड़े हुए डाले जाएंगे तो वहां विनाश को पुकारेंगे। (कहा जाएगा :) "आज एक विनाश को मत पुकारो, बल्कि बहुत से विनाशों को पुकारो !" (11 : 106, 107, 25 : 12-14)। जहन्नमी और भी दुखद यातनाएं पाएंगे। वे मानसिक यातना से भी बुरी तरह ग्रस्त होंगे।

"रुजू हो अपने रब (पालनकर्त्ता प्रभु) की ओर और आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाए। फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी। और अनुसरण करो उस सर्वोत्तम चीज़ का जो तुम्हारे रब की ओर से अवतरित हुई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक यातना आ जाए और तुम्हें पता भी न हो।" कहीं ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे : "हाय, अफ़सोस मुझ पर। जो कोताही अल्लाह के हक़ में मैंने की। और मैं तो परिहास करनेवालों में ही शामिल रहा।"

(क़ुरआन 39 : 54-56)

सम्मतियाँ

आवागमनीय पुनर्जन्म: हिन्दू मनीषा के लिए अशोभनीय

'आवागमनीय पुनर्जन्म की वास्तविकता' (कान्ति, सितम्बर 1999) में आपने पुनर्जीवन (पुनरुज्जीवन) पुनर्जन्म और आवागमन के संकल्पों को बहुत सुन्दर और हृदयंगम ढंग से निरूपित किया है। वेदों में जिस प्रेत्यभाव (परलोक) के संकेत हैं, वह एक तरह का पुनर्जीवन ही है। परन्तु हिन्दू मनीषा इस तथ्य को बहुत देर से भूल चुकी है। आपका यह कथन बिल्कुल ठीक है कि यह मौलिक धारणा तदनन्तर फीकी पड़ गई और आवागमन वाले पुनर्जन्म ने अंततः इसका स्थान ले लिया।

आपने जो राहुल सांकृत्यायन, डॉ० राधाकृष्णन, सत्यकाम विद्यालंकार आदि के कथन/वचन उद्धृत किए हैं, वे यद्यपि वेदों में आवागमन का अस्तित्व नकारते हैं तथापि पुनर्जीवन के संकल्प को रेखांकित करने में असफल रहे हैं। पं० दुर्गा शंकर महिमवत् सत्यार्थी ने जैसे स्पष्ट तौर पर अपने लेख का शीर्षक "वेद और पुनर्जीवन" लिखा है, वैसे प्रयास बहुत कम हुए हैं।

वैदिक साहित्य में पुनर्जीवन की बात थी। बाद में उसने 'पुनर्जन्म' का रूप ले लिया, जिसके अनुसार मृत्यु के बाद इसी संसार में व्यक्ति एक बार पुनः जन्म लेता है, जैसा कि छान्दोग्य उपनिषद् (5-10-7) से संकेत मिलता है। यही पुनर्जन्म बाद में पुराणों में आवागमन बन गया और एक व्यक्ति को इसने 84 लाख योनियों में घुमाने का कार्यक्रम तैयार कर दिया और 'संसरति देही' आत्मा एक शरीर से, एक योनि से, दूसरी में जाती है—ऐसी घोषणा कर दी। पुराणों का यह सिद्धांत 'जन्मजन्मान्तरवाद' कहलाता है। यही हिन्दी के 'आवा' और संस्कृत के 'गमन' से मिलकर 'आवागमन' बन गया। यह खेद की बात है कि मध्यवर्ती 'पुनर्जन्म' के अन्तर्गत पुनर्जीवन और जन्मजन्मान्तरवाद को भी खपा दिया गया। आज हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म की ही बात होती है, परंतु इसकी व्याख्या जन्मजन्मान्तरवाद के अनुसार की जाती है। वेदों के पुनर्जीवन को भी पुनर्जन्म और जन्मजन्मान्तरवाद की छौंक लगाकर पुनर्जन्म बनाकर ही पेश किया जाता

है। यह बौद्धिक-धुंधवाद हिन्दू मनीषा के लिए अशोभनीय है। इससे बचने की आवश्यकता है।

वेदों के पुनर्जीवन से प्रभावित होकर और उनमें प्रचलित पुनर्जन्म (जन्मजन्मान्तरवाद) को कहीं भी न पाकर 1930 ई० में गुरुकुल कांगड़ी के पं० मंगलदेव (तडित्कान्त) वेदालंकार ने "यम और पितर" शीर्षक एक पुस्तक लिखी थी—बड़े आकार की 255 पृष्ठ की, जिसे श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने प्रकाशित किया था। यह पुस्तक प्रचलित मान्यताओं को प्रश्नचिह्नों के घेरे में लाती थी, अत: इसके मुख्य पृष्ठ पर अंकित था—'यह पुस्तक विक्रयार्थ नहीं है।' यह पुस्तक मुझे अपने पिताजी के पुस्तकालय से प्राप्त हुई थी। वे पं० माधवाचार्य के समकालीन थे और सनातन धर्म की ओर से आर्य समाजियों से शास्त्रार्थ किया करते थे, अत: ऐसे विवादास्पद साहित्य का संग्रह करते रहते थे। बाद में यह पुस्तक शायद पुनर्मुद्रित नहीं हुई। इसमें पुनर्जन्म और जन्मजन्मान्तरवाद से हटकर पुनर्जीवनपरक प्रेत्यभाव/परलोक की बातें हैं, परन्तु 'पुनर्जीवन' शब्द का स्पष्ट प्रयोग कहीं नहीं किया गया है। मुझे लगता है कि हिन्दू विद्वानों का बाइबल और क़ुरआन का अध्ययन न होने के कारण उन्हें पुनर्जीवन का सिद्धान्त या तो समझ नहीं आया, या सूझा नहीं। यह भी हो सकता है कि जानबूझकर वे इस सिद्धान्त के प्रतिपादन से बचते रहे हों, क्योंकि वेदों-शास्त्रों के मुक़ाबले उनकी श्रद्धा बाइबल और क़ुरआन शरीफ पर टिकनी ज़रा कठिन ही थी—'विधर्मियों', 'म्लेच्छों' आदि के धर्मग्रन्थ उन्हें कैसे मान्य हो सकते थे?

वैदिक 'पुनर्जीवन' की विस्मृति, पुनर्जन्म के मौलिक सिद्धांत की जन्मजन्मान्तर-वादी व्याख्या और पुनर्जीवन, जन्मजन्मान्तरवाद आदि सबको पुनर्जन्म के अन्तर्गत खपाने की अवैज्ञानिक प्रवृत्ति के दुष्परिणाम स्वरूप हिन्दू मानसिकता पुनर्जन्म से इतनी मोहित हो गई कि 1978 में मेरी पत्नी सोमा सबलोक द्वारा 'सरिता' में लिखे "आत्मा और पुनर्जन्म" शीर्षक लेख पर दिल्ली की तीस हजारी अदालत में मुक़द्दमा दायर कर दिया गया था, क्योंकि उस लेख में पुनर्जन्म की वैधता को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर परखकर रद्द किया गया था। इस केस को 2 दिसम्बर 1983 को अदालत ने खारिज करते हुए लिखा था—"विज्ञान के इस युग में आत्मा के अस्तित्व और पुनर्जन्म के सिद्धांत पर शंका करने और आपत्ति उठाने का प्रत्येक का अधिकार है, क्योंकि ऐसा करना वैज्ञानिक और सुधारवादी विचारधारा पैदा करने की दिशा में क़दम आगे बढ़ाना है, जिसके लिए भारतीय संविधान की धारा 51 (ए) में निर्देश दिया गया है। इसी उद्देश्य को ध्यान में

रखकर लेखिका ने इस लेख द्वारा पाठकों को ज्ञानवान् बनाने का प्रयत्न किया है। यह बात बड़े दुख के साथ कहनी पड़ रही है कि ऐसा प्रयास करने पर लेखिका पर हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का दोष लगाया गया और उसे कई वर्षों तक मुक़द्दमे का सामना करने का कष्ट झेलना पड़ा। यह लेख सच्चाई को खोजने की दिशा में एक यत्न है और यह नहीं कहा जा सकता कि इसे लिखकर हिन्दुओं की धार्मिक भावना को जानबूझकर ठेस पहुंचाने का काम किया गया है। ईसाई, मुसलमान, बौद्ध और दूसरे अनेक धार्मिक मत हैं जो आत्मा और पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास नहीं करते। लेखिका ने जानबूझकर किसी भी तरह हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाई है और न ही कोई अपराध किया है। उसने आत्मा के अस्तित्व और पुनर्जन्म के सिद्धांत को चुनौती देते हुए अपने पक्ष में ठोस दलीलें उपस्थित की हैं। उसने ठीक ही कहा है कि सत्य किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है। और फिर हिन्दू धर्म या क़ानून में कहीं पर घोषित नहीं किया गया है कि आत्मा और पुनर्जन्म में विश्वास करना हिन्दुओं के लिए अनिवार्य है। सत्य सबकी साझी सम्पत्ति है।' (पैरा 10)

ज़हां तक पुनर्जीवन की प्रामाणिकता का प्रश्न है, यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि इसके लिए भी पुनर्जन्म और जन्मजन्मान्तरवाद की तरह शब्द-प्रमाण ही एक मात्र आधार है। इसके लिए तर्क और विज्ञान पर आधारित प्रमाण जुटाने की ज़रूरत अभी बाक़ी है, क्योंकि आज शब्द-प्रयोग का क्षेत्र उत्तरोत्तर सीमित होता जा रहा है। आज लोगों को क़ायल करने की ज़रूरत है, विवश करने या अंधश्रद्धा को पुष्ट करने की नहीं। आपकी लेखनी ने एक गहनतम विषय को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है—बिना किसी दुराग्रह के। आपने लेख के शुरू में छपे पत्र के उत्तर में ठीक ही लिखा है : "जिस निष्कर्ष पर मैं पहुंचा हूं, आवश्यक नहीं कि आप उससे सहमत ही हों।" संवाद को आगे बढ़ाने और सत्य तक पहुंचने के लिए ऐसी बौद्धिक उदारता और ईमानदारी की जितनी आज आवश्यकता है उतनी शायद पहले कभी नहीं थी। धन्यवाद।

डॉ० सुरेन्द्रकुमार शर्मा 'अज्ञात'
एम.ए. (संस्कृत), पीएच.डी. (टेक्सास, अमेरिका)
एम.ए. (हिन्दी), पीएच.डी.
3/57 अज्ञातवास, बंगा-144505 (पंजाब)

आवागमन और पुनर्जन्म की धारणा सिर्फ़ अंधविश्वास

मनुष्य स्वभावतः विचारशील, तर्कशील तथा जिज्ञासा प्रधान प्राणी है। अपने बहिर्गत और आभ्यन्तरिक जगत को लेकर उसके मन में समय-समय पर भांति-भांति के अनेकानेक प्रश्न-प्रतिप्रश्न उत्पन्न होते रहे हैं, मसलन—इतने विशाल संसार का क्या कोई सिरजनहार है और यदि कोई सिरजनहार है तो उसकी विशेषतायें क्या हैं, उसका रूपाकार क्या है, हमारे जीवन का मक़सद क्या है, हमारा यह जीवन जिसका हम वर्तमान काल में उपभोग कर रहे हैं, क्या हमारी पैदाइश के पहले भी था और जिस्मानी मौत के बाद भी क्या हमारा वजूद शक्ल बदलकर आगे तक क़ायम रहेगा, हममें दिली, दिमाग़ी और जिस्मानी तौर पर चलने-फिरने, काम करने, सोचने-समझने, बोलने, महसूसो अहसास करने तथा कल्पना और चिन्तन करने की जो शक्ति है, वह हमें कहां से कैसे हासिल हुई है? वग़ैरह वग़ैरह। इसी से जुड़ा हुआ एक सवाल है जो मानवीय पुनर्जन्म से सम्बन्धित है। पुनर्जन्म से सम्बन्धित यह सवाल मानव मन में सत्य को जानने की दिशा में की गई एक कोशिश है। यह बात अलग है कि इन्सान की दिमाग़ी कोशिश कहां तक मतलब की कामयाब है और कहां तक नाकामयाब। पुनर्जन्म के इसी पूर्वस्थापित सिद्धान्त को जांचने-परखने का सुन्दर सार्थक और सराहनीय प्रयास मासिक 'कान्ति' ने अपने सितम्बर 99 के अंक के रूप में किया है और उसने एतद्विषयक तथ्यों को एक स्थान पर अधिकाधिक संकलित ही नहीं किया और जांचा-परखा ही नहीं, बल्कि उस पर संरचनात्मक दृष्टि से विचार कर पाठकों के समक्ष अपना सर्व ग्राह्य निष्कर्ष भी प्रस्तुत किया है। इस प्रयास में सम्पादक मण्डल का पूर्वाग्रहमुक्त सन्तुलित रचनात्मक दृष्टिकोण सराहनीय कहा जाएगा।

यूं तो मासिक 'कान्ति' के प्रस्तुत अंक में प्रकाशित कई रचनाएं मौलिक, पठनीय और दिलचस्प हैं, मगर 'आवागमनीय पुनर्जन्म की वास्तविकता' शीर्षक लेख काफ़ी परिश्रम और विषयवस्तु का गंभीर अध्ययन करके लिखा गया है। यह ज्ञानवर्द्धक है। विभिन्न धर्मों से उद्धृत तथ्यों तक परामनोवैज्ञानिक अनुसंधानों के प्रकाश में इस लेख में प्रतिपाद्य विषय-वस्तु से सम्बन्धित प्रचुर विचारणीय एवं सारगर्भित सामग्री प्रदान की गयी है। भाषागत क्लिष्टता, मिथ्या पाण्डित्य प्रदर्शन और शब्दाडम्बर से

भरसक बचने की कोशिश करते हुए सम्बद्ध विषय का तर्कसम्मत और बुद्धिग्राह्य प्रतिपादन-विश्लेषण साफ़ सुथरेपन के साथ किया गया है। इस सर्जनात्मक प्रयास हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई। हमें भविष्य में ऐसे और भी अच्छे प्रयास की आवश्यकता है।

अपने प्रकाशन की शानदार, जानदार और गौरवशाली परम्परानुरूप इस अंक में प्रतिपाद्य और विवेच्य विषय का वैज्ञानिक तर्कसम्मत ढंग से तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है। अंक में 'आवागमनीय पुनर्जन्म की वास्तविकता' लेख काफ़ी सारगर्भित, विचारोत्तेजक और ज्ञानवर्द्धक लगा। इसमें विभिन्न धर्मग्रन्थों से सप्रमाण सामग्री उद्धृत कर, अधिकारी विद्वानों के तर्कों के प्रकाश में विषय निरूपण से अंक की उपयोगिता में चार चांद लग गया है।

संसार में ऐसे भी धर्मदर्शन हैं जिनमें मानव जीवन के मरणोपरान्त ईश्वरांशीभूत जीवात्मा के निज गुण कर्मानुसार पुनर्जन्म और आवागमन के सिद्धान्त का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन और निरूपण किया गया है। पुनर्जन्मवादियों की मान्यता और विश्वास के अनुसार प्राणी के भावी जीवन का निर्धारण उसके अच्छे-बुरे कर्मफल के अनुरूप होता है तथा इसी के अनुसार उसका पुनर्जन्म होता है। इस मानव-पुनर्जन्म को प्रतिपादित करने वाली विभिन्न धर्मों में अनेक प्रकार की आख्यायिकाएं और कथाएं प्रचलित हैं जिसके अनुसार शारीरिक मृत्यु के साथ मानव-जीवन धारा का समापन नहीं हो जाता बल्कि वह रूप बदल-बदलकर मृत्यु के उपरान्त भी निरन्तर अविच्छिन्न रूप से प्रवहमान एवं गतिशील रहता है।

आजकल विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं विशेषकर सनसनीखेज अफ़साना छापने वाली मैगजीनों में प्रायः पुनर्जन्म सम्बन्धी घटनायें पढ़ने के मिलती रहती हैं, जिनके सम्बन्ध में कहानीकार लेखक, सम्पादक और प्रकाशक की तरफ़ से यह दावेदारी की गयी रहती है कि यह सत्य समाचार-सूचनाओं तथा वास्तविक विश्वसनीय तथ्यों पर आधारित है। इस प्रकार की पुनर्जन्म सम्बन्धी कहानियों में आम तौर पर यही दिखाया जाता है कि फ़लां ज़िले के फ़लां गांव में एक ऐसा बालक है जिसकी उम्र 2 साल की है और उसकी याददाश्त काफ़ी तेज़ है। उसे अपने पूर्वजन्म की सारी बातें हूबहू कंठस्थ हैं। पिछले जन्म में उसकी मौत गोली लगने से हुई थी जिसके निशान उसके जिस्म पर इस जन्म में भी मौजूद हैं।

पहले तो बालक के मुख से तोतली ज़ुबान से पूर्वजन्म का हाल सुनकर उसके माता-पिता को विश्वास नहीं हुआ, मगर जब वे उसे लिवाकर उसके पूर्वजन्म के गांव गये तो वह गांव की पगडण्डियों, खेत-खलिहान, सीवान, और अपने नरिया

थपुआयुक्त कच्चे मकान के साथ ही परिजन को देखकर पहचान गया वग़ैरह-वग़ैरह। सनसनीखेज सत्यकथा माहवार छापकर मुनाफ़े का अच्छा खासा बिजनेस करने वाली ऐसी पत्रिकाओं की इस प्रकार की पुनर्जन्म सम्बन्धी कहानियों को पढ़कर मन में नाना प्रकार के प्रश्न प्रतिप्रश्न उठने स्वाभाविक हैं। सवाल है—एक 2 साल, 3 साल के बच्चे का दिमाग़, उसकी याददाश्त कितनी तेज़ है कि उसे अपनी पैदाइश से पहले की तमाम वारदातें अगले जन्म में भी याद है? आदमी के दिलो दिमाग़, सपनों, मनोभावनाओं, मनोचिकित्सा, मनोविकृतियों और मनोवेगों का अध्ययन करने वाले मनोविज्ञान के पास इसका कोई समुचित सन्तोषजनक और युक्तिसंगत उत्तर नहीं है कि पूर्वजन्म कैसे और क्यूं होता है और यह सत्य है भी कि नहीं? पूर्व जन्म की घटनायें बालक को ही क्यों याद रहती हैं? क्या यह संभव है कि एक मृत व्यक्ति जिसका सम्पूर्ण पार्थिव शरीर दाह संस्कार में भस्मीभूत होकर विलीन हो गया है, एक दूसरा आगामी जन्म ग्रहण करे और अपने दिवंगत जीवन की समस्त घटनाओं को सूक्ष्म अदृश्य स्मृति स्वरूप अगले जन्म में संवाहन हो जाए?

पुनर्जन्मवादियों के अनुसार व्यक्ति अगले जन्म में अपने अच्छे बुरे कर्मों के अनुसार 84 लाख योनियों में किसी भी योनि में जन्म धारण कर सकता है जबकि आनुवंशिकतावादी वैज्ञानिकों और मनोवैज्ञानिकों के कथनानुसार जो जिस चीज़ का बीज है, उससे उसी चीज़ की उत्पत्ति होती है। मसलन—आम के बीज से आम और अमरूद के बीज से अमरूद की ही पैदाइश होगी। यह नामुमकिन है कि मनुष्य के वीर्य से शेर या शेर के वीर्य से गर्दभ की उत्पत्ति हो जाए। इस स्थिति में यह किस प्रकार स्वाभाविक एवं संभव है कि पिछले जन्म से मनुष्य रूप में पैदा एक व्यक्ति निज कर्म फलानुसार अगले जन्म में कुत्ता, बिल्ली, लोमड़ी या लकड़बग्घा का शरीर ग्रहण कर ले?

वस्तुतः पुनर्जन्म सम्बन्धी कहानियों में चवन्नी भर भी सत्यांश नहीं होता और मानव-मनोरंजन से अधिक इनका मूल्य-महत्व नहीं। कुछ व्यक्ति सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के मक़सद से अपने परिवार के किसी बच्चे को लेकर उसके पुनर्जन्म सम्बन्धी झूठी मनगढ़न्त क़िस्सा-कहानी प्रचारित कर देते हैं। इससे समाज में अन्धविश्वास को बढ़ावा मिलता है।

आवागमनीय पुनर्जन्म का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। अनेक शोधकर्ता वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान और खोज के आधार पर आवागमन वाले पुनर्जन्मवादी सिद्धान्त को बेबुनियाद और काल्पनिक सिद्ध किया है। आश्चर्य का

विषय तो यह है कि अनेक प्रबुद्ध और शिक्षित जन तक को भी पुनर्जन्म के कपोल-कल्पित सिद्धान्त से बुरी तरह चिपके हुए पाया जाता है।

आवश्यकता इस बात की है कि इस प्रकार के अन्धविश्वासों से शीघ्रातिशीघ्र मुक्त होकर हम जीवन सम्बन्धी जो दृष्टिकोण अख़्तियार करें, वह सन्तुलित, सकारात्मक और सुचिन्तित हो।

□ विद्या प्रकाश
(पत्रकार), अचला घाट मार्ग
सिपाह, जौनपुर-222001 (उ०प्र०)

सराहनीय प्रयास

'आवागमनीय पुनर्जन्म की वास्तविकता' विशेष रूप से काफ़ी अच्छा लगा। इसमें लेखक ने विभिन्न धर्मावलंबियों के विचारों को समाहित किया है। लोगों को जानकारी देने का यह एक सराहनीय प्रयास है।'कान्ति' का नवम्बर 99 का अंक भी मिला। पुनर्जन्म विषय पर आधारित लेख अत्यन्त रोचक एवं जानकारीपरक सिद्ध हो रहे हैं। पाठकों के द्वारा प्रकाशित लेख निश्चित रूप से समाज की ग़लत धारणाओं का निराकरण करते हैं। 'कान्ति' का यह प्रयास अपने आपमें अनूठा है, क्योंकि इस पर अभी तक संभवतः किसी हिन्दी पत्रिका ने प्रकाश नहीं डाला है। इस अंक में प्रकाशित डॉ० सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'अज्ञात' का 'आवागमनीय पुनर्जन्म : हिन्दू मनीषा के लिए अशोभनीय', डॉ० मुहम्मद अहमद का विवेचनापूर्ण लेख 'स्वामी दयानन्द सरस्वती का पुनर्जन्म प्रकरण' लेख काफ़ी अच्छे लगे।

'पुनर्जन्म' जैसे महत्वपूर्ण विषय के पूर्ण होने के पश्चात् यदि समाज की किसी ज्वलन्त समस्या जैसे—दहेज प्रथा, भूत-प्रेत जैसे अंधविश्वासों, पत्थर पूजा जैसी ही अन्य विषयों की विवेचना को पत्रिका में स्थान दिया जाए तो देश में व्याप्त कुरीतियों को कम करने में 'कान्ति' का अद्वितीय योगदान हो सकेगा। पत्रिका के स्तर में लगातार सुधार हो रहा है इसके लिए हम आपके अत्यन्त आभारी हैं। पत्रिका की सफलता की कामना करते हुए।

राजकुमार सोनकर
वैज्ञानिक
पो०बा०-464, नागपुर-440010

'तर्कशील' ने भी पुनर्जन्म की घटनाएं झूठी पाईं

आपने 'कान्ति' सितम्बर 99 अंक में डॉ० महाराज कृष्ण जैन के पत्र के उत्तर में 'विशेष प्रस्तुति' में जो विचार और तर्क पेश किए हैं, उनको पढ़कर और निष्पक्ष सोच-विचार के बाद किसी प्रकार का कोई शक बाक़ी नहीं रह जाता। इस प्रस्तुति में धर्मग्रन्थों के हवाले देकर आपने सही दृष्टिकोण को अच्छे तरीक़े से पूरी खोज-पड़ताल से पेश किया है। इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

इस लेख को जितनी मेहनत से तैयार किया गया है, उसका अंदाज़ा एक अच्छे अध्ययन से ही हो सकता है। पुनर्जन्म और पुनर्जीवन के बारे में मैं आपके मत से सहमत हूं। पुनर्जन्म की जितनी बातें सुनने और पढ़ने को मिलती हैं, उनके पीछे मनुष्य का यथार्थवादी स्वार्थ छिपा होता है। इसकी जांच-पड़ताल करने से असली तथ्य सामने आ जाते हैं और असत्यता साबित हो जाती है। इसी प्रकार की बहुत घटनाएं जो झूठी साबित हुई, उनका 'तर्कशील संस्था' ने अपने मैगज़ीन "तर्कशील" में काफ़ी पहले पूरी खोज के साथ प्रकाशित किया है। पुनर्जन्म की सभी घटनाओं में जो प्रश्न किए गए, किसी एक का भी ठीक उत्तर नहीं मिल सका।

पुनरुज्जीवन की बात तो समझ में आती है कि हमारा ईश्वर एक दिन बुरे और अच्छे की पहचान करके न्याय करेगा। पापी को सज़ा और अच्छे को पुरस्कार देगा। यह पुनर्जीवन के साथ संभव है? इसके बिना सत्य तथा असत्य की पहचान नहीं हो पाएगी।

मुहम्मद शरीफ़
प्रवक्ता, पंजाबी
इस्लामिया सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल
मालेरकोटला (पंजाब) पिन-148023

पुनर्जन्म पर बहस

मानने, न मानने के लिए सभी स्वतंत्र हैं। अतः मेरी भी अपने तर्कों के द्वारा आपको पुनर्जन्म की भावना ही चाहिए, यह दलील न होगी। हां, हम पुनर्जन्म को मानते हैं। यह भी मुझे स्वीकारने में गुरेज नहीं कि पुनर्जन्म को मानते हुए भी मैं नहीं चाहूंगी कि हमारा कोई पुनर्जन्म हो। जन्मों का आवागमन दुखदायी है।

जोगेश्वरी सधीर
एस-565, नेहरू नगर
भोपाल (म०प्र०)

अच्छी प्रस्तुति

'कान्ति' का नया अंक (सितंबर 99) मिला, प्रायः सभी लेख प्रशंसनीय है। 'पुनर्जन्म की वास्तविकता' लेख को शास्त्रीय प्रमाणों, कथाओं, मिथ्या-विश्वास के आलोक में बड़ी ही तार्किकता से तैयार किया गया है। यह सम्पादक की प्रतिभा का अच्छा उदाहरण है। मैं स्वयं प्राचीन इतिहास विषय से सम्बद्ध रहा हूं। भारतीय धर्म, संस्कृति के विविध पक्षों पर अध्ययन-कार्य करता रहा हूं। एक विशेष विचारधाराओं के अंक में हिन्दू धर्म के आलोक में विश्लेषण के साथ प्रस्तुत करना अच्छा लगा। पुनर्जन्म पर विशेष आयोजन पत्रिका की गुरुता को बढ़ाता है और पत्रिका के अखिल भारतीय स्वरूप को दर्शाता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि अंक यशस्वी हो।

डॉ० चन्द्रमौलि त्रिपाठी
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास
मनोरमा शुक्ला का मकान,
श्री टाकीज के पास, दक्खिन दरवाज़ा,
पुरानी बस्ती, बस्ती (उ०प्र०)

मैं भी ऐसा ही प्रश्न पूछना चाहता था

आवागमन और पुनर्जन्म के बारे में पढ़ा। सचमुच यह एक तथ्यपरक विश्लेषण है। आपने बड़े अच्छे ढंग से डॉ० महाराज कृष्ण जैन जी के प्रश्न का उत्तर दिया। आपने यह रचना देकर मेरी बड़ी समस्या हल कर दी। मैं ख़ुद आपको पत्र लिखकर पुनर्जन्म के बारे में पूछना चाहता था। मगर मेरे सवालों का जवाब आपकी रचना से मिल गया है। आपने इस रचना से यह साबित कर दिया कि मनुष्य को पुनरुज्जीवन ज़रूर मिलेगा, वह हश्र के मैदान में अपना कर्म-फल लिये खड़ा होगा, मगर उसे पुनर्जन्म नहीं मिलेगा। यह रचना लिखने पर मैं आपको हार्दिक बधाई पेश करता हूं। मेरी बधाई क़बूल कीजिये।

अमजद रफ़ीक़
केलोगेट
मालेरकोटला-148023 (पंजाब)

कल्पित

मेरी आयु 97 वर्ष से अधिक हो गई। मैंने हिन्दू धर्मग्रंथों का जो अध्ययन-मनन किया है, उससे आवागमन और पुनर्जन्म की तार्किकता स्पष्ट नहीं हो सकी

है। ये तो कल्पित चीज़ें लगती हैं। 'कान्ति' की प्रस्तुति उत्तम है।

स्वामी महेश्वरानंद
बेलवादम्मार, बलरामपुर
(उत्तर प्रदेश)

अद्भुत कार्य

आपने अपने आलेख में मेरे विचारों को स्थान दिया है, जिसके लिए धन्यवाद। आपने पुनर्जन्म पर विस्तारपूर्वक विचार प्रस्तुत करके अद्भुत कार्य (Wonderful Job) किया है।

डॉ० एल०पी० मेहरोत्रा
एम०ए०, पीएच०डी०
अवकाश प्राप्त निदेशक, शिक्षामनोविज्ञान
शाला उ०प्र०, इलाहाबाद
लेखक : 'पुनर्जन्म भी होता है ?'
संपर्क : 12/1, सेक्टर ए, पाकेट ए
वसन्तकुंज, नई दिल्ली-110070

तर्कपूर्ण विचार

'कान्ति' का हर अंक मन पर गहरी छाप छोड़ने वाली सामग्री से सम्पन्न होता है। आवागमन ऐसा विषय है जिस पर मत-वैभिन्य है, 'कान्ति' के विचारों से सहमत या असहमत हुआ जा सकता है, परन्तु वे विचार हैं तर्कपूर्ण।

डॉ० राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर'
रीडर, शोध एवं स्नातकोत्तर विभाग
एस.आर.के. (पी.जी.) कालेज
फ़िरोज़ाबाद-283203 (उ०प्र०)

इतना अध्ययन !

पुनर्जन्म पर अत्यधिक परिश्रम, Study (अध्ययन) के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। इतना अध्ययन तो हिन्दुओं का भी नहीं है।

अर्जुन लाल नरेला
एम०ए० (दर्शन शास्त्र), एल०एल०बी०
154, नया बाजार, नीमच-2 (म०प्र०)

भ्रान्तियां दूर हुईं

पुनर्जन्म और आवागमन पर लेख पढ़कर मेरी शंकाएं और भ्रान्तियां दूर हो गईं। मैं इससे पुनर्जन्म और पुनरुज्जीवन का अन्तर अच्छी तरह समझ गयी हूं। हश्र के दिन इन्सान को जो कर्म के आधार पर जन्नत, दोज़ख़ प्राप्त होगा, उस पर मेरा पूर्ण विश्वास है।

शकुन्तला देशमुख
मुंगावली (म०प्र०)

जिसका वजूद ही नहीं है

आपने मेरा पत्र और उसके उत्तर में एक लंबा निबन्ध प्रकाशित करके मुझे इज़्ज़त बख़्शी, इसके लिए मैं शुक्रगुजार हूं।

मुझे यह सोचकर हंसी आई कि जो नहीं है, उस पर विद्वान लोग सोच, पढ़ और लिख कर क्यों वक़्त ज़ाया करें। चर्चा उसकी होती है जिसका वजूद है, जिसका वजूद ही नहीं है उसे नकारने का क्या आशय। यह एक विरोधाभास ही है। ख़ैर।

रही पुनर्जन्म की बात। भगवान बुद्ध ने तो इस प्रश्न को ही असंगत कहा था। यही हम भी सोचते हैं। ।

डॉ० महाराज कृष्ण जैन
संचालक : कहानी-लेखक महाविद्यालय
'शुभ तारिका' (मासिक)
ए-47, शास्त्री कालोनी
अम्बाला छावनी-133001 (हरियाणा)

प्रतिक्रियाएं

कोई सुतर्क भी पेश कीजिए

आवागमन और पुनर्जन्म विषय पर 'कान्ति' मासिक के सितम्बर और नवम्बर 1999 अकों में प्रकाशित सामग्रियों पर हमें अनेक सुधी पाठकों की ओर से उनके विचार, सुझाव और प्रतिक्रियाएं प्राप्त होती रही हैं, जिनके लिए उन्हें धन्यवाद। नवम्बर '99 में पत्रों पर आधारित सामग्री प्रकाशित भी की जा चुकी है। इन सभी सामग्रियों को संपादित करके इस पुस्तक के पहले संस्करण में प्रकाशित किया जा चुका है।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने के बाद पिछले कुछ माह में उपयुक्त विषय पर हमें जो पत्र मिले हैं, उनमें से कुछ पत्रों का उल्लेख करना बहुत आवश्यक मालूम होता है। इन पत्रों में सबसे विस्तार के साथ जो पत्र आया है, वह डॉ० एल.पी. मेहरोत्रा (1211, सेक्टर ए, पाकेट ए, वसंतकुंज, नई दिल्ली-110070) का पत्र है। डॉ० मेहरोत्रा ने 'पुनर्जन्म' भी होता है ?' शीर्षक पुस्तक लिखी है, जिसके अनेक तथ्यों का समीक्षात्मक उल्लेख 'कान्ति' के सितम्बर '99 अंक में किया गया था।

हम यहां डॉ० मेहरोत्रा के पूरे पत्र को तो प्रकाशित करने में असमर्थ हैं, पर उनके तर्कों की यहां अवश्य समीक्षा की जाएगी और वास्तविकता तक पहुंचने का प्रयास किया जाएगा। डॉ० मेहरोत्रा अपने पत्र की शुरुआत करते हुए लिखते हैं—

'कान्ति' में 'आवागमनीय पुनर्जन्म की वास्तविकता' शीर्षक लेख प्रकाशित किया गया है, वह सचमुच सारगर्भित और प्रशंसनीय है। इस सुन्दर लेख के लिए डॉ० मुहम्मद अहमद बधाई के पात्र हैं। हिन्दू धर्म का उनका अध्ययन सराहनीय है। उन्होंने अपने तर्कों-वितर्कों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि पुनर्जन्म एक मिथ्या तथ्य है, पर उनका यह कहना कि 'सभी तथ्य, तर्क और साक्ष्य आवागमन और पुनर्जन्म के विरुद्ध जाते हैं तथा पुनर्जन्म की कोई भी घटना प्रमाणित सिद्ध नहीं होती', उचित नहीं प्रतीत होता है।' मैंने स्वयं बहुत से ऐसे बच्चों का अध्ययन किया है जिन्हें अपने पूर्वजन्म की स्मृतियां थीं। उनके

(डॉ० अहमद के) लेख में मेरी पुस्तक का ज़िक्र है। ऐसा लगता है कि उन्होंने मेरी पुस्तक का अध्ययन निष्पक्ष भावना से नहीं किया वरना वे दृढ़ विश्वास के साथ यह नहीं कह सकते थे कि पुनर्जन्म नहीं होता है।"

डॉ० मेहरोत्रा की उपयुक्त पंक्तियों से यह बात साफ़ मालूम होती है कि महोदय पुनर्जन्म की कल्पना पर अंतिम शब्द लिख रहे हों और उन्हें इसका दृढ़ विश्वास है कि आवागमनीय पुनर्जन्म होता ही है। लेकिन डॉ० मेहरोत्रा अपनी जिस पुस्तक ('पुनर्जन्म भी होता है?') का बार-बार उल्लेख करते हैं, उसके प्राक्कथन में क्या लिखते हैं, आप भी जानिए—

"मेरे द्वारा इस पुस्तक में पुनर्जन्म के संबंध में जो विचार व्यक्त किए गए हैं, इस विषय पर कोई अंतिम वाक्य नहीं है। यह विषय विवादास्पद है और इसमें और अधिक शोध की आवश्यकता है।" (पृ० 4)

इसी पुस्तक के पृ० 159 पर डॉ० मेहरोत्रा लिखते हैं—

"पुनर्जन्म के क्षेत्र से संबंधित और भी कई शोध के विषय हैं, जैसे—पुनर्जन्मित बच्चों में किसी कार्य या कला में विशेष अभिरुचि, किसी विशेष प्रकार के भोजन में रुचि, उच्च कुल से निम्न कुल में जन्म या इसके विपरीत, धनी से निर्धन परिवार में जन्म या इसके विपरीत, योनि परिवर्तन, लड़कियों की तुलना में लड़कों को अधिक पुनर्जन्म की स्मृतियां, पशुयोनि से मनुष्य योनि में जन्म या इसके विपरीत, जनसंख्या वृद्धि आदि। इन विषयों पर सुनियोजित ढंग से शोध करने की आवश्यकता है। यद्यपि भारत के दार्शनिकों एवं मनीषियों ने इनके कारणों की विस्तृत व्याख्या की है पर आज का शिक्षित वर्ग इन सबके लिए वस्तुनिष्ठ प्रमाण चाहता है और यह तभी संभव है जब आज का वैज्ञानिक इन प्रश्नों के उत्तर की खोज में सतत् प्रयत्नशील रहे।"

डॉ० मेहरोत्रा की ये पंक्तियां क्या आवागमनीय पुनर्जन्म पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगातीं? दूसरे और शोधार्थी भी इस विषय पर दृढ़ विश्वास नहीं रखते। ख़ुद डॉ० मेहरोत्रा लिखते हैं—

"बहुत वर्षों से पुनर्जन्म पर शोध कर रहे मेरे विद्वान मित्र डॉ० जमुना प्रसाद से पुनर्जन्म के सिद्धांत की प्रामाणिकता से संबंधित संभावित शोध के विषय पर कई बार चर्चा हुई। उनका कहना है कि यदि पुनर्जन्म होता है तो इसकी पृष्ठभूमि में कोई नियम अवश्य होगा। यह नियम क्या है? इसकी खोज करना नितान्त आवश्यक है। इसके पीछे कौन-सी मैकेनिज्म है?" (पृ० 160)

सत्य हर हाल में सत्य होता है, उस पर असत्य का आवरण अधिक समय तक नहीं डाला जा सकता। डॉ० स्टीवेन्सन के बारे में डॉ० मेहरोत्रा ने स्वयं लिखा है कि वे क्रिश्चियन हैं, अत: वे भी मुसलमानों की तरह (आवागमनीय) पुनर्जन्म में आस्था नहीं रखते, इसलिए उन्हें खुलकर बात कहने में हिचक होती है (पत्र, पृ० 1)।

इसे डॉ० स्टीवेन्सन पर आरोप ही माना जाएगा, क्योंकि वे चोटी के अध्येता रहे हैं और दुनिया में पुनर्जन्म पर उन्होंने ही व्यापक अनुसंधान किया है। ऐसे में उनके निष्कर्षों को उनकी धार्मिक मान्यता से जोड़ देना जहां उनके अनुसंधान-कार्य पर पानी फेरने की कोशिश करना है, वहीं यह अन्याय भी है। अनुसंधान तो अनुसंधान होता है, उसकी स्वतंत्रता और दिशा नहीं बाधित करनी चाहिए।

डॉ० मेहरोत्रा दुहरी बात करते हुए लिखते हैं कि "डॉ० स्टीवेन्सन ने (कई देशों के) तीन हज़ार से अधिक बच्चों का अध्ययन किया है. . . . यदि उन्हें विश्वास न होता तो इन बच्चों के अध्ययन में इतना समय व धन न व्यय करते।" (पत्र, पृ० 1, 2) यह बचकाना तर्क है, अनुसंधान तो अनुसंधान होता है। यदि पहले से कोई जानकारी है, तो अनुसंधान कैसा? अनुसंधान के निष्कर्ष का यदि वास्तविकता से मेल हो जाए तो कोई आश्चर्य या चिन्ता की बात नहीं होनी चाहिए।

सत्य का एहसास डॉ० मेहरोत्रा को भी है। वे लिखते हैं, "डॉ० स्टीवेन्सन जैसे कुछ पाश्चात्य देश के विद्वान इस दिशा में (पुनर्जन्म की स्थापना की दिशा मे) शोध कर रहे हैं। उन्होंने इन सबकी व्याख्या अपनी पुस्तक 'Children Who Remember Previous Lives' में की है, पर वे स्वयं पूर्णरूप से किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सके हैं। हो सकता है कि अपने शोध द्वारा वह भविष्य में इन समस्याओं का कोई प्रामाणिक अन्तर देने में समर्थ हो सकें। यद्यपि उनका कहना है कि कुछ ऐसे विषय है (जैसे पशु योनि से मनुष्य योनि में जन्म) जिनको सत्यापित करना असंभव है।" ('पुनर्जन्म भी होता है?', पृ० 159)

एक और भ्रांति

डॉ० मेहरोत्रा ने मेरे (लेखक के) पास भेजे पत्र में अवास्तविकता पर आधारित एक और तथ्य निरूपित किया है। पत्र के पृ० 2 पर लिखते हैं, "लेबनान और टर्की तो मुसलमान बाहुल्य देश है और वहां के मुसलमान ऐसे

बच्चों के अध्ययन में पूरी रुचि लेते हैं तथा अध्ययनकर्ताओं का पूरा स्वागत करते हैं। जबसे मुसलमान परिवार के बच्चों में पूर्वजन्म की स्मृतियां पाई जाने लगी हैं, तब से मुसलमानों को भी इसमें आस्था होने लगी है, यद्यपि अभी इनकी संख्या बहुत अधिक नहीं है।"

आइए अब सच्चाई से भी परिचित हो जाएं। लेबनान में जिन कथित पुनर्जन्मित बच्चों की डॉ० मेहरोत्रा बात कर रहे हैं, वे मुसलमान नहीं हैं, बल्कि 'ड्रियूज़' (Druze) लोग हैं, जिनके यहां आवागमनीय पुनर्जन्म की मान्यता पाई जाती है, पर उनकी धारणा के अनुसार मनुष्य योनि नहीं बदलता, अपितु मृत्यु के उपरान्त उसका जन्म मनुष्य के रूप में ही होगा। 'ड्रियूज़' लोग अपना नाम अरबी में रखते हैं, जो सहज ही है, क्योंकि उनकी मातृभाषा अरबी है। उनके नाम के आधार पर उन्हें मुसलमान कह देना बहुत बड़ा झूठ और अन्याय होगा।

'ड्रियूज' परिवारों में पुनर्जन्म एक रिवाज के रूप में विद्यमान है। इसे संस्कार कहें तो अनुचित न होगा। ब्रिटेन के वरिष्ठ मनोवैज्ञानिक डॉ० ग्रेसफ्रेंड उस समय आश्चर्यचकित रह गए, जब बेरुत के एक स्कूल एक क्लास में उन्हें जो भी बच्चे मिले, वे सभी पुनर्जन्मी होने के दावे कर रहे थे। उनकी संख्या 50 से 60 के बीच थी। उन्होंने जब अध्ययन करना शुरू किया और काफ़ी समय एवं धन अपव्यय किया, तो उन्हें निराशा ही हाथ लगी। एक-एक व्यक्ति के दो-दो पुनर्जन्मी दावेदार भी सामने आए, मानो आत्मा खंडित हो गई हो।

उन्हें दो मज़बूत केस—रमीज़ और रबीहा के मिले। रमीज़ अपने को पूर्वजन्म में पेप्सी कम्पनी के वाहन का ड्राइवर बताता था और रबीहा अपने को फुटबाल खिलाड़ी साद हिलाली का पुनर्जन्म कहता था। पर जांच में मालूम हुआ कि पेप्सी कम्पनी में उसके बताए नाम का कोई आदमी नहीं काम करता था और फुटबाल खिलाड़ी के बारे में जानकारी रबीहा के पास न थी।

इसी प्रकार टर्की (तुर्की) में जिन बच्चों के कथित पुनर्जन्म की बात डॉ० मेहरोत्रा ने लिखी है, वे बहुत से बच्चे नहीं, अपितु एक बच्चे के बारे में अफ़वाह उड़ाई गई थी। वह भी कई दशक पहले।

पश्चिमी मीडिया ने अडाना ज़िले के इस्माईल के बारे में झूठी कहानी गढ़कर अफ़वाह फैला दी थी, पर वहां न तो संदर्भित गांव मिला और न ही इस्माईल। टर्की में भी किसी भी केस की पुष्टि नहीं हो सकी।

कोई भी मुसलमान आवागमनीय पुनर्जन्म में यक़ीन नहीं रखता। हां, उनका

इस अर्थ में पुनर्जन्म पर दृढ़ विश्वास है कि मृत्यु के बाद अल्लाह सारे लोगों को फिर से ज़िन्दा करेगा और कर्मानुसार उन्हें स्वर्ग या नरक प्रदान करेगा।

यह तो कोई तर्क नहीं हुआ

डॉ० मेहरोत्रा को पुनरुज्जीवन और आवागमनीय पुनर्जन्म में कोई फ़र्क़ नहीं दीखता। बात बहुत आसान है। पुनरुज्जीवन का सीधा मतलब है एक और जीवन और आवागमनीय पुनर्जन्म का मतलब है पशु, पक्षी, इन्सान आदि 84 लाख योनियों में बार-बार का जन्म।

क़ुरआन की सूरह अल-आराफ़ की आयत 29 में पुनर्जन्म का उल्लेख तो है ही, पर वह एक और जीवन-पुनरुज्जीवन है, न कि बार-बार का जन्म। इसी प्रकार डॉ० मेहरोत्रा को फिर से जन्म लेने और बार-बार के जन्म लेने में अन्तर महसूस नहीं होता। बात कितनी आसान है। फिर से जन्म लेने का मतलब है एक और जन्म। बार-बार का जन्म का मतलब है एक के बाद जन्म, फिर जन्म, फिर जन्म ... यानी फिर-फिर जन्म। इस तथ्य को इस प्रकार भी समझिए कि कोई आदमी इलाहाबाद से दिल्ली आता है, तो एक यात्रा पूरी करता है। इस यात्रा को कहा जाएगा कि वह आदमी इलाहाबाद से दिल्ली आया। कुछ अवधि के बाद कभी जब वह इलाहाबाद से दिल्ली आएगा तो कहा जाएगा कि वह फिर इलाहाबाद से दिल्ली आया। यानी उसकी इलाहाबाद से दिल्ली पुनरागमन हुआ। लेकिन यदि वह बार-बार आता है, तो उसे पुनरागमन नहीं कहेंगे, बल्कि आवागमन कहेंगे। अतः फिर को फिर-फिर या पुनः को पुनः-पुनः बना देना न तो व्याकरण की दृष्टि से उचित है, न ही तथ्य की दृष्टि से। इस प्रकार का जो अध्ययन करेगा, वह सच्चाई तक न पहुंच सकता है और न ही उसमें वास्तविकता का बोध होगा। किसी व्यक्ति ने इन्सानियत भूलकर एक बार चोरी की, तो उसे डॉ० मेहरोत्रा क्या बार-बार की चोरी की सज़ा देंगे? और यह बार-बार 84 लाख तक की संख्या तक पहुंचेगा। एक बार जन्म को बार-बार का जन्म कहना पूर्णतः असत्य और हास्यस्पद है।

तर्कहीन बातें

डॉ० मेहरोत्रा ने अपने पत्र में इस पुस्तक में प्रकाशित महापंडित राहुल सांकृत्यायन और डॉ० एम.एन. राय के विचारों को कोरी कल्पना बताया है, परन्तु कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया। होना तो यह चाहिए कि विचारों के खंडन में

प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए, पर केवल यह लिख देना कि अमुक चीज़ कोरी कल्पना है, नितांत अनुचित है। यदि राहुल जी और राय जी के विचार त्रुटिपूर्ण होते, तो हिन्दू समाज में बहुसंख्यक दलित और दलित वर्ग न पाया जाता और न ही उनका दमन व शोषण जारी रहता एवं वे हाथ पर हाथ रखे नियति का चक्र मानकर बैठे न रहते।

डॉ० साहब का यह कथन भी बुद्धि और विवेक से परे है कि "संसार में जितनी भी वस्तुएं हैं, सबमें प्राण है। अत: कोई आश्चर्य की बात नहीं कि व्यक्ति मरकर अपने कर्मानुसार दूसरी योनि में जा सकता है।" (पत्र, पृ० 3)

यह बात कितनी भ्रामक है कि संसार में जितनी भी वस्तुएं हैं सबमें प्राण हैं। ऐसे में तो घर-बाहर की सब वस्तु प्राणधारी हो जाएगी और Living (जीवित) और Non Living (मृत) का भेद ख़त्म हो जाएगा। डॉ० मेहरोत्रा के कथन को स्वीकार कर बच्चे कुत्ता, बिल्ली, गिलास, पेन, कपड़े सभी को Living (जीवित) पढ़ेंगे और कंठस्थ करेंगे।

ये कैसे प्रश्न?

डॉ० साहब ने कुतर्कों की हद कर दी। विषय से अलग हटकर एक ऐसा सवाल दाग़ते हैं जो कि हर पहलू से संबंधित विषय से अलग है। लिखते हैं, "एक हदीस के अनुसार पैग़म्बरों की संख्या एक लाख चौबीस हज़ार है। इसी प्रकार हिन्दू ग्रंथों में चौरासी लाख योनियों की बात की गई है। इसकी सत्यता का क्या प्रमाण है? क्या संपादक महोदय कोई प्रमाण प्रस्तुत कर सकते हैं जिससे हदीस में वर्णित एक लाख 24 हज़ार पैग़म्बरों की संख्या प्रमाणित हो सके? क्या किसी पुस्तक में इनके नामों का वर्णन है। मुझे तो यह लगता है कि यह केवल अनुमान है तथ्य नहीं। इस संसार में अच्छी आत्माओं का जन्म बराबर होता रहता है। यह कहना उचित नहीं मालूम होता कि हज़रत मुहम्मद साहब आख़िरी पैग़म्बर हैं। हो सकता है कि मुसलमान सम्प्रदाय में मुहम्मद साहब के पश्चात् किसी अन्य पैग़म्बर का जन्म न हुआ हो, पर हिन्दुओं में ऐसा कुछ नहीं है।"

डॉ० मेहरोत्रा ने इसमें विषयान्तर से दो प्रश्न उपस्थित किए हैं। हमने अपने लेख में कहीं यह नहीं लिखा कि कोई 84 लाख योनियों के नामों की गणना कराए। हिन्दू धर्म में इन 84 लाख योनियों की सूची कहीं नहीं मिलती। यह सच्चाई है, जिसे सभी को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि विश्वास और आस्था से

जुड़े प्रश्नों को मानव-बुद्धि की कसौटी पर जांचा-परखा नहीं जा सकता। लेकिन जब कोई इस प्रकार की बातें खींच-तान कर रखे जिससे मानव-जीवन में विकार पैदा हो, तो उसका अनुसंधान और वास्तविकता-बोध आवश्यक हो जाता है और फिर आस्था से जुड़े तथ्यों की जाँच-पड़ताल आवश्यक हो जाती है जैसा कि आवागमनीय पुनर्जन्म का प्रश्न है।

हर धर्म किसी न किसी रूप में सर्वोच्च सत्ता ईश्वर में पूर्ण विश्वास करने की शिक्षा देता है, पर कोई कहे कि ईश्वर कहां है, दिखाइए तो क्या कोई दिखा सकता है? जब डॉ० मेहरोत्रा जी लिखते हैं कि "पर ऐसा देखा गया है कि मनुष्य योनि में जन्म लेने के बाद अधिकतर बार-बार मनुष्य योनि में जन्म लेते हैं" तो फिर 84 लाख योनियों का क्या मतलब?

जहां तक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आख़िरी पैग़म्बर होने की बात है, तो यह एक निर्विवाद तथ्य है कि आपके बाद कोई पैग़म्बर नहीं आया है और न आएगा। पैग़म्बर का अर्थ होता है, अल्लाह का सन्देशवाहक, जबकि अच्छी आत्माएं तो आती रहती हैं। हिन्दू धर्म में भी सदियों से कोई अवतार नहीं आया है। नेक और अच्छे लोग तो हर समाज में पैदा होते ही रहते हैं, पर उनकी पैग़म्बर या अवतार से तुलना करना एकदम ग़लत है।

गीता के श्लोक

गीता के श्लोकों की मैंने जो व्याख्या अपने लेख में की है, वह किसी भी दृष्टि से अनुचित नहीं है। डॉ० मेहरोत्रा ने आपत्ति तो की है, पर कोई तर्क पेश नहीं किया है। जब फल की आशा नहीं होगी, तो आदमी काम नहीं करेगा। जब मज़दूर को मज़दूरी नहीं मिलेगी, तो भला वह इतना मूर्ख है कि काम करे। बग़ैर मज़दूरी के काम कराने वाले शोषणकारी होंगे। इसका प्रतिबिम्ब यहां के समाज में दिखाई भी पड़ता है। जहां तक दूसरे श्लोक की बात है, तो उपमा ऐसी दी जाती है जो सटीक हो, न कि ग़लत भावार्थ दे जाए।

डॉ० मेहरोत्रा लिखते हैं, "संपादक महोदय का यह कहना कि यदि हम यह मानकर चलते हैं कि रोग और विकलांगता पूर्वजन्म के कर्मों के फल हैं तो ऐसी दशा में लोग मानवीय दुखों के प्रति निर्ममता की नीति अपनाएंगे और उनकी कोई सहायता नहीं करेगा, किसी प्रकार तर्कसंगत नहीं। क्या ऐसा होता है? कदापि नहीं।" (पत्र, पृ० 3, 4)

डॉ० मेहरोत्रा ने लिखा है कि लोग उनकी सहायता कर पुण्य कमाते हैं, पर सवाल यह है कि पुण्य कहां हुआ। जब संबंधित व्यक्ति को मिल रही सज़ा में सहायता के कारण आसानी या कमी हो जाएगी, तो क्या सज़ा में हस्तक्षेप नहीं हुआ और जब तक संबंधित व्यक्ति सज़ा न काट ले उसे मुक्ति कैसे मिल सकती है? इस प्रकार सहायता करने वाला भी अपराध-कर्म में लिप्त होगा और जिसकी सहायता की उसका भी अहित होगा। यह ईश्वर की अवमानना होगी कि जिसे उसने दंडित किया उस व्यक्ति का दंड कम करने की कोशिश की जाए। इसमें मेल और संगति नहीं है। इसी वजह से ग़रीबों, मुहताजों को सामाजिक मान्यता तक नहीं दी जा सकी। वर्तमान के तथाकथित आधुनिक युग में भी लोग उनके छू जाने पर पानी तक नहीं पीते, उसे दूसरी जातियों के कुएं से पानी नहीं लेने लेते, उसके यहां शादी-विवाह में ज़रा भी रौनक़ आई तो रोकते हैं आदि-आदि, तो फिर उनकी सहायता कहां करते हैं? यदि इन बहुसंख्यकों (दबे-कुचले, दमित लोगों) की लोग सहायता करते, तो ये अपना जीवन-स्तर सुधार लेते। पर ऐसा नहीं है, कोई भी, कहीं भी इस वास्तविकता को देख सकता है। यह सब आख़िर किस शिक्षा का नतीजा है?

कहां है वैज्ञानिकता?

"पुनर्जन्म भी होता है?" पुस्तक में ज़रा भी वैज्ञानिकता नहीं है। इस प्रकार के अध्ययन के तीन पक्ष होते हैं—संबंधित पक्ष, उसके उद्गार से निकले पक्ष और जनता। उक्त पुस्तक में वर्णित 27 केसों में शायद ही इसकी रियायत की गई हो। जैसे, केस नं० 1 का शीर्षक है : "भारत में मृत्यु : इंग्लैंड में पुनर्जन्म"। इसमें गोपाल की गल्प कथा है। इसके अध्ययन हेतु डॉ० मेहरोत्रा को लंदन जाना चाहिए, पर वे नहीं गए। लिखते हैं, "गोपाल ने उस सड़क का नाम भी बताया जहां वह रहता था। उसके पिता की लंदन में कपड़े की दुकान थी। 6 वर्ष की आयु में उसका देहान्त हो गया और वह वहां से देहली आ गया। ख़ून की उल्टी होने से मृत्यु हुई थी, ऐसा वह कहता था। लेखक के लिए इसको सत्यापित करना संभव नहीं था। डॉ० स्टीवेन्सन ने, जिन्होंने भी इस केस का अध्ययन किया था, इसका पता लगाने का प्रयास लंदन में किया था, पर वह संभवतः सफल नहीं हुए।" (पृ० 14)

इस केस का सबसे पहले अध्ययन एच.एन. बनर्जी ने किया था, पर उन्होंने इसमें कोई दम नहीं पाया। इसी प्रकार दूसरा केस है, "लंदन में गला घोंटा, भारत

में पुनर्जन्म"। इसमें भी वैज्ञानिक अनुसंधान का अभाव है। इसी प्रकार अन्य केस हैं। पुस्तक के अंत में डॉ० मेहरोत्रा स्वयं लिखते हैं—

"आज के वैज्ञानिकों के सम्मुख यह एक चुनौती का विषय है और उन्हें कर्म के सिद्धांत की परिकल्पना की प्रामाणिकता के लिए एक ऐसी वैज्ञानिक रूपरेखा की रचना करनी होगी जो इस परिकल्पना की सत्यता पर प्रकाश डाल सके।"

(पृ० 160)

डॉ० मेहरोत्रा ने डॉ० व्यास के अनुसंधान को ग़लत तो कह दिया है, पर उन्होंने क्या अपने 27 केसों में किसी पुनर्जन्मी के मानसिक स्वास्थ्य की जांच कराई है। इसका जवाब भी 'नहीं' में मिलेगा। डॉ० मेहरोत्रा में आत्मा को 'सूक्ष्म शरीर' कहकर अपने अज्ञान की पोल खोल दी है। मैंने तो सूक्ष्म शरीर वाले प्राणियों के बारे में लिखा था (यथा—मक्खी, मच्छर आदि) कि इनमें से कोई प्राणी डॉ० मेहरोत्रा के अनुसंधान में नहीं आया।

वास्तव में मानवीय रिश्ते महत्वपूर्ण होते हैं, न कि जीवित शरीर। यदि शरीर का रिश्ता न हो तो मर्यादा और मानव-मूल्य का क्या महत्व? डॉ० साहब ने 17वां केस "सगी बहन के घर भाई का पुनर्जन्म" लिया है। यह इस प्रकार भी हो सकता है "सगी बहन का पत्नी के रूप में पुनर्जन्म"। इस प्रकार अमानवीय रिश्ते पनपेंगे, जिसकी किसी भी सभ्य समाज में गुंजाइश नहीं है। गोयंदका जी के तर्कों का जवाब पिछले पृष्ठों में दिया जा चुका है। वैसे डॉ० मेहरोत्रा ने ख़ुद लिखा है कि "मैंने तथा श्रद्धेय गोयन्दका ने आवागमन और पूर्वजन्म के संबंध में जो तर्क प्रस्तुत किए हैं . . . उनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।" (पत्र, पृ० 5)

सुतर्क दीजिए

डॉ० मेहरोत्रा लिखते हैं, "संपादक महोदय का यह तर्क बिल्कुल खोखला है कि यदि मानव के ज्ञान, बुद्धि, कर्म, सुख, दुख, लोभ, क्रोध आदि में अन्तर न पाया जाए तो मनुष्य जीवन चल ही नहीं सकता।" इस कथन का क्या आधार है?

डॉ० साहब, कर्मानुसार सज़ा या पुरस्कार मनुष्य को यहीं मिलने लग जाए और उस मनुष्य को पता ही न हो कि उसे किस कर्म की सज़ा मिल रही है या पुरस्कार प्राप्त हो रहा है, तो यह सज़ा और पुरस्कार दोनों का उपहास होगा। जिस तर्क को आप खोखला कह रहे हैं, वह कैसे खोखला है, इसका स्पष्टीकरण आपने नहीं किया। यदि सारे मनुष्यों की भावनाएं, योग्यताएं आदि समान हो जाएं, तो क्या मानव जीवन चल सकता है? कदापि नहीं। ज़रा गंभीरतापूर्वक

चिन्तन-मनन करें, फिर सुतर्क उपस्थित करें।

हिन्दू धर्मानुसार, मनुष्य 84 लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ है। यह निम्न योनियों में अच्छे कर्म करने का परिणाम है। इस लिहाज़ से तो सृष्टि के आरंभ में निम्न योनियां ही रही होंगी और मनुष्य योनि इनके कर्मों के परिणामस्वरूप बनी होगी। फिर अब मनुष्य मरने के बाद मनुष्य ही क्यों पुनर्जन्मित होता है? डॉ० मेहरोत्रा ने अपने अधिकतर केस ऐसे ही दिए हैं। दूसरे और अध्येता भी प्रायः ऐसा ही करते हैं।

अवतार और पुनर्जन्म

डॉ० मेहरोत्रा के शब्दों में, "संपादक महोदय ने अपने लेख में हिन्दू धर्म के तमाम अवतारों को पुनर्जन्म की कसौटी पर कसने की धृष्टता की है। अवतारों का पुनर्जन्म से कोई लेना-देना नहीं है। वे इस संसार में किसी विशेष परिस्थिति में अवतरित हुए और वे सभी ईश्वरीय गुणों से सम्पन्न थे।" (पत्र, पृ० 7)

डॉ० साहब को शायद अवतार और उनकी कोटियों का ज्ञान नहीं। सिर्फ़ विष्णु जी के दशावतार को ही वे शायद अवतार समझते हैं, ज़बकि अवतारों की संख्या बहुत अधिक है यहां तक शिवजी, दुर्गाजी आदि के भी विभिन्न अवतार हैं। और अवतारों की अनेक कोटियां हैं। अवतारवाद के कारण आवागमनीय पुनर्जन्म पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है।

इसी प्रकार शाप का भी आवागमनीय पुनर्जन्म की मान्यताओं से कोई मेल नहीं है। डॉ० मेहरोत्रा ने अपने पत्र में सिर्फ़ "न, न" किया है, कोई तर्क नहीं उपस्थित किया है। अपनी अज्ञानता का परिचय वे स्वर्ग और नरक पर प्रश्न चिन्ह लगाकर भी देते हैं, जबकि यह ऐसी हक़ीक़त है जिसका सभी बड़े धर्मों के ग्रन्थ समर्थन करते हैं। इस्लाम धर्म में भी पारलौकिक जीवन पर विश्वास की मौलिक धारणा पाई जाती है। कोई यह कहे कि जन्नत और दोज़ख़ से संबंधित हर तथ्य की जानकारी इस दुनिया में दे दी जाए और कुछ भी आंखों से ओझल न रहे, तो संभव नहीं। यह तो ईश्वर की इच्छा है कि वह अपने महान प्रयोजन के तहत क्या जानकारी दे, क्या नहीं? ईश्वर ने मनुष्य के लिए जितनी जानकारी की आवश्यकता थी, उतनी बता दी। मनुष्य तो इतना असमर्थ और विवश पैदा हुआ है कि अपने शरीर के बारे में ही सब कुछ नहीं जानता, जिसे वह हर पल लिये-लिये फिरता है, यहां तक कि उसे नहीं मालूम कि सिर में कितने बाल थे और अब कितने हैं? फिर पराभौतिक तथ्यों की जानकारी में वह कितना विवश

होगा, यह सहज ही समझा जा सकता है।

डॉ० मेहरोत्रा को यह समझने में दिक़्क़त हुई है कि जैन धर्म आवागमनीय पुनर्जन्म का कम समर्थक है, बात इतनी ही है कि जिस प्रकार हिन्दू और बौद्ध धर्मग्रन्थों में पुनर्जन्म पर कथाएं आदि मौजूद हैं, उस प्रकार जैन धर्म में सामग्रियों की बहुतायत नहीं है।

पूर्वाग्रह से मुक्त होकर पुनर्विचार करें

डॉ० राजपाल सिंह (स्थान+पो०-जाखौली, ज़िला-सोनीपत-131023, हरियाणा) ने 10 मई 2000 ई० को डॉ० सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'अज्ञात' (बंगा, पंजाब) के पास पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने डॉ० साहब के लेख ('कान्ति', नवम्बर 1999 में प्रकाशित) की प्रशंसा की और आवागमन को 'मिथ्या सत्य' बताते हुए वेद के एक मंत्र का अर्थ पूछा। उन्होंने अपने पत्र में लिखा—

"आपका लेख 'आवागमनीय पुनर्जन्म : हिन्दू मनीषा के लिए अशोभनीय' पढ़ा, तो मन को अपार हर्ष हुआ, धन्यवाद। लेख काफ़ी ज्ञानवर्द्धक था और अर्थ का अनर्थ करके तोड़-मरोड़ कर पेश करनेवालों की भी आंखें खोलने वाला था। जैसे यह जन्म-जन्मान्तर तक भटकनेवाला जीव 84 लाख योनियों से होकर गुज़रता है, उसे ही पौराणिक काल में आवागमन का नाम देकर पारिभाषित किया गया जो कि 'मिथ्या सत्य' है। डॉ० साहब इस मंत्र का अर्थ आपसे जानना चाहूंगा—(यजुर्वेद 40 : 3—मंत्र लिखा गया है)।"

डॉ० सिंह के इस पत्र का उत्तर डॉ० 'अज्ञात' ने निम्नलिखित शब्दों में दिया है—

'कान्ति' के नवम्बर, 1999 के अंक में प्रकाशित मेरे लेख "आवागमनीय पुनर्जन्म : हिन्दू मनीषा के लिए अशोभनीय" पर मुझे जाखौली (सोनीपत) के डॉ० राजपाल सिंह का 10-5-2000 को लिखा पत्र प्राप्त हुआ है। (पत्र की छायाप्रति संलग्न है)। डॉ० सिंह ने रिवायती हर्ष व धन्यवाद प्रकट करने के बाद टिप्पणी की है : 'जैसे यह जन्म जन्मान्तर तक भटकने वाला जीव 84 लाख योनियों से होकर गुजरता है। उसे ही पौराणिक काल में आवागमन का नाम देकर परिभाषित किया गया है, जो कि मिथ्या सत्य है।' अर्थात् उन्हें मेरा यह कथन "मिथ्या सत्य" प्रतीत होता है। तथ्यों और तर्क के आलोक के बावजूद यदि किसी महाशय को मेरा कोई कथन 'मिथ्या सत्य' प्रतीत होता है, तो वह मिथ्या दृष्टि उसे मुबारक।

परन्तु पत्र में आगे एक वेद मंत्र वर्तनी की अशुद्धियों से दूषित रूप में उद्धृत किया गया है और मुझसे उसका अर्थ डॉ० सिंह ने जानना चाहा है। ऐसा नहीं है

कि यह वाक्य जिज्ञासावश लिखा है, बल्कि अपनी ओर से मुझे 'निरुत्तर' करने के लिए यह ब्रह्मास्त्र छोड़ा गया है—इस ख़याल से कि जब मैं इस मंत्र का अर्थ करूंगा तब मैं अनायास ही उस जाल में फंस जाऊंगा जिसे मैंने अपने लेख में छिन्न-भिन्न किया है।

डॉ० सिंह ने जो मंत्र लिखा है (बिना वेद का नाम व मंत्र का पता दिए) वह निम्नलिखित है :

असूर्या नाम ते लौका अन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्याति गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥

यदि डॉ० सिंह ने कान्ति (नवम्बर 1999) के पृष्ठ 25 पर मुझ द्वारा उद्धृत इस मंत्र की ही ठीक से नक़ल कर दी होती तो पहली ही पंक्ति में वर्तनी की दो भूलें न होतीं— 'असुर्या' को 'असूर्या' और 'लोका' को 'लौका' न लिखा जाता। इस प्रमादजनित अशुद्धिद्वय से स्पष्ट है कि डॉ० सिंह वेद-ज्ञान से तो कोरे हैं ही, उन्हें संस्कृत का भी ज्ञान नहीं है। उनकी मानसिकता जन्म-जन्मान्तरों में घूमने वाली आत्मा की कहानी को रद्द किए जाने के कारण अशांत है, क्योंकि अबोध बचपन से जो बातें मां-बाप बच्चों के मनों में अपने भोले-भाव से बिठा देते हैं, उन्हें जब कोई रद्द करता है, तब ऐसी अशान्त अवस्था का आविर्भाव अस्वाभाविक नहीं होता। उपनिषदों में सत्य की खोज को उस्तरे की धार पर चलने के समान बताया गया है। इसका भाव यही है कि पुराने संस्कारों से मुक्त होकर सत्य का साक्षात्कार करना आसान काम नहीं है।

डॉ० सिंह यजुर्वेद के मंत्र को प्रस्तुत करके अपने बचपन के बने संस्कारों को सुरक्षा-कवच पहनाकर आश्वस्त होना चाहते हैं कि जन्म-जन्मान्तरों में आत्मा का आवागमन पौराणिक काल की कल्पना नहीं, बल्कि ख़ुद वेदों का दृढ़ व अपलपनीय सिद्धांत है। परन्तु मुझे बेहद खेद है कि मंत्र के अर्थ डॉ० सिंह की मनःकामना के अनुरूप नहीं जाते।

मन्त्र का सीधा और सरल अर्थ इस प्रकार है : ये असुरसंबंधी लोक अज्ञान से आच्छादित हैं। जो कोई भी आत्मा का हनन करने वाले लोग हैं, वे मरने के अनन्तर उन्हें (अंधकार/अज्ञान से आच्छादित लोकों को) प्राप्त होते हैं।

असुर कौन हैं? शंकर के अनुसार परमात्मा की अपेक्षा देवता आदि असुर हैं, अर्थात् देवताओं के लोक अज्ञान-अन्धकार से आच्छन्न हैं और आत्महत्या करने वाले लोग उन अन्धकार-आच्छन्न लोकों को प्राप्त होते हैं।

यह मंत्र उन मन्त्रों का अपवाद है, जिनमें मृतकों के आनन्दमय लोकों में जाने और वहां तरह-तरह के भोग भोगने का उल्लेख है। लेकिन यह न तो पुनः (एक बार) जन्म लेने का और न बार-बार (आवागमन) जन्म लेने का संकेत करता है। इसमें केवल आत्म हत्यारों के अंधकारमय लोकों में पहुंचने का उल्लेख है अर्थात् मरकर वे वहां जाकर पुनर्जीवित होते हैं। सीधी-सी बात है : अच्छे लोग मरकर आनन्दमय लोकों में जाकर पुनर्जीवित होते हैं, परन्तु आत्म-हत्यारे अन्धेरे में आच्छन्न लोकों में। स्वर्ग और नरक शब्द बहुत बाद में अस्तित्व में आए। ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद में स्वर्ग और नरक शब्द दिखाई नहीं देते। अथर्ववेद में 'स्वर्ग' शब्द तो उपलब्ध होता है, परन्तु 'नरक' शब्द उसमें भी नदारद है। यह जैमिनीय-ब्राह्मण-उपनिषद् में सर्वप्रथम दिखाई दिया है। आनन्दमय लोक बाद में स्वर्ग बन गए और अंधेरे से आच्छन्न लोक नरक।

परलोक के विषय में वेदों के विचार इसी तरह उपयुक्त शब्दावली के अभाव में चलते रहे—कामचलाऊ संकेतों के द्वारा। बहुत बाद में जाकर 'स्वर्ग' शब्द वैदिक ऋषियों को सूझा। 'नरक' शब्द तो बाद में भी उन्हें नहीं सूझा, क्योंकि यह किसी भी वैदिक संहिता में उपलब्ध नहीं होता, अर्थात् वेद 'नरक' लोक के बारे में अज्ञान-अंधकार से आच्छन्न है। इसीलिए वेदों के आधार पर परलोक का वैसा स्पष्ट चित्र नहीं उभरता जैसा कई अवैदिक, विशेषतः, सामी (Semitic) धर्मों ने प्रस्तुत किया है।

अब वैदिक विद्वान् चाहे शब्दों की बाज़ीगीरी द्वारा कुछ का कुछ अर्थ कर लें, लेकिन यथार्थ को वे ईमानदारी से नकार नहीं सकते। यास्क ने कहा है 'न ह्येषु प्रत्यक्षमस्ति अनृषेरतपसो वा' (निरुक्त, 13/12) [मंत्रों का यथार्थ अर्थ उसे ज्ञात नहीं हो सकता जो ऋषि नहीं, जो तपस्वी नहीं]। यह बात अपनी जगह ठीक हो सकती है, परन्तु शब्द का जो रूप किसी वेद मंत्र में है ही नहीं, वह किसी ऋषि को, किसी तपस्वी को भी दिखाई नहीं दे सकता। इसके विपरीत, आकाश-कुसुम या बन्ध्यापुत्र को देखने वाला न ऋषि हो सकता है, न तपस्वी। हमें सारी बातों पर पूर्वाग्रह-मुक्त होकर और नज़र से गुबार उतारकर पुनर्विचार करना होगा, तभी हम सत्य तक पहुंच सकते हैं।

□ **डॉ० सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'अज्ञात'**

3/57, अज्ञातवास, बंगा-144505

पंजाब

आत्मा तो अमर है, फिर...

□ श्रीमान जी, मैंने सुना है कि आपके यहां पुनर्जन्म नहीं है। फिर ज़िन्दा कौन होगा? आत्मा तो न पैदा है न मरती है, शरीर ही नष्ट होता है। फिर कौन हिसाब, कैसा हिसाब? आख़िरत के बारे में भी बताएं? इस्लामी दृष्टिकोण से हमारे प्रश्नों के उत्तर दें।

□ सुनील सक्सेना
द्वारा, आदिल माडर्न स्टूडियो
मिलक, रामपुर-243701 (उ०प्र०)

जवाब : आपकी यह बात सही है कि आत्मा का मृत्यु से कोई सरोकार नहीं है। शरीर त्यागने के बाद आत्मा का संबंध जिस लोक से होता है उसे इस्लाम की शब्दावली में 'बरज़ख़' कहते हैं। इस लोक में आत्माएं कर्मानुसार रहती हैं। अच्छी आत्माएं जन्नत की छाया में रहती हैं और बुरी आत्माओं को नरक की छाया प्राप्त होती है। इस दृष्टि से अच्छी आत्मा को सुख-आनन्द प्राप्त होता है, जबकि बुरी आत्मा को यातना।

क़ियामत के दिन इन्हें नया शरीर प्रदान किया जाएगा और इन्हें वास्तविक प्रतिफल दिया जाएगा। नए शरीर के लिए आवश्यक नहीं कि उसे वही शरीर दिया जाए जो संसार में प्राप्त था। उन्हें उस दिन अच्छे-बुरे कर्मों के कारण स्वस्थ-सुन्दर और दुर्बल-असुन्दर शरीर प्राप्त होंगे।

अल्लाह अच्छे कर्म करने वालों को स्वर्ग देगा, जहां वह (आत्मा) सदैव रहेगा और कुकर्मियों व दुष्कर्मियों का ठिकाना नरक होगा। किसी के साथ अन्याय न होगा, सबके साथ पूरा-पूरा न्याय किया जाएगा।

इस्लाम में आवागमनीय पुनर्जन्म नहीं पाया जाता। यहां बार-बार का जन्म नहीं है, बल्कि मानव को हिसाब-किताब के लिए एक बार शरीर प्रदान करके जीवित किया जाएगा। 84 लाख योनियों में परिभ्रमण की धारणा बिल्कुल ही काल्पनिक है। इसमें अनेक विसंगतियां हैं। इसकी एक विसंगति यह भी है कि जब तक कामों का पूरा ब्योरा सामने न आ जाए, किसी को दंड नहीं दिया जा सकता। ईश्वरीय सज़ा या पुरस्कार का मानदंड तो बहुत ही उच्च है। मृत्यु के बाद भी मनुष्य की भलाई या बुराई का सिलसिला चलता रहता है।

किसी व्यक्ति ने कुआं खोदवाया तो जब तक लोग उससे पानी पीते रहेंगे,

उसकी नेकी उसे मिलती रहेगी। इसी प्रकार यदि किसी आदमी ने वृक्ष लगाया, तो जब तक लोग उसकी छाया, फल से लाभान्वित होते रहेंगे, उसे पुण्य प्राप्त होता रहेगा। इसी तरह कोई आदमी अत्याचार की कोई प्रथा प्रचलित करके मरा है तो उसके मरने के बाद भी उसका जितना कुप्रभाव पड़ेगा, उतनी ही बुराई उसके हिस्से में आएगी। अतएव कर्मानुसार योनि परिवर्तन हास्यस्पद, अन्यायपूर्ण और असंभव है।

लेकिन जवाब नहीं आया

सितम्बर '99 के अंक में 'आवागमनीय पुनर्जन्म की वास्तविकता' शीर्षक विस्तृत आलेख 'कान्ति' में प्रकाशित हुआ था, जो इस पुस्तक में भी सम्मिलित है इसमें हमने तथाकथित पुनर्जन्म के एक केस की स्वयं अध्ययन-रिपोर्ट भी प्रकाशित की थी। केस पुंडरीक कुमार के इस असत्य कथन पर आधारित था कि वह बलरामपुर (उ०प्र०) रियासत के पूर्व महाराजा सर पाटेश्वरी प्रसाद सिंह का पुनर्जन्मी है। वैज्ञानिक तरीक़े से जब हमने इस केस की तफ़तीश की तो सारा मामला बनावटी और असत्य सिद्ध हुआ।

इसके प्रकाशन के कई महीने बाद पुंडरीक कुमार का हस्ताक्षरित पत्र प्राप्त हुआ, जिसकी इबारत से मालूम होता था कि किसी अन्य ने पत्र लिखा है, पर 16 दिसम्बर '99 को उन्होंने फोन करके हमें बताया कि पत्र उन्होंने ही भेजा है। पत्र का हमने एक दिसम्बर '99 को ही जवाब दे दिया था, परन्तु पुंडरीक ने इसका कोई जवाब नहीं दिया।

14 दिसम्बर '99 को उनका फोन आया। उन्होंने बताया कि वे गोंडा से दिल्ली आ चुके हैं और 'कान्ति' दफ़्तर आना चाहते हैं। मैंने उन्हें सहर्ष आमंत्रित किया और दफ़्तर पहुंचने का रास्ता भी बताया, किन्तु वे नहीं आये। 16 दिसम्बर '99 को उनका फिर फोन आया। उन्होंने आने में अपनी असमर्थता जताई। उन्होंने कहा कि उनके बारे में ग़लत तथ्य प्रकाशित हुआ है उसे सही किया जाए। मैंने कहा कि यह हमारा अपना निष्कर्ष है। यदि आप हमें सन्तुष्ट कर दें और हमारे प्रश्नों का जवाब दे दें तो हम आपके इच्छानुसार तथ्य प्रकाशित करने के लिए तैयार हैं।

इस सिलसिले में हमने पंजीकृत डाक से पत्र भेजकर अपनी जिज्ञासा प्रकट की और उनके पत्र का जवाब भी दिया। पुंडरीक कुमार जी ने बताया कि उन्हें मेरा पत्र प्राप्त हो गया है, जिसका वे जल्द ही उत्तर देंगे। परन्तु उत्तर की प्रतीक्षा

करते-करते लगभग डेढ़ वर्ष से अधिक समय बीत गया है, फिर भी उनका उत्तर नहीं प्राप्त हो सका है। स्पष्ट है कि मेरी जिज्ञासा का उनके पास कोई जवाब नहीं है। उनका पुनर्जन्म का दावा झूठा और काल्पनिक है। हम यहां श्री पुंडरीक कुमार का पत्र और अपनी ओर से दिए गये उत्तर के सार को इस उद्देश्य से प्रकाशित कर रहे हैं कि पाठकों को वास्तविकता का बोध हो सके और वे इस विषय पर तद्अधिक चिन्तन-मनन कर सकें।

पुंडरीक जी का पत्र

आपको यह अवगत कराना है कि आपने अपनी पत्रिका 'कान्ति' माह सितम्बर में 'आवागमन और पुनर्जन्म' विशेष प्रस्तुति में 'महाराजा सर पाटेश्वरी प्रसाद सिंह का पुनर्जन्म की झूठी कहानी' नामक जो लेख छापा है, वह पूर्णतः ग़लत एवं बेबुनियाद है क्योंकि आपकी मुलाक़ात पुंडरीक कुमार से हुई ही नहीं है और न ही आपने कोई साक्षात्कार उससे या ग्रामवासियों से लिया है और न ही कोई सही जानकारी आपने ग्रामवासियों से ली है जबकि हक़ीक़त यह है कि आपने अपनी पत्रिका की सस्ती लोकप्रियता के लिए 'पुनर्जन्म के सिद्धान्त' को ही झूठा साबित करने की असफल कोशिश की है। जबकि हक़ीक़त यह है कि जब पुंडरीक प्रथम बार महारानी जी से मिलने के लिए राजमहल गया तब उसकी उम्र लगभग चार-पांच साल के आसपास थी और महारानी जी से मुलाक़ात के समय उसके साथ लगभग सैकड़ों लोगों की भीड़ थी, जिसने बाद में उसके पुनर्जन्म की घटना को सभी ने सत्य माना। यहां तक कि महारानी जी ने ख़ुद अपने पास रखने की पेशकश भी की थी। अब सवाल यह उठता है कि अगर महारानी साहिबा असंतुष्ट होतीं तो उसी समय उसके ख़िलाफ़ कोई भी क़ानूनी कार्यवाही कर सकती थीं मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। सबसे अहम सवाल यह है कि शिवपुरा वहां से लगभग 78 कि.मी. की दूरी पर स्थिति है और लगभग पचास वर्ष पूर्व जबकि आवागमन का कोई साधन नहीं था उस समय पन्नालाल जैसे मामूली व्यक्ति ने राजमहल का अहम से अहम राज़ कैसे जान लिया? क्या महाराजा साहब आकर अपने महल का पूरा ब्योरा पन्नालाल को देते थे?

आपको शायद यह नहीं मालूम कि रटी रटाई बातों में और हक़ीक़त में बहुत ही फ़र्क़ होता है क्योंकि पुंडरीक आज भी यह दावा करता है कि आप आकर एक बार उससे मिलें तथा सही निष्कर्ष मिलने के बाद आप जनता के सामने रखें अन्यथा आपके ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्यवाही की जाएगी, क्योंकि आपने

उसकी भावनाओं को ठेस पहुंचाने की कोशिश की है और आपके ख़िलाफ़ मान-हानि का मुक़दमा दर्ज किया जाएगा।

□ पुंडरीक कुमार
गोंडा (उ०प्र०)

पत्र के जवाब का सार

आदरणीय पुंडरीक कुमार जी,

सादर अभिवादन !

आपकी ओर से किसी ने मेरे पास जो स्नेह-पत्र लिखा था, वह प्राप्त हुआ। पत्रानुसार मालूम हुआ कि आप अपने बारे में मेरे द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से असहमत हैं। सहमत-असहमत होना मानव-जीवन में सम्मिलित है।

मैंने तत्संबंधी लेख के अंत में पृष्ठ 32 पर स्पष्ट रूप कह दिया है कि "उपयुक्त लेख एक वस्तुनिष्ठ अध्ययन है। इसका उद्देश्य किसी की धार्मिक भावनाओं पर प्रहार करना कदापि नहीं है।. . . . यदि कोई समुचित तथ्य हमें उपलब्ध कराया जाएगा, तो हम उसका स्वागत करेंगे ही, साथ ही अपनी प्रस्तुति में भी संशोधन कर लेंगे।"

आपसे निवेदन है कि आप अपने बारे में प्रामाणिक तथ्य हमें अवगत कराएं, ताकि आपके विचार भी सामने आ सकें। आपके पिताजी, माताजी से जो बात हुई और ग्रामवासियों एवं बलरामपुर के लोगों से जो मेरी बातें हुईं, उनके नतीजे में मैंने अपने विचारों का प्रकाशन किया। बातचीत के कुछ टेप आज भी मेरे पास मौजूद हैं।

पुनर्जन्म का मतलब होता है : पूर्वावस्था में फिर से जन्म लेना। अतः आपके दावे को यदि सच मान लिया जाए तो आप पुंडरीक कुमार जी न होकर पाटेश्वरी प्रसाद जी हुए। आपकी आत्मा पूर्व बलरामपुर नरेश की आत्मा हुई। फिर तो आपको अपने अतीत और वर्तमान का भलीभांति ज्ञान होगा। मुझे ऐसे सज्जन भी मिले, जो आपसे मिल चुके हैं और कुछ ने तो आपको अपने घर बुलवाया, पर आप उनके प्रश्नों के उत्तर न दे सके। वे आज भी सारी कथा को झूठी कहते हैं। एक सज्जन ने कन्हाई के बारे में आपसे पूछा तो आप कुछ न बता पाए। अपनी मृत्यु के कारणों पर भी प्रकाश नहीं डाल पाए— आदि-आदि। आज की तारीख़ में भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो महाराजा की गतिविधियों से अवगत हैं। वे आपके दावे से सहमत नहीं हैं। उनकी मुझसे बातचीत हो चुकी है।

मैं पत्रकार हूं और पत्रकारिता के मानवीय मूल्यों में भी विश्वास करता हूं। अत: किसी के अवमान का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं चाहता हूं कि आप अपना पक्ष सविस्तार लिखें, जिसमें निम्नलिखित बातों का भी समावेश हो—

1. आप अपनी जन्मतिथि बताएं? (आपकी माताश्री और आपके पिताश्री को ठीक से ज्ञात नहीं है, मैंने उनसे कई बार पूछा), ताकि यह स्पष्ट हो सके कि पाटेश्वरी प्रसाद जी की मृत्यु के बाद कितने दिनों के बाद आपका जन्म हुआ। पुनर्जन्म के सिद्धांतों के अनुसार आत्मा शरीर छोड़ने के साथ ही दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है।

2. पाटेश्वरी प्रसाद जी शिवपुरा के पास कहां शिकार खेलते थे? उनकी बन्दूक़ कौन-सी थी और उसका 'बट' किस चीज़ का और किन रंगों का था?

3. कन्हाई कौन था? उसके आपसे क्या संबंध थे? आपने उसको क्या बड़ी चीज़ दी थी? वह कहां का रहनेवाला था?

4. महाराजा की असामयिक मृत्यु किस कारण हुई? वे किस रोग से ग्रस्त थे या उनको कोई रोग न था?

5. वे कौन-कौन सी भाषाएं जानते थे? फ़ारसी कितनी जानते थे? क्या आप फ़ारसी जानते हैं? अंग्रेज़ी भाषा पर उनका अधिकार कैसा था और आपका कैसा है?

6. भोजन में पूर्व बलरामपुर नरेश किस-किस चीज़ के मांस को पसन्द करते थे? आपका भोजन क्या है?

7. जो अंग्रेज़ उनके यहां बार-बार आता था, उसका नाम क्या था?

8. महाराजा घुड़दौड़ प्रतियोगिता कराते थे या नहीं? यदि कराते थे तो क्या कभी शिवपुरा की ओर के रहनेवाले किसी व्यक्ति को चैम्पियन घोषित किया गया था?

9. आपकी पत्नी जीवित थीं, फिर आपने शादी क्यों की? हिन्दू विवाह एक्ट 1955 के अनुसार आप दूसरी शादी नहीं कर सकते। शादी में महारानी भी शामिल नहीं हुईं और न ही उन्होंने कोई रुचि दिखाई, क्यों?

10. यदि आपने महाराजा की सम्पत्ति पर कोई हक़ जताया हो तो लिखें। यदि आपने पहल नहीं की है, तो इसका क्या कारण है। क्या बलरामपुर स्टेट की ओर से ऐसी कोई पहल की गई?

इनके अतिरिक्त और भी प्रश्न सामने आए हैं, जो आवश्यकता पड़ने पर

प्रस्तुत किए जाएंगे। आप कृपया उक्त प्रश्नों के उत्तर दें, ताकि पुनर्जन्म के सिद्धांतों और महाराजा की जीवनी से उनका फिर से मिलान किया जा सके और उनकी जांच-परख हो।

यह आरोप पूर्णतः ग़लत है कि मैंने अपनी पत्रिका की सस्ती लोकप्रियता के लिए अपने विचार प्रकट किए। वास्तव में मैंने कई पहलुओं से सारे प्रकरण को समझा है और अब भी समझने की प्रक्रिया जारी है। मैं पूर्वाग्रह और संकीर्णता का पक्षधर नहीं हूं।

आशा है, आप इस काम में सहयोग करेंगे और सारे तथ्य लिखित रूप में पत्रोत्तर में प्रस्तुत करेंगे, ताकि वास्तविकता सामने आ सके।

भवदीय

मुहम्मद अहमद

संपादक